फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 76 संख्याः 68 प्रभात जयपुर, बुधवार 8 अक्टूबर, 2025 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Rashtradoot

Metro

epaper.rashtradoot.com

ARBIT

Sobremesa

They talked about the choices they made, the paths they took, and the 'what ifs' that lingered in the back of their minds

First woman poet of 16th century!

These Are Yours On The Indian Train

Essential Services Offered by Indian Railways

राहुल गांधी की अनुपस्थिति में कांग्रेस की केन्द्रीय चुनाव समिति की बैठक होगी

यह बैठक बिहार के प्रथम चरण के चुनाव के उम्मीदवारों के चयन के लिए आयोजित की गई है

- राहुल व खड़गे ज़ूम के मार्फत बैठक में शामिल होंगे। जैसा कि विदित है, राहुल बीस दिन की साउथ अमेरिका की यात्रा पर गये हैं और नौ अक्टूबर को ही लौटेंगे। पर, थोड़ी अटपटी बात यह है कि महागठबंधन अभी तक यह भी निश्चित नहीं कर पाया है कि उसकी घटक पार्टियों में कौन कितनी सीटों पर चुनाव लड़ेगा।
- अपुष्ट समाचारों के अनुसार कांग्रेस 50-55 सीटों पर ही उम्मीदवार खड़ा करेगी। यह संख्या गत चुनावों की संख्या से कम है। विचारणीय बात यह है कि बिहार के चुनावों में किसी भी कीमत पर जीत हासिल करना भाजपा के लिए अतिआवश्यक है। इस अवसर पर राहुल गांधी ने साउथ अमेरिका की यात्रा का प्रोग्राम क्यों बनाया। दूसरी ओर भाजपा ने दिवाली के अवसर पर चुनाव के मध्य पैसा, शराब आदि वितरित करने का कार्यक्रम तय कर लिया है।

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 अक्टूबर। बिहार विधानसभा चुनाव के पहले चरण के उम्मीदवारों को अंतिम रूप देने के लिए कांग्रेस की केन्द्रीय चुनाव समिति (सैन्ट्रल इलैक्शन कमेटी-सीईसी) की मीटिंग कल आयोजित की जाएगी। इस बैठक में राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे, दोनों मौजूद नहीं होंगे।

राहुल गांधी इन दिनों दक्षिण अमेरिका के 20 दिन के दौरे पर हैं और वे 9 अक्टूबर को ही दिल्ली लौटने वाले हैं। जो नेता बैठक में शामिल नहीं हो पाएंगे, उनके लिए यह बैठक ज़ूम पर आयोजित की जाएगी।

लेकिन असली समस्या यह है कि महागठबंधन अब तक यह तय नहीं कर पाया है कि कौन सी पार्टी कितनी सीटों पर चुनाव लड़ेगी। यह मुद्दा अभी पूरी तरह खुला हुआ है।

कांग्रेस के लिए सीटों की संख्या 50 से 55 के बीच मानी जा रही है, जो पिछले विधानसभा चुनाव में लड़ी गई सीटों से कम है।

महत्वपूर्ण यह है कि राहुल गांधी इतने अहम बिहार चुनावों पर ध्यान एवं समय देने के बजाय, दक्षिण अमेरिका के दौरे पर क्यों गये, जबकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस चुनाव को हर कीमत पर जीतना चाहते हैं।

इसके साथ ही, कांग्रेस पार्टी ने अभी तक महागठबंधन के मुख्यमंत्री पद के प्रत्याशी के रुप में तेजस्वी यादव का समर्थन नहीं किया है। कांग्रेस पार्टी के एक नेता ने बयान दिया है कि इंडिया ब्लॉक मुख्यमंत्री उम्मीदवार पर फैसला एक बैठक के बाद सामूहिक रूप से करेगा।

विपक्ष के सामने मुश्किलों का अम्बार है, जबकि भाजपा पूरी तैयारी के साथ मैदान में उतर चुकी है, और चर्चा है कि वह दीवाली से पहले मतदाताओं को लुभाने के लिए बड़े पैमाने पर धन और शराब बांट सकती है और इधर, विपक्ष अब तक सीट बंटवारे को ही अंतिम रूप नहीं दे पाया है, जिससे चुनावी मुकाबले में उसकी स्थिति कमजोर होती दिख रही है।

तीन अमेरिकी वैज्ञानिकों को भौतिकी का नोबेल पुरस्कार

नई दिल्ली, 7 अक्टूबर। भौतिकी में नोबेल पुरस्कार की घोषणा हो चुकी है। जॉन क्लार्क, मिशेल माइकल डेवोरेट और जॉन एम. मार्टिनिस को क्वांटम मैकेनिक्स में खोज के लिए नोबेल प्राइज से नवाजा जाएगा। नोबेल पुरस्कार पाने वाले तीनों अमेरिकी वैज्ञानिक हैं। स्वीडन की रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंसेज ने इसकी घोषणा की है।

- जॉन क्लार्क, मिशेल डेवोरेट तथा जॉन मार्टिनिस को यह पुरस्कार क्वांटम मैकेनिक्स की खोज के लिये दिया गया है।

भौतिकी का नोबेल पुरस्कार 2025 कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी, बर्कले के जॉन क्लार्क, येल यूनिवर्सिटी और कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, सांता बारबरा के मिशेल एच. डेवोरेट और कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, सांता बारबरा के जॉन एम. मार्टिनिस को प्रदान किया जाएगा।

रॉयल स्वीडिश एकेडमी ऑफ साइंसेज ने "इलेक्ट्रिक सर्किट में मैक्रोस्कोपिक क्वांटम मैकेनिकल टनलिंग और ऊर्जा क्वांटीकरण की खोज" के लिए उनके अग्रणी कार्य को

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'राजनीति में मेरा महत्व उतना ही है जितना सब्जी में नमक'

पासवान ने गर्व से कहा, हर चुनाव क्षेत्र में मेरे बीस-पच्चीस हज़ार वोट हैं, जिन्हें मैं अपनी इच्छानुसार किसी भी उम्मीदवार के पक्ष में डलवा सकता हूँ

- भाजपा का मानना है कि पासवान मोदी भक्त हैं और मोदी को छोड़कर कहीं नहीं जाने वाले हैं और उनकी गर्वोक्ति केवल भाजपा पर दबाव बनाने की रणनीति का हिस्सा है। जैसा कि विदित ही है, पासवान चालीस टिकट मांग रहे हैं और भाजपा बीस-पच्चीस देने को राजी है। पासवान समर्थकों का दावा है कि पासवान किसी भी पार्टी का साथ दे सकते हैं जो उनको मुख्यमंत्री पद के करीब लाने में काम आ सकती है और इसीलिये पासवान और प्रशांत किशोर एक हो सकते हैं, यह भी चर्चा है।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7, अक्टूबर। लोक जनशक्ति पार्टी (एलजेपी) के सूत्रों ने मंगलवार को कहा कि अगले महीने होने वाले बिहार विधानसभा चुनाव के लिए चिराग पासवान और प्रशांत किशोर का गठबंधन बनना संभव है, क्योंकि राजनीति में "दरवाज़े हमेशा खुले रहते हैं।"

चिराग पासवान और चुनाव रणनीतिकार से नेता बने प्रशांत किशोर के साथ आने की चर्चा सीट बंटवारे को लेकर एलजेपी और सत्तारूढ़ भाजपा के बीच चल रही बातचीत के बीच सामने आई है।

सूत्रों के मुताबिक, पासवान बिहार की 243 विधानसभा सीटों में से 40 सीटें चाहते हैं। उनका यह दावा पिछले साल लोकसभा चुनाव में 100 प्रतिशत सफलता (5 में से 5 सीटें जीतने) पर आधारित है, जबकि भाजपा उन्हें सिर्फ 25 सीटें देने के पक्ष में है।

राजनीतिक दृष्टि से देखें तो बिहार की मुख्यधारा राजनीति में दोनों ही विकल्प अप्रत्याशित हैं। हालांकि, एलजेपी को इससे अधिक सीटों पर चुनाव लड़ने का मौका तो मिल सकता है, लेकिन किसी नए उम्मीदवार (प्रशांत किशोर) से गठबंधन करना पासवान की मुख्यमंत्री बनने की आकांक्षा में शायद ज़्यादा मददगार नहीं होगा।

हालाँकि, एलजेपी को उम्मीद है कि प्रशांत किशोर के साथ गठबंधन की चर्चा भर से ही भाजपा पर सीट बंटवारे को लेकर दबाव बनाया जा सकेगा। पार्टी सूत्रों ने बताया कि एलजेपी "सम्मानजनक सीटें" पाने पर अड़ी हुई है।

पासवान ने यह भी कहा था, "मैं सार्वजनिक रूप से इन बातों का खुलासा नहीं करना चाहूँगा, यह गठबंधन की नैतिकता के ख़िलाफ़ होगा, यह बताते हुए कि भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन से सीट-बंटवारे की औपचारिक बातचीत शुरू नहीं हुई है।

भारतीय राजनीति के रंगमंच पर पासवान ने अपने सहयोगियों को एक अप्रत्यक्ष चेतावनी भी दी, "मैं सब्ज़ी पर नमक की तरह हूँ... मैं हर विधानसभा क्षेत्र में 20 से 25 हज़ार वोट प्रभावित कर सकता हूँ।" उन्होंने यह भी जोड़ा कि "मैं गठबंधन का हिस्सा हूँ, लेकिन मेरे पास बाहर निकलने का विकल्प हमेशा खुला है।"

भाजपा ने इस "चेतावनी" को ज़्यादा गंभीरता से नहीं लिया। पार्टी के सूत्रों ने कहा कि पासवान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के वफ़ादार सहयोगी हैं, और उनका यह बयान एलजेपी के भीतर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

जीतन राम मांझी की पार्टी के कई प्रमुख नेता प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी में शामिल हुए

आरजेडी के प्रमुख मुस्लिम नेता अब्दुल बारी सिद्दीकी व जदयू के दो बड़े नेता भी प्रशांत किशोर की पार्टी में शामिल हुए, यही रास्ता कांग्रेस नेता प्रतिभा सिंह ने भी चुना

- दोनों बड़े प्रमुख गठबंधन, एनडीए व इंडिया गठबंधन, पहली बार चिंतित हैं कि प्रशांत किशोर क्या वाकई में बिहार चुनाव को त्रिकोणात्मक बना देंगे।

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 अक्टूबर। अगले महीने होने वाले बिहार विधानसभा चुनावों का नतीजा अब इस सवाल पर निर्भर करता दिख रहा है कि जन सुराज पार्टी (जेएसयूपीए) के संस्थापक प्रशांत किशोर अपनी लोकप्रियता को वोटों में बदल पाएंगे या नहीं।

भ्रष्टाचार के आरोपों को लेकर एनडीए नेताओं पर निशाना साधते हुए सोशल मीडिया पर काफी बड़ा अभियान चलाने के बाद, अब प्रशांत किशोर वास्तविक राजनीति के मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करते दिख रहे हैं। कुछ दिन पहले उन्होंने जीतन राम मांझी की पार्टी "हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा (सेक्युलर)" को बड़ा झटका देते हुए, उस पार्टी के कई प्रमुख नेताओं को अपने साथ जोड़ लिया। इनमें मांझी की पार्टी के अनुसूचित जाति-जनजाति प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेश्वर मांझी, राष्ट्रीय महासचिव डॉ. शशि यादव, प्रदेश महासचिव लक्ष्मण मांझी, प्रदेश युवा सचिव राकेश कुमार सिंह और गया जिला परिषद सदस्य पार्वती देवी शामिल हैं। हाल ही में उन्होंने आरजेडी के, हाशिए पर पड़े वरिष्ठ नेता अब्दुल बारी सिद्दीकी से भी मुलाकात की, जिससे अटकलें लगने लगीं कि वे जन सुराज पार्टी में शामिल हो सकते हैं और संभव है कि उन्हें उम्मीदवार भी बनाया जाए।

पिछले महीने जेडीयू के दो नेता, दसई चौधरी और भुवन पटेल, भी जन सुराज पार्टी में शामिल हुए थे। दसई चौधरी पूर्व मंत्री और सांसद हैं, जबकि भुवन पटेल मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के पुराने सहयोगी हैं और जेडीयू की प्रदेश कार्यकारिणी के सदस्य भी रहे हैं। इससे पहले कांग्रेस नेता प्रतिभा सिंह भी इस पार्टी में शामिल हो चुकी हैं।

चुनाव के मौसम में नेताओं का दल

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मानवाधिकार आयोग ने ट्रोमा सैन्टर अग्निकांड का प्रसंज्ञान लिया

जयपुर, 7 अक्टूबर। राज्य मानवाधिकार आयोग ने एसएमएस अस्पताल के ट्रोमा सेंटर में हुए अग्निकांड से आठ मरीजों की मौत सहित, बालकों को खांसी का सिरप देने और मृत बालक की आंख निकालने के मामले में स्वप्रेरित प्रसंज्ञान लिया है। वहीं, आयोग ने इन सभी घटनाओं पर एसएमएस अस्पताल के अधीक्षक व प्राचार्य सहित, राज्य के मुख्य चिकित्सा सचिव, जिला मजिस्ट्रेट, जयपुर पुलिस कमिश्नर और सीएमएचओ प्रथम व द्वितीय से जवाब देने के लिए कहा है। आयोग ने इन्हें कहा है कि वे इन सभी घटनाओं की बिन्दुवार प्रगति रिपोर्ट पेश

- आयोग ने बालकों को अमानक कफ सिरप देने तथा मृत बालक की आँख निकालने के मामले में भी अधिकारियों से जवाब मांगा।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'मुझे न लोभ है न पश्चाताप, मुख्य न्यायाधीश पर जूता फेंकने की घटना से'

'मुख्य न्यायाधीश उच्चतम संवैधानिक आसन पर विराजते हैं, उनका हिंदू धर्म पर हल्की टिप्पणी करना शोभा नहीं देता'

- निष्कासित अधिवक्ता राकेश किशोर 2009 से दिल्ली की बार काउंसिल के सदस्य हैं, वो सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन, शाहदरा बार एसोसिएशन के भी पुराने सदस्य हैं। उन्होंने ऑल इंडिया लॉयर्स यूनियन द्वारा उनके कृत्य के विरोध में प्रोटेस्ट आयोजित करने के बारे में कहा कि केवल सात वकीलों ने इसमें भाग लिया था, इससे यह साबित होता है कि अधिकांश वकील मेरे कृत्य के समर्थन में हैं।

- डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 अक्टूबर। सुप्रीम कोर्ट के अन्दर भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) बी. आर. गवई पर जूता फेंकने की घटना के एक दिन बाद, निलंबित वकील राकेश किशोर ने अपने इस कदम पर कोई पछतावा नहीं जताया। उन्होंने कहा कि उन्हें "कोई अफसोस नहीं" है और यह कदम सीजेआई की उन टिप्पणियों के प्रतिक्रियास्वरुप था, जो उन्होंने मध्य प्रदेश के खजुराहो मंदिर परिसर में भगवान विष्णु की मूर्ति के पुनर्निर्माण और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की बुलडोजर कार्रवाई से जुड़े एक केस में की थीं।

राकेश ने कहा, "16 सितंबर को सीजेआई की अदालत में एक जनहित याचिका दायर की गई थी। सीजेआई ने उसका मजाक उड़ाते हुए कहा, "जाओ, मूर्ति से कहो कि वह खुद अपना सिर जोड़ ले।" उन्होंने कहा, "जब भी हमारे सनातन धर्म से जुड़ा कोई प्रकरण आता है, सुप्रीम कोर्ट ऐसे ही आदेश देता है। याचिकाकर्ता को राहत मत दो, लेकिन उसका मजाक तो मत उड़ाओ... मुझे बहुत ठेस पहुंची थी।" उन्होंने मीडिया से कहा कि ऐसे कई और भी मुद्दे हैं, जिनसे वे आहत हैं।

उन्होंने एक्स (पूर्व ट्विटर) पर दोहराया, "मेरी सुप्रीम कोर्ट से अपील है, "हमारे भगवान और हिंदू धर्म का मजाक मत उड़ाइए। मैं आहत हुआ था। मैं नशे में नहीं था, यह उनकी क्रिया पर मेरी प्रतिक्रिया थी। मुझे डर नहीं है और न ही मुझे अपने किये का कोई पछतावा है।"

जब उनसे पूछा गया कि उन्होंने अनुसूचित जाति से आने वाले सीजेआई गवई को क्यों निशाना बनाया, तो किशोर ने कहा, "मेरा नाम डॉ. राकेश किशोर है, क्या कोई बता सकता है कि मेरी जाति क्या है? हो सकता है कि मैं दलित हूं। यह एकतरफा बात है कि आप उनका (सीजेआई गवई का) बचाव इस आधार पर कर रहे हैं कि वे दलित हैं।" किशोर ने जोर देते हुये कहा कि सीजेआई दलित नहीं है। उन्होंने कहा, "वे पहले सनातनी हिंदू थे, बाद में बौद्ध धर्म अपना लिया। अगर उन्होंने हिंदू धर्म छोड़ दिया है, तो वे दलित कैसे रहे? यह सोच का सवाल है।"

अपने कदम के असर के बारे में पूछे गए सवाल के जवाब में किशोर ने कहा, "जजों को अपनी संवेदनशीलता पर काम करना चाहिए। लाखों मामले लंबित हैं। मैं माफी नहीं मांगूंगा, और न अफसोस व्यक्त करूंगा। मैंने कुछ नहीं किया, जो आप मुझसे प्रश्न कर रहे हैं। भगवान ने मुझसे यह करवाया।"

उन्होंने आगे कहा, "सीजेआई को सोचना चाहिए कि जब वे इतने ऊंचे संवैधानिक पद पर बैठे हैं, तो 'माइलॉर्ड' शब्द की गरिमा को समझें और उसे बनाए रखें। आप मॉरीशस जाकर कहते हैं कि देश बुलडोजर से नहीं चलेगा। मैं

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

जयपुर-अजमेर हाईवे पर सिलेंडरों से भरे ट्रक में लगी भीषण आग

जयपुर, 07 अक्टूबर। जयपुर-अजमेर हाईवे पर दूदू क्षेत्र के सावरदा पुलिया के पास भीषण हादसा हो गया, जहां गैस सिलेंडरों से भरे एक ट्रक में भीषण आग लग गई। यह दुर्घटना मंगलवार देर रात हुई जब एक ट्रेलर ने ट्रक को पीछे से टक्कर मार दी। टक्कर के तुरंत बाद ट्रक में आग लग गई और सिलेंडर फटना शुरू हो गए। धमाकों की आवाजें कई किलोमीटर दूर तक सुनाई दीं और 200 मीटर तक सिलेंडर उछलते नजर आए। इस हादसे में 7 वाहन आग की चपेट में आ गये, और कई राहगीर घायल हो गये।

- हादसे में 7 वाहन आग की चपेट में आ गये और कई राहगीर घायल हो गये।

तेज धमाकों के चलते हाईवे के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ब्लूचिस्तान व खैबर पख्तूनख्वा रैयर अर्थ खनिजों का अमेरिका से अनुबंध करना अभिशाप बनेगा या वरदान पाकिस्तान के लिए

भय यह है कि केवल खनिज सप्लाई करके पाकिस्तान एक रिसोर्स सप्लायर कॉलोनी बनकर तो नहीं रह जाएगा

- क्योंकि धनाढ्य देश गरीब देशों के खनिज खरीदकर समृद्धि का स्वप्न तो दिखाते हैं तथा फैक्ट्रियाँ, कॉलेज टैक्नॉलजी का वादा तो करते हैं, पर वास्तव में ऐसा बहुत ही कम होता है। रिसोर्स कॉलोनी अपने खनिज तो बेच देती है जिसका लाभ बड़ी-बड़ी कंपनियाँ प्रोसेसिंग करके उठाती हैं। हैडलाइन्स में तो समृद्धि आती है, पर, वास्तव में देश खोखला हो कर रह जाता है।

-सुकुमार साह---
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7, अक्टूबर। 21वीं सदी को ऊर्जा देने वाले खनिजों पर नियंत्रण के लिए संघर्षरत दुनिया में अब पाकिस्तान भी उतर आया है। उसने अमेरिका की कंपनी, यू.एस. स्ट्रैटेजिक मेटल्स के साथ 500 मिलियन डॉलर का समझौता किया है। कई लोग इसे पाकिस्तान की आर्थिक दशा बदलने वाला कदम बता रहे हैं। समर्थक इसे औद्योगिक पुनरुत्थान और वैश्विक प्रभाव का पासपोर्ट कह रहे हैं, लेकिन जहाँ वॉशिंगटन नई आपूर्ति लाइनों पर और इस्लामाबाद त्वरित लाभ की ओर देख रहा है, असली सवाल यह उठता है, क्या पाकिस्तान वास्तव में नया भविष्य बना रहा है या फिर आज की वाहवाही के लिए कल के लाभ त्याग रहा है?

"रेयर अर्थ" खनिज आधुनिक तकनीक की रीढ़ हैं, ये इलेक्ट्रिक वाहनों, पवन ऊर्जा टर्बाइन, स्मार्टफोन और उन्नत हथियार प्रणालियों के लिए जरूरी होते हैं। इन खनिजों के खनन और रिफाइनिंग (शुद्धिकरण) पर नियंत्रण वैश्विक प्रभाव को परिभाषित करता है। चीन वर्तमान में लगभग 80 प्रतिशत रिफाइनिंग क्षमता पर कब्जा रखता है, और अमेरिका इस निर्भरता को घटाने के लिए नए साझेदार खोज रहा है। पाकिस्तान के बलूचिस्तान और खैबर पख्तूनख्वा में ऐसे खनिजों के भंडार हैं, और इस्लामाबाद इसे अवसर के रूप में देख रहा है। लेकिन इतिहास बताता है कि जो देश कच्चे खनिज बेचकर समृद्धि के सपने देखते हैं, वे अक्सर नतीजों की तुलना में केवल सुर्खियों में ही ज्यादा अमीर बनते हैं।

विपक्षी दलों और अर्थशास्त्रियों ने पहले ही सावधानी बरतने की सलाह दी है। पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) ने समझौते की पूरी जानकारी सार्वजनिक करने की मांग की है, इसे संसद की अनुमति के बिना किया गया गुप्त सौदा बताया है। पीटीआई प्रवक्ता शेख वक़ास अक़रम ने डॉन अखबार को बताया, "ऐसे समझौतों में राष्ट्रीय संपत्तियों को अल्पकालिक लाभ के लिए गिरवी नहीं रखना चाहिए।" आलोचकों को डर है कि अगर पाकिस्तान केवल कच्चा माल ही निर्यात करता रहा और स्थानीय रिफाइनिंग या मूल्यवर्धन सुनिश्चित नहीं किया, तो वह "संसाधन उपनिवेश" बन जाएगा, जहाँ असली मुनाफा विदेशी कंपनियों को मिलेगा।

तथापि, समर्थकों का तर्क है कि इस एमओयू में स्थानीय प्रसंस्करण इकाइयां (लोकल प्रोसैसिंग यूनिट्स) और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण (टैक्नॉलजी ट्रांसफर) की योजना है, जिससे पाकिस्तान आत्मनिर्भरता की दिशा में कदम बढ़ा सकता है। अगर ऐसा होता है, तो यह समझौता पाकिस्तान को वैश्विक खनिज आपूर्ति श्रृंखला में एक अहम स्थान दिला सकता है और भविष्य में अरबों डॉलर का निवेश आकर्षित कर सकता है। लेकिन विशेषज्ञ चेतावनी देते हैं कि केवल कागज़ पर लिखे वादों से कुछ नहीं होता, जब तक उनमें पारदर्शिता और लागू करने की समय सीमा न हो।

अन्य देशों के अनुभव पाकिस्तान के सामने मिसाल हैं। इंडोनेशिया, जो कभी कच्चा निकल निर्यात करता था, ने 2020 में निर्यात पर प्रतिबंध लगाकर विदेशी कंपनियों को अपने देश में स्मेल्टर बनाने के लिए मजबूर किया। आज वही बैटरी धातुओं का वैश्विक केन्द्र है। इसके विपरीत, कांगो गणराज्य विशाल कोबाल्ट भंडार के बावजूद, गरीबी में फंसा हुआ है, क्योंकि मुनाफा विदेशी रिफाइनरों के पास जाता है। पाकिस्तान के सामने भी यही विकल्प है, इंडोनेशिया की तरह औद्योगिक संप्रभुता का रास्ता अपनाए या कांगो की तरह दोहन के चक्र में फंस जाए।

सस्टेनेबल डवलपमैंट पॉलिसी इंस्टीट्यूट (एसडीपीआई) के अर्थशास्त्रियों का कहना है, "टैरिफ और नीतिगत प्रोत्साहन तभी कारगर होंगे, जब वे घरेलू क्षमता निर्माण से जुड़े हों; वरना पाकिस्तान अपने स्ट्रैटेजिक मिनरल्स पर नियंत्रण खो देगा।" अंतरराष्ट्रीय अध्ययन भी बताते हैं और चेतावनी देते हैं कि जो देश केवल खनन तक सीमित रहते हैं, वे कभी रिफाइनिंग या इनोवेशन में प्रतिस्पर्धी बढ़त हासिल नहीं कर पाते, जबकि असली मूल्य वहीं पैदा होता है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अलवर बालिका गृह की अव्यवस्थाओं पर हाई कोर्ट ने रिपोर्ट मांगी

जयपुर, 7 अक्टूबर। राजस्थान हाईकोर्ट ने अलवर बालिका गृह की अव्यवस्थाओं से जुड़े मामले में बाल अधिकारिता निदेशक को तलब करते हुए तथ्यात्मक रिपोर्ट देने के लिए कहा है। एक्टिंग सीजे एसपी शर्मा व जस्टिस बीएस संधू की खंडपीठ ने यह आदेश मामले में बालिका गृह की बालिकाओं की ओर से भेजे एक पत्र पर लिए गए स्वप्रेरित प्रसंज्ञान पर सुनवाई करते हुए दिए।

- बालिका गृह की बालिकाओं ने गत दिनों हाई कोर्ट को शिकायती पत्र भेजा था।

सुनवाई के दौरान एएजी मनोज शर्मा ने कहा कि संबंधित बालिका गृह को राज्य सरकार साल 2022 तक अनुदान देती थी, लेकिन उसके बाद अनियमितताओं के चलते इसे बंद कर दिया। वहीं, बालिका गृह के संचालक ने ही मिलीभगत कर छात्राओं से

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

जब जिन्दगी को अपने दिल के गीत सुनाने का मौका नहीं मिलता, तब वह अपने मन के विचार सुनाने के लिए दार्शनिक पैदा कर देती है।

–खलील जिब्रान

स्वदेशी माइक्रोचिप: आत्मनिर्भरता की ओर ऐतिहासिक कदम

भारत ने अपनी पहली स्वदेशी चिप बना लेने की घोषणा की है। इसका नाम भारतीय वैज्ञानिक विक्रम साराभाई के नाम पर विक्रम दिया गया है। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने पिछले दिनों प्रधानमंत्री मोदी को इसरो द्वारा विकसित 'विक्रम 32-बिट प्रोसेसर' भेंट किया। इसरो की सेमीकंडक्टर लैब में निर्मित यह चिप, अंतरिक्ष प्रक्षेपण यान की चरम स्थितियों में उपयोग के लिए तैयार किया गया यह पहला पूर्णतः भारत में निर्मित प्रोसेसर है। विक्रम चिप को इस हिसाब से बनाया गया है कि वह अत्यधिक तापमान और अंतरिक्ष की विषम परिस्थितियों का सामना कर सके। यह चिप पर्याप्त मात्रा में मेमोरी को संभाल सकती है और रॉकेटों की लॉन्चिंग के लिए जरूरी जटिल निर्देशों का पालन कर सकती है। इन खूबियों की वजह से इस चिप को रक्षा, विमानन, ऑटोमोटिव और ऊर्जा जैसे जरूरी क्षेत्रों में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। वैश्विक स्तर पर सेमीकंडक्टर बाजार अब 600 अरब डॉलर का हो चुका है और आने वाले सालों में इसके एक हजार अरब डॉलर से अधिक का हो जाने की उम्मीद है। सेमीकंडक्टर क्षेत्र में भारत के आगे बढ़ने की गति को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि भारत इस एक हजार अरब डॉलर के बाजार में अहम् हिस्सेदारी हासिल कर सकेगा। इस दिशा में 'सेमीकॉन' कार्यक्रम साल 2021 में शुरू किया गया था। 2023 में देश के पहले सेमीकंडक्टर प्लांट को स्वीकृति दी गई। 2024 में कई और प्लांटों को स्वीकृति मिली और 2025 में पांच अन्य परियोजनाओं को भी मंजूरी दी गई। इस समय फिलहाल दस सेमीकंडक्टर परियोजनाएं चल रही हैं, जिनमें 18 अरब डॉलर यानी 1.5 लाख करोड़ रुपये से अधिक का निवेश हो चुका है। नोएडा और बेंगलुरु में विकसित किए जा रहे डिजाइन सेंटरों में दुनिया की कुछ सबसे आधुनिक चिपों पर काम हो रहा है जिनमें प्रत्येक चिप में अरबों ट्रांजिस्टर समा सकते हैं। सीजी पावर कंपनी के पायलट प्लांट में इस साल अगस्त में काम शुरू हो चुका है और एक अन्य पायलट प्लांट में काम जल्द ही शुरू होने वाला है। इसके अलावा, टाटा और माइक्रोन के टेस्ट चिपों का पहले से ही उत्पादन हो रहा है। अनुमान है कि इस साल के अंत तक भारत में चिपों का वाणिज्यिक उत्पादन शुरू हो जाएगा। सेमीकंडक्टर चिपों का उत्पादन शुरू करने के उद्देश्य से भारत सरकार ने 2021 में इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन (आईएसएम) शुरू किया था। इसके लिए सरकार ने 76 हजार करोड़ रुपये की उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना शुरू की थीजिसके तहत, स्टार्टअप्स और इनोवेटर्स की मदद करने के लिए 23 चिप डिजाइन परियोजनाओं को मंजूरी दी गई।

माइक्रोचिप एक बहुत ही छोटी इलेक्ट्रॉनिक चिप होती है, जिसे इंटीठोटेड सर्किट (आईसी) भी कहते हैं। इसमें हजारों, लाखों या अरबों ट्रांजिस्टर, रेसिस्टर और अन्य इलेक्ट्रॉनिक घटक एक ही सिलिकॉन के टुकड़े पर बनाए जाते हैं। आसान भाषा में कहें तो माइक्रोचिप एक छोटा-सा दिमाग है जो किसी इलेक्ट्रॉनिक उपकरण को सोचने-समझने और काम करने की क्षमता देता है। यह ज्यादातर सिलिकॉन से बनाई जाती है और वह आकार में बहुत ही छोटी (कुछ मिलीमीटर की) होती है, लेकिन इसकी क्षमता बहुत ज़्यादा होती है। इसका काम डेटा को प्रोसेस करना, स्टोर करना और निर्देशों के हिसाब से काम करना। इसका उपयोग कंप्यूटर, मोबाइल, टीवी, कार, एटीएम कार्ड, स्मार्टफोन, रोबोट, मेडिकल उपकरण, यहां तक कि पालतू जानवरों की पहचान के लिए भी किया जाता है। माइक्रोप्रोसेसर एक तरह से कंप्यूटर/मोबाइल का दिमाग होता है। इसी प्रकार माइक्रोकंट्रोलर वॉशिंग मशीन, माइक्रोवेव जैसे उपकरणों को भी नियंत्रित करता है। मेमोरी चिप डेटा को स्टोर करती है।

वर्तमान में दुनिया में अगर तेल को ऊर्जा का ईंधन माना जाए तो माइक्रोचिप को आधुनिक तकनीक का वाहक कहा जा सकता है। मोबाइल फोन, कंप्यूटर, इंटरनेट, अंतरिक्षयान, चिकित्सा उपकरण, बैंकिंग व्यवस्था, स्मार्ट कारें और कृत्रिम बुद्धिमत्ता तकहर जगह माइक्रोचिप निर्णायक भूमिका निभाती है। डिजिटल युग में इसकी अहमियत इतनी गहरी है कि बिना माइक्रोचिप के आधुनिक जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। इस पृष्ठभूमि में भारत द्वारा अपनी पहली स्वदेशी माइक्रोचिप 'विक्रम' का निर्माण केवल तकनीकी उपलब्धि नहीं बल्कि आत्मनिर्भरता, राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक संप्रभुता की दिशा में क्रांतिकारी पहल है। 21वीं सदी में जो भी तकनीकी क्रांति हम देख रहे हैं, जैसे 5जी, क्वांटम कंप्यूटिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), इंटरनेट ऑफ थिंग्स या स्वचालित वाहन-उन सबका केंद्र माइक्रोचिप ही है। विश्व स्तर पर अमेरिका, ताइवान, दक्षिण कोरिया और जापान इस क्षेत्र में अग्रणी रहे हैं। ताइवान की कंपनी टीएसएमसी और दक्षिण कोरिया की सैमसंग इसकी शीर्ष निर्माता कंपनियां हैं। अमेरिका डिज़ाइन और अनुसंधान में अग्रणी है, जबकि चीन बड़े पैमाने पर उत्पादन पर ध्यान दे रहा है। इस तरह से माइक्रोचिप एक सामरिक तकनीक भी है। यही कारण है कि अमेरिका और चीन के बीच तकनीकी शीतयुद्ध का सबसे बड़ा केंद्र सेमीकंडक्टर उद्योग है।

'विक्रम' की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसका पूरी तरह स्वदेशी डिज़ाइन है। स्वदेशी डिज़ाइन होने से साइबर सुरक्षा और डेटा संरक्षण में भी यह मददगार है। कह सकते हैं कि आत्मनिर्भर भारत का यह स्तंभ है। यह भारत को आयात-निर्भरता से मुक्त करने की दिशा में एक निर्णायक कदम है। इससे रक्षा उपकरणों और संवेदनशील क्षेत्रों में विदेशी चिप्स पर निर्भरता खत्म होगी जिससे अरबों डॉलर का विदेशी मुद्रा व्यय बचेगा और देश में निवेश बढ़ेगा। स्वदेशी चिप होने से भारतीय स्टार्टअप और उद्योग नए प्रयोग कर पाएंगे और सेमीकंडक्टर विनिर्माण उद्योग से लाखों युवाओं को रोजगार मिलेगा।

सूचना प्रौद्योगिकी और सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में भारत विश्व में अग्रणी रहा है, लेकिन हार्डवेयर निर्माण, खासकर सेमीकंडक्टर में, पिछड़ा हुआ था। भारत की विशाल जनसंख्या और डिजिटल क्रांति के बावजूद अब हम विदेशी माइक्रोचिप पर निर्भर रहे हैं। चाहे वह मोबाइल फोन हो या लैपटॉप, रक्षा उपकरण हो या मेडिकल मशीनरी-सब में आयातित चिप्स का उपयोग होता है। इस निर्भरता की कई समस्याएं रही हैं। हर साल अरबों डॉलर का विदेशी मुद्रा खर्च होती है। रक्षा और संचार क्षेत्र में विदेशी चिप पर निर्भरता जोखिम भरी भी मानी जाती है। भारत में अपनी चिप बनाने के लिए नवाचार की क्षमता लंबे समय तक सीमित रही। इससे आपूर्ति श्रृंखला का संकट भी रहा। कोविड महामारी के दौरान वैश्विक चिप संकट ने भारत सहित पूरी दुनिया को हिला दिया था। यही कारण था कि भारत सरकार ने सेमीकंडक्टर मिशन की शुरुआत की और आत्मनिर्भर भारत अभियान में सेमीकंडक्टर को शीर्ष प्राथमिकता दी। इसी कड़ी में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) मद्रास के शक्ति माइक्रोप्रोसेसर प्रोजेक्ट से जुड़े वैज्ञानिकों ने भारत की पहली स्वदेशी माइक्रोचिप 'विक्रम' का विकास किया है। यह उपलब्धि केवल एक तकनीकी परियोजना नहीं बल्कि भारतीय आत्मनिर्भरता की दिशा में मील का पत्थर है। 'विक्रम' चिप का नाम भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के जनक डॉ. विक्रम साराभाई के सम्मान में उचित ही रखा गया है। 'विक्रम' की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसका पूरी तरह स्वदेशी डिज़ाइन है। विक्रम को भारतीय शोधकर्ताओं ने डिज़ाइन करके विकसित किया है। यह ओपन-सोर्स आर्किटेक्चर है जो आरआईएससी-वी पर आधारित है, जिससे भविष्य में उस पर स्वतंत्र रूप से विकास संभव है जो इसे वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाएगा। यह किफायती और ऊर्जा दक्ष है अर्थात विक्रम चिप कम ऊर्जा खपत और उच्च प्रदर्शन के साथ कार्य कर सकती है। इसी कारण इसे रक्षा, संचार, शिक्षा, ऑटोमोबाइल और उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स तक में उपयोग किया जा सकता है। स्वदेशी डिज़ाइन होने से साइबर सुरक्षा और डेटा संरक्षण में भी यह मददगार है। कह सकते हैं कि आत्मनिर्भर भारत का यह स्तंभ है। यह भारत को आयात-निर्भरता से मुक्त करने की दिशा में एक निर्णायक कदम है। इससे रक्षा उपकरणों और संवेदनशील क्षेत्रों में विदेशी चिप्स पर निर्भरता खत्म होगी जिससे अरबों डॉलर का विदेशी मुद्रा व्यय बचेगा और देश में निवेश बढ़ेगा। स्वदेशी चिप होने से भारतीय स्टार्टअप और उद्योग नए प्रयोग कर पाएंगे और सेमीकंडक्टर विनिर्माण उद्योग से लाखों युवाओं को रोजगार मिलेगा।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखें तो विश्व में सेमीकंडक्टर की मांग लगातार बढ़ रही है। अनुमान है कि 2030 तक यह बाज़ार एक ट्रिलियन डॉलर से भी अधिक का हो जाएगा। भारत इस विशाल अवसर का लाभ उठा सकता है क्योंकि भारत के पास पहले से ही मजबूत आईटी सेक्टर है, प्रचुर मानव संसाधन है, बड़ी घरेलू मांग है और साथ में सरकारी प्रोत्साहन योजनाएं मौजूद हैं। 'विक्रम' चिप का निर्माण भारत को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी बना सकता है। मगर इस राह में चुनौतियां भी कम नहीं है। यहां निर्माण अवसंरचना की कमी है। भारत में बड़े पैमाने पर चिप फैब्रिकेशन यूनिट अभी नहीं हैं। सेमीकंडक्टर उद्योग पूंजी-सघनता वाला उद्योग है। इसमें अरबों डॉलर की आवश्यकता होगी। अमेरिका, चीन, ताइवान और कोरिया इस क्षेत्र में पहले से बहुत आगे हैं। इस अकेले उद्योग के लिए लाखों कुशल इंजीनियरों और तकनीशियनों की भी ज़रूरत होगी। साथ ही वैश्विक राजनीतिक दबाव को भी झेलना होगा क्योंकि सेमीकंडक्टर उद्योग पर भूराजनीतिक खींचतान का असर भारत पर भी पड़ सकता है। भारत को 'विक्रम' जैसी परियोजनाओं को केवल प्रतीकात्मक उपलब्धि न मानकर इसे बड़े पैमाने पर उद्योग में बदलना होगा। इसके लिए सरकार को लंबी अवधि की नीति और वित्तीय सहायता जारी रखनी होगी। साथ ही निजी क्षेत्र और स्टार्टअप को शोध और नवाचार के लिए प्रोत्साहित करना होगा और देश के विश्वविद्यालयों और संस्थानों को सेमीकंडक्टर शिक्षा और प्रशिक्षण पर ध्यान देना होगा। 'विक्रम' केवल एक माइक्रोचिप नहीं, बल्कि भारत की तकनीकी स्वतंत्रता का प्रतीक है। यह भारत को उपभोक्ता से निर्माता और नवोन्मेषक में बदलने का अवसर देता है। जिस तरह 20वीं सदी में अंतरिक्ष और परमाणु ऊर्जा ने राष्ट्रों की ताकत तय की थी, उसी तरह 21वीं सदी में माइक्रोचिप और सेमीकंडक्टर तकनीक यह भूमिका निभाएंगे। भारत का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि हम इस अवसर को किस हद तक रणनीतिक दृष्टि से संभालते हैं। अगर 'विक्रम' को उद्योग, शिक्षा और नीतिगत स्तर पर व्यापक सहयोग मिले तो यह न केवल भारत की तकनीकी दिशा बदलेगा बल्कि विश्व मंच पर भारत को अग्रणी स्थान दिला सकता है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

भारतीय भाषा-भावों का संरक्षक "राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ"

डॉ. निमिषा गौड़

भाषा मनुष्य के विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने का सबसे सुंदर माध्यम है। यही वह साधन है जो हमें अपने लक्ष्य तक पहुंचने का रास्ता दिखाता है। भाषा के माध्यम से ही व्यक्ति अपने परिवार, समाज और राष्ट्र से जुड़ता है। और यही जुड़ाव पूरी दुनिया के देशों को एक भावनात्मक सूत्र में बांध देता है। किसी भी क्षेत्र की भाषा, वहां की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परंपराओं का सजीव प्रतिबिंब होती है। यह हमारी विरासत की अभिव्यक्ति करती है और जनमानस को अपनी जड़ों से जोड़ती है। भाषा के माध्यम से विचार प्रकट होते हैं और यही जुड़ाव राष्ट्र की पहचान बन जाता है। यही पह्चान राष्ट्र के विकास की आधारशिला होती है। भारत वासियों की भाषा और विचार, हमारी सनातन संस्कृति और सभ्यता की अमूल्य देन हैं। भारतीयों की राष्ट्रीय एकात्मता हमारी सांस्कृतिक धरा के साथ अनादिकाल से प्रवाहित होती आ रही है। इस सांस्कृतिक प्रवाह में संस्कृत को सभी भारतीय भाषाओं की जननी माना गया है। समय के साथ भारत में अनेक भाषाओं का उद्भव हुआ- जैसे हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, ओड़िया और असमिया आदि। इन्हीं भाषाओं की समृद्ध परंपरा में हिन्दी ने एक ऐसी कड़ी के रूप में स्थान प्राप्त किया है, जिसने उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक पूरे देश को संवाद के सूत्र में बांधा।

हिंदी नवजागरण के अग्रदूत भारतेंदु हरिश्चंद्र ने लिखा है–

निज भाषा उन्नति अहै,
सब उन्नति को मूल।
बिना निज भाषा ज्ञान के,
मिटै न हीय को शूल।।

उक्त प्रचलित पंक्तियों के भावों में अपनी मातृ भाषा के विकास से सभी प्रकार की उन्नति का मूल आधार है। अपनी भाषा के ज्ञान के बिना ह्रदय की पीड़ा को दूर नहीं किया जा सकता है।

भारत में विदेशी आक्रांताओं ने न केवल हमारी भूमि पर अधिकार जमाने का प्रयास किया, बल्कि हमारी संस्कृति, भाषा और सामाजिक एकता पर भी चोट की। मुग़ल, अफ़ग़ान और अंग्रेजों के शासनकाल में भाषाओं को कभी सांस्कृतिक नियंत्रण का माध्यम बनाया गया तो कभी प्रशासनिक कामकाज में उनकी सीमाएँ तय की गईं। अंग्रेजों ने खास तौर पर "फूट डालो, राज करो" की नीति अपनाई। उन्होंने उत्तर और दक्षिण, हिंदी और द्रविड़ भाषाओं के बीच मतभेद पैदा करने की कोशिश की। सरकारी कामकाज और शिक्षा में हिंदी या स्थानीय भाषाओं की जगह अंग्रेज़ी को प्रोत्साहित किया गया, जिससे आम जनता का संवाद बाधित हुआ और राष्ट्रीय एकता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

आज भी दुर्भाग्यवश, कुछ राजनीतिक दल और व्यक्तियों ओछी मानसिकता और व्यक्तिगत लाभ के लिए भाषा के मुद्दे को हवा देते रहते हैं। वे इस प्रकार की बहसों को उभारकर समाज में दरार डालने का प्रयास करते हैं। लेकिन भारत की सांस्कृतिक विरासत और लोगों की समझदारी ने हमेशा इन प्रयासों को नाकाम किया है।

वर्ष 1925 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना सर्वे भवन्तु सुखिनः के भाव से हिंदू समाज को संगठित करने के निहित की गई। भारतीय संस्कृति और संस्कारों का वाहक संघ का स्वयंसेवक उत्तर-दक्षिण ओर पूर्व पश्चिम में प्रांतीय भाषाओं में संवाद के साथ साथ मातृ भाषा का संरक्षक भी बना।द्ध

संघ की शाखाओं ओर बैठकों में संवाद का माध्यम स्थानीय भाषाएं ही रही। यह परंपरा सौ वर्ष बाद यथावत है। संघ ने प्रारंभ से ही भारत की सभी भाषाओं को राष्ट्र की एकात्मक समृद्धि का आधार स्तंभ माना। संघ का स्पष्ट मत है कि भारत की सभी स्थानीय-भाषाएं राष्ट्रीय भाषाएं हैं। कोई भाषा क्षेत्रीय या कमतर नहीं है। राज्यों की भाषाएं सम्मान की पात्र हैं और उन्हें बढ़ावा मिलना चाहिए। बच्चों की शिक्षा की शुरुआत उनकी मातृभाषा या घर की भाषा में होनी चाहिए। इससे समझ बढ़ती है, भाषा-संस्कृति बचती है और बौद्धिक विकास बेहतर होता है। प्रत्येक भारतीय को कम-से-कम तीन भाषाएं आनी चाहिए– मातृभाषा, राज्य की भाषा और एक सम्पर्क भाषा। लोगों को न्याय पाने में भाषा की बाधा नहीं होनी चाहिए। इसलिए अदालतों में, सरकारी आदेशों आदि में स्थानीय भाषाओं का उपयोग बढ़ाया जाना चाहिए।

संस्कृत को भारत की सभ्यता और संस्कृति के मूल को परिभाषित करने वाली भाषा माना जाता है। संस्कृत सभी भारतीय भाषाओं की जननी है। इतना ही नहीं अनेक विदेशी भाषाओं पर भी संस्कृत की छाप दिखाई देती है। संघ ने भाषाओं की जननी संस्कृत को भी उचित स्थान दिया है। संविधान सभा की प्रस्तावना में डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के साथ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भी संस्कृत भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने का पक्षधर था, क्योंकि स्वतंत्र भारत के संघर्ष में भाषाई संघर्ष इतना विराट न हो कि भारत की विविधता में एकता का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्कृत भाषा का मूल विलुप्त हो जाए। भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूची में 22 भाषाओं को ही मान्यता प्राप्त है जबकि देशभर में 1369 बोलियां-मातृभाषाएं है।

वर्ष 2023 में भारत ने जब जीट्20 सम्मेलन की मेज़बानी की, तब उसने विश्व को "वसुधैव कुटुम्बकम" का संदेश दिया। यह वाक्यांश केवल एक नारा नहीं, बल्कि भारत की प्राचीन सभ्यता और समग्र दृष्टिकोण का प्रतीक है। इसमें पूरे विश्व को एक परिवार मानने की भावना निहित है, जो भारतीय संस्कृति की मूल आत्मा है। यह महान विचार संस्कृत भाषा की उसी समृद्ध शब्दावली से उत्पन्न हुआ है, जिसने सदियों से मानवता, एकता और सार्वभौमिक भाईचारे का संदेश दिया है।

भारत के भाव भारतीय भाषा में ही सच्चे प्रतीत होते हैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉक्टर मोहन भागवत कहते हैं कि संघ के पास भारत की सभी भाषाओं के उत्कृष्ट गीत है इनकी संख्या लगभग 25-30 हज़ार है। संघ विरोधी साने गुरुजी का गीत "बलसागर भारत होवे" को भी संघ ने अपने मूल गीतों में शामिल किया है। वे कहते हैं कि साने संघ विरोधी थे किन्तु सच्चे देशभक्त रहे, इसी आधार पर संघ ने इस गीत को शामिल किया। इसी तरह जननी जन्मभूमि स्वर्ग से महान है गीत को सिनेमा में गाया गया है। इसे भी संघ गीतों में शामिल किया गया, क्योंकि इस गीत के पीछे भावना देश प्रेम और समर्पण की रही है।

संघ की अखिल भारतीय बैठकों में देश के दूर-दराज़ क्षेत्रों से आए स्वयंसेवक कन्नड़, पंजाबी, मराठी, तेलुगु, असमिया, गुजराती, हिंदी, कश्मीरी और राजस्थानी भाषाओं से जुड़े होते हैं। इन विविध भाषाई पृष्ठभूमियों के बावजूद, इन बैठकों में संवाद का संचालन सदैव हिन्दी में किया जाता है। सभी स्वयंसेवक आपसी समझ और सहयोग से सहज रूप में संवाद स्थापित कर लेते हैं।

यह परंपरा वर्षों से चली आ रही है, जो भारतीय भाषाओं के बीच एकता, समरसता और पारस्परिक सम्मान का जीवंत उदाहरण है। दक्षिण भारत में संघ कार्यों में संवाद का प्रमुख आधार स्थानीय भाषाएं होती हैं, जिससे न केवल कार्य की सहजता बढ़ती है बल्कि स्थानीय भाषाओं की पहचान और सम्मान भी सुदृढ़ होता है। संघ ने तमिलनाडु में 'देविगा तमिल संगम' नाम से एक संवाद-संबंधी संगठन की स्थापना की है, जो तमिल भाषी समाज से सीधे जुड़कर संवाद और सहयोग का माध्यम बना हुआ है। उत्तर भारत की तरह, दक्षिण भारत में भी संघ के शिविर आयोजित किए जाते हैं, जिनमें विचार-विमर्श, सांस्कृतिक कार्यक्रम और लोकसंपर्क जैसी गतिविधियां होती हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी भारत के उत्कृष्ट विकास में भाषा से जुड़ी बाधाएं बनी रहीं। उस समय भारतीय शिक्षा प्रणाली और शासन-प्रशासन की भाषा में स्थानीय भाषाओं को पर्याप्त स्थान नहीं दिया गया। इसका चिंतन वर्ष 1965 की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा में 'भाषा नीति' नामक प्रस्ताव में रखा गया। जिसमें कहा गया कि देश का प्रशासन हमारी अपनी भाषा में चलाया जाए। विदेशी भाषा राष्ट्र की प्रतिभा को अभिव्यक्त नहीं कर सकती न ही उसके विकास में सहायक हो सकती है। इस तरह संघ के इस प्रस्ताव में भारतीय भाषाओं के प्रयोग को प्रखरता से रखा गया।

वर्ष 2018 में नागपुर में आयोजित प्रतिनिधि सभा के प्रस्ताव में "भारतीय भाषाओं का संवर्द्धन एवं संरक्ष" में यह मत रखा गया कि देश में प्रचलित विविध भाषाएं बोलियां हमारी संस्कृति, उदात्त परंपराओं, उत्कृष्ट ज्ञान, विपुल साहित्य को अक्षुण्ण बनाए रखने के साथ ही वैचारिक नव सृजन हेतु भी परम आवश्यक है। विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध लिखित साहित्य की अपेक्षा कई गुना अधिक ज्ञान गीतों, लोकोक्तियों, लोक कथाओं और लोक परम्पराओं के रूप में होता है। आज भारत की अनेक भाषाएं एवं बोलियां विलुप्त हो चुकी है। कई बोलियों का अस्तित्व संकट में है। संघ की प्रतिनिधि सभा का यह मानना है कि देश की विभिन्न भाषाओं तथा बोलियों के संरक्षण और संवर्द्धन के लिए सरकारों अन्य नीति निर्धारकों और स्वैच्छिक संगठनों सहित समस्त समाज को हर संभव प्रयास करने चाहिए।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में संघ की भाषा संरक्षण की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इस नीति में प्राथमिक स्तर पर शिक्षा को मातृभाषा में प्रदान करने का विकल्प दिया गया है। साथ ही, उच्च शिक्षा और तकनीकी क्षेत्रों में भी हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को शामिल किया गया है। इस पहल से विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता में वृद्धि होगी और शिक्षा का दायरा अधिक सुलभ व सार्थक बनेगा। अब भाषा के भेदभाव के कारण उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों से भारतवासी मुक्त होंगे।

राजकाज से लेकर शैक्षणिक संस्थानों तक मातृभाषा और राष्ट्रभाषा के प्रयोग का प्रचलन संघ के सतत प्रयासों से बढ़ रहा है। डिजिटल तकनीक और एशियाई युग की संवाद-सुविधाओं ने इस दिशा में नई ऊर्जा प्रदान की है। भारतीय भाषाओं के माध्यम से सुगम संवाद और सर्वसमावेशी विकास की दिशा में भारत आगे बढ़ रहा है। इस नवभारत की नींव में संघ का भाषा संरक्षण का समर्पण अतुलनीय है।

–डॉ. निमिषा गौड़,
भाजपा नैत्री, अ. प्रोफेसर
कनोड़िया पी. जी. महिला
महाविद्यालय जयपुर।

माइनिंग सेक्टर प्रोएक्टिव मोड़ पर

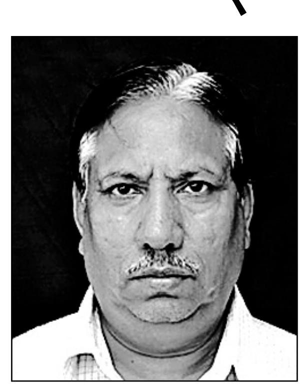

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

राजस्थान का माइनिंग सेक्टर प्रोएक्टिव मोड पर आ गया है। प्रदेश में खनिज से जुड़े सभी पहलूओं के योजनावद्ध क्रियान्वयन, समन्वय, प्रबंधन, प्रभावी मोनेटरिंग, एक्सप्लोरेशन, राजस्व, निवेश एवं रोजगार बढ़ोतरी, सस्टेनेबल माइनिंग, माइनिंग सेक्टर में देश दुनिया में हो रहे नवाचार और नवीनतम तकनीक और उसके प्रदेश में उपयोग सहित विभिन्न बिन्दुओं को लेकर विभाग द्वारा उच्चस्तरीय परियोजना मोनेटरिंग इकाई (पीएमयू) का गठन किया है। माना जा रहा है कि प्रदेश में क्रिटिकल एवं स्ट्रेटेजिक खनिजों के साथ ही प्रधान व अप्रधान खनिजों के विपुल भण्डारों को देखते हुए पीएमयू के गठन से खनिज क्षेत्र को और अधिक गतिशील बनाया जाएगा।

इससे खानें जल्दी परिचालन आने के साथ ही निवेश एवं रोजगार के अवसर बढेंगे। वैसे भी आने वाले समय में माइनिंग सेक्टर की भूमिका में बड़ा बदलाव आने लगा है। अमेरिकी राष्ट्रप्रति ट्रंप की छटपटाहट से इसे आसानी से समझा जा सकता है। अमेरिका कभी कनाडा को अमेरिका का राज्य ही बनाने में जुटा है तो यूक्रेन की खनिज संपदा अपने नाम करवाने या रुस पर दबाव बनाने के पीछे धरती के गर्भ में समाई खनिज संपदा ही है। खनिज संपदा पर आज दुनिया के देशों की नजर है। चीन के वर्चस्व का बड़ा कारण उसका आरईई सहित खनिज संपदा पर एकाधिकार ही है और आज चीन के इस वर्चस्व को कम करने में ही जुटे हुए हैं।

खैर यह विषयांतर होगा पर एक बात साफ है कि माइनिंग सेक्टर में मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के नेतृत्व व मार्गदर्शन में तेजी से काम होने लगा है और राजथान ऑक्शन सहित रेवेन्यू अर्जन विकास दर आदि में अव्वल हो गया है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा माइनिंग सेक्टर में विपुल संभावनाओं को देखते हुए राजस्थान के माइनिंग सेक्टर को देश में अग्रणी राज्य बनाने पर जोर देते रहे हैं। नई खनिज नीति, एम-सेण्ड नीति, रिप्स में सहायता प्रावधान, एमनेस्टी योजना सहित प्रक्रिया के सरलीकरण और खनन क्षेत्र विकास के महत्वपूर्ण कदम उठाये गये हैं। पीएमयू के गठन के साथ ही खनन क्षेत्र से जुड़ी प्रमुख गतिविधियों को 7 सेक्टरों में चिन्हित किया गया है।

प्रमुख सचिव माइन्स रविकान्त का मानना है कि सभी क्षेत्रों में समन्वित व तेजी से विकास के लिए वरिष्ठ अधिकारियों को जोड़ते हुए पीएमयू का गठन किया गया है जिससे योजनावद्ध तरीके से तेजी से आगे बढ़ा जा सके। एक्सप्लोरेशन, ऑक्शन, शीध्र परिचालन, रिसर्च एवं डव्लपमेंट, जीरो लॉस माइनिंग, इकोटूरिज्म की संभावनाओं, पेपरलेस सहित विभिन्न गतिविधियों का समावेश किया गया है। विभाग के वरिष्ठ व विशेषज्ञ अधिकारियों को प्रभारी अधिकारी बनाया गया है। अतिरिक्त निदेशक मुख्यालय महेश माथुर को नोडल अधिकारी व अधीक्षण अभियंता सतर्कता जयपुर प्रताप मीणा को सहप्रभारी बनाया गया है। अतिरिक्त निदेशक भूविज्ञान आलोक जैन, वित्तीय सलाहकार गिरिश कछारा, अधीक्षण खनि अभियंता एनएस शक्तावत, जयगुरुबख्सानी, अधीक्षण भूवैज्ञानिक सुनील वर्मा, संजय सक्सैना आदि को इन दलों की जिम्मेदारी दी गई है।

खनिज क्षेत्र से जुड़े 7 प्रमुख सेक्टरों में से पहले एक्सप्लोरेशन व ऑक्शन का बनाया गया है। इस दल द्वारां कोमोडिटी, मिनरल ग्रेड, खनन के प्रकार सहित विभिन्न बिन्दुओं पर कार्य करेगी। यह दल जीएसआई सहित तकनीकी विशेषज्ञों से समन्वय बनाते हुए एक्सप्लोरेशन से ऑक्शन आदि संबंधित कार्यों को और अधिक प्रभावी गति दी जा सकेगी। इसी तरह से ऑक्शन किये गये माइनर और मिनरल ब्लॉकों को जल्द से जल्द परिचालन में लाने के लिए संबंधित स्टेक होल्डर्स व खान विभाग सहित संबंधित विभागों से समन्वय बनाते हुए आवश्यक अनुमतियां दिलाने में सहयोग के साथ ही शीघ्र परिचालन में लाने का कार्य करेगी। विभाग का जोर खनन क्षेत्र में राजस्व बढ़ाने और राजस्व में किसी भी तरह की छीजत को रोकना भी है और इसके लिए एक दल को मोनेटरिंग सहित आवश्यक सभी जिम्मेदारियां दी गई है।

डीएमएफटी के कार्य को गति देने और राशि के बेहतर उपयोग की मोनेटरिंग की जिम्मेदारी सौंपते हुए डीएमएफटी फण्ड के अन्य प्रदेशों में उपयोग को लेकर अध्ययन सहित योजना, क्रियान्वयन व मोनेटरिंग का फ्रेमवर्क तैयार करने को कहा गया है। राज्य सरकार का सस्टेनेबल माइनिंग पर जोर रहने के साथ ही बदलते परिवेश में यह आवश्यक भी हो गया है। सस्टेनेबल माइनिंग और ऑटोमेशन और तकनीक सेक्टर दल द्वारा स्टार रेंटिंग, बंद व कार्य नहीं कर रही खानों में इको टूरिज्म की संभावनाओं व क्रियान्वयन, डम्प ओवरवर्डन आदि के रिसाइक्लिनिंग व उपयोग, श्रेष्ठ कार्य करने वाली खानों को प्रोत्साहित करने के साथ ही विभागीय सिस्टम को नई तकनीक से जोड़ने और पेपरलेस करने की दिशा में कार्य दिया गया है।

इसी तरह से खनिज क्षेत्र में शोध एवं विकास को बढ़ावा देने, अधिकारियों के रिओरियेंटेशन, खनन क्षेत्र से जुड़े स्टेक होल्डर्स व विभाग के बीच साझा मंच उपलब्ध कराने, देश दुनिया में तकनीक में आ रही बदलाव से रुबरु कराने सहित इस तरह के कार्यों के लिए कॉन्क्लेव, सेमिनार, संगोष्ठियां, प्रशिक्षण कार्यक्रम की रुपरेखा व आयोजन का कार्य किया जाएगा।

राज्य सरकार ने पीएमयू गठित कर जिम्मेदारी तय करने के साथ ही सरकार की ईच्छा शक्ति स्पष्ट कर दी है। अब पीएमयू टीम को जी जान से जुटते हुए माइनिंग के सभी क्षेत्रों में अग्रणी बनाने के लिए जुट जाना होगा।

माइनिंग सेक्टर आज देश दुनिया में महत्वपूर्ण सेक्टर हो गया है। ऐसे में राजस्थान सरकार द्वारा प्रोएक्टिव रोल अपनाने की पहल निश्चित रुप से सराहनीय प्रयास माना जाना चाहिए। आशा की जानी चाहिए कि आने वाले समय में राजस्थान का माइनिंग सेक्टर अग्रणी भूमिका निभाने वाला होगा।

–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा,
(वरिष्ठ लेखक)

राशिफल बुधवार 8 अक्टूबर, 2025

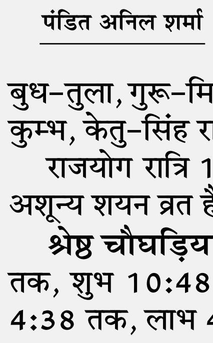

पंडित अनिल शर्मा

कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2082, अश्विनी नक्षत्र रात्रि 10:23 तक, हर्षण योग रात्रि 1:33 तक, तैतिल करण सायं 4:08 तक, चन्द्रमा आज मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-मेष, मंगल-तुला, बुध-तुला, गुरू-मिथुन, शुक्र-सिंह, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

राजयोग रात्रि 10:28 से सूर्योदय तक है। आज अशून्य शयन व्रत है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:21 तक, शुभ 10:48 से 12:16 तक, चर 3:10 से 4:38 तक, लाभ 4:38 से सूर्योदय तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:26, सूर्यास्त 6:03

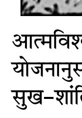

मेष

मानसिक तनाव से राहत मिल सकती है। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

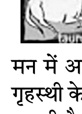

वृष

मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। आज घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

मिथुन

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

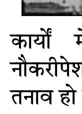

सिंह

शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को मानसिक तनाव हो सकता है।

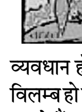

कन्या

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में दुर्घटना का भय रहेगा।

तुला

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

वृश्चिक

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

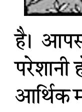

धनु

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। आज व्यावसायिक आर्थिक मामलों पर ध्यान देना ठीक रहेगा।

मकर

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

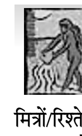

कुंभ

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

मीन

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मुख्यमंत्री भजनलाल की पहल पर ''रिम्स'' स्थापना के काम को मिल रही गति

एम्स नई दिल्ली और राजस्थान सरकार के बीच एम.ओ.यू. हुआ

- रिम्स की स्थापना से प्रदेश के युवाओं को मिलेगी विश्वस्तरीय चिकित्सा शिक्षा
- राजस्थान की स्वास्थ्य सेवाएं और सुदृढ़ होंगी

जयपुर, 07 अक्टूबर। मुख्यमंत्री श्री भजन लाल शर्मा की पहल पर एम्स की तर्ज पर जयपुर में रिम्स की स्थापना के काम को प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ाया जा रहा है। इसी कड़ी में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), नई दिल्ली और राजस्थान सरकार के चिकित्सा शिक्षा विभाग के बीच मंगलवार को राजस्थान आयुर्विज्ञान संस्थान (रिम्स), जयपुर की स्थापना और संचालन के लिए एक एमओयू हस्ताक्षिरत किया गया। एमओयू पर एम्स नई दिल्ली के निदेशक डॉ. एम. श्रीनिवास और राजस्थान सरकार के चिकित्सा शिक्षा आयुक्त डॉ. इकबाल खान ने हस्ताक्षर किए।

चिकित्सा शिक्षा सचिव अम्बरीष कुमार ने बताया कि यह समझौता संस्थागत विकास पर केंद्रित है, जिसमें तकनीकी, शैक्षिणक और संगठनात्मक सहायता के माध्यम से पारस्परिक लाभ पर जोर दिया गया है, जिससे नवाचार और उत्कृष्टता को बढ़ावा मिलेगा। एम्स की वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त विशेषज्ञता का लाभ लेकर रिम्स को एक अग्रणी तृतीयक चिकित्सा संस्थान के रूप में विकसित किया जाएगा, जिससे स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और अनुसंधान में अंतरराष्ट्रीय मानक सुनिश्चित हो सकेंगे।

एम्स नई दिल्ली के निदेशक डॉ. एम. श्रीनिवास ने कहा कि एम्स अपनी संस्थागत विरासत को रिम्स जैसे उभरते उत्कृष्टता केंद्रों के साथ साझा करने के लिए प्रतिबद्ध है। यह एमओयू दूरदृष्टि और विशेषज्ञता का एक सहज संयोजन है, जो राजस्थान के युवाओं और समुदायों को विश्वस्तरीय चिकित्सा शिक्षा देने के साथ ही स्वास्थ्य सेवाओं को सशक्त करेगा।

चिकित्सा शिक्षा आयुक्त डॉ. इकबाल खान ने कहा कि एम्स के साथ साझेदारी रिम्स जयपुर के लिए एक परिवर्तनकारी कदम है। यह पहल चिकित्सा क्षेत्र में बुनियादी ढांचे को मजबूत करेगी। साथ ही, चिकित्सा अनुसंधान और सार्वजनिक स्वास्थ्य में टिकाऊ प्रगति को भी बढ़ावा देगी, जो राज्य के आमजनों को लाभान्वित करेगी। एमओयू के तहत एम्स द्वारा रिम्स के लिए साइट योजना, रोगी प्रवाह डिजाइन, नियामक अनुपालन और वास्तुशिल्प ढांचे पर मार्गदर्शन प्रदान किया जाएगा, ताकि रिम्स में अत्याधुनिक सुविधाएं सुगमता से विकसित की जा सकें। प्रदेश में एमबीबीएस और स्नातकोत्तर शिक्षण के लिए पाठ्यक्रम डिजाइन, संकाय प्रशिक्षण, विनिमय कार्यक्रम और मेंटरशिप में संयुक्त प्रयास किया जायेगा, जिससे नैदानिक और शैक्षिणक क्षमताओं का संवर्द्धन होगा। साथ ही, संगठनात्मक ढांचे, मानव संसाधन नीतियों, खरीद फ्रेमवर्क, जैव-सुरक्षा मानकों, नैतिकता समितियों और आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन सेल की स्थापना में सहायता मिल सकेगी।

एमओयू के क्रियान्वयन से अनुसंधान और नैदानिक उत्कृष्टता आयेगी। संयुक्त अनुसंधान पहल, नैदानिक प्रयोगशालाएं और मानक संचालन प्रक्रियाएं बेहतर हो सकेंगी, जिससे साक्ष्य-आधारित अभ्यास और रोगी परिणामों में सुधार होगा।

प्रधानमंत्री मोदी का जीवन राष्ट्र को समर्पित : सुधांशु त्रिवेदी

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता और राज्यसभा सांसद डॉ. सुधांशु त्रिवेदी ने मंगलवार को जयपुर में प्रेस वार्ता की।

जयपुर। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता और राज्यसभा सांसद डॉ. सुधांशु त्रिवेदी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सुशासन के 24 वर्ष पूर्ण होने पर शुभकामनाएं दते हुए उन्हें भारतीय राजनीति में सेवा, समर्पण और सुशासन का प्रतीक बताया।

भाजपा प्रदेश कार्यालय में आयोजित प्रेस वार्ता में डॉ. त्रिवेदी ने कहा कि 7 अक्टूबर 2001 को नरेंद्र मोदी ने गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में पहली बार शपथ ली थी और तब से अब तक उन्होंने बिना किसी अवकाश के 24 वर्षों तक निरंतर राष्ट्र की सेवा की है। यह उपलब्धि भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में अद्वितीय है।

- बिहार चुनावों की स्थिति पर टिप्पणी करते हुए डॉ. त्रिवेदी ने कहा कि ''हाल के जनमत सर्वेक्षणों में एनडीए को स्पष्ट बढ़त मिल रही है, जो वास्तविक परिणामों में बदलकर प्रचंड बहुमत में परिवर्तित होगी।''

डॉ. त्रिवेदी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी का जीवन एक प्रेरणा है। उन्होंने अपने तन, मन और हर क्षण को राष्ट्र को समर्पित किया है। पहले गुजरात को विकास मॉडल के रूप में स्थापित किया और अब बीते 11 वर्षों में भारत को वैश्विक मंच पर अग्रणी आर्थिक शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत आज दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है और आर्थिक विषमताओं के बावजूद सबसे तेज़ी से आगे बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था के रूप में उभर रहा है।

त्रिवेदी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी भारतीय राजनीति के ऐसे विलक्षण नेता हैं, जिन्होंने लगातार तीन बार मुख्यमंत्री और फिर तीन बार प्रधानमंत्री रहते हुए हर पल राष्ट्र प्रथम की भावना को जीवित रखा। यह प्रत्येक भारतवासी के लिए गर्व और गौरव का विषय है।

प्रेस वार्ता के दौरान डॉ. त्रिवेदी ने बिहार चुनावों की स्थिति पर भी टिप्पणी करते हुए कहा कि हाल के जनमत सर्वेक्षणों में एनडीए को स्पष्ट बढ़त मिल रही है, जो वास्तविक परिणामों में बदलकर प्रचंड बहुमत में परिवर्तित होगी। उन्होंने कहा कि बिहार में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में एनडीए पूरी स्थिरता और सामंजस्य के साथ काम कर रहा है, जबकि विपक्षी दलों में स्पष्ट नेतृत्व का अभाव और पारिवारिक कलह साफ नजर आ रही है। डॉ. त्रिवेदी ने विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' पर कटाक्ष करते हुए कहा कि यह गठबंधन अंतर्विरोधों से घिरा हुआ है – ना केवल दलों के बीच, बल्कि पार्टी के भीतर और नेतृत्वकर्ता परिवारों के भीतर भी। उन्होंने चुटकी लेते हुए कहा, जो खुद को मुख्यमंत्री समझते हैं, उनके पास क्षमता नहीं है, और जो खुद को प्रधानमंत्री इन वेटिंग कहते हैं, वे प्रेस कॉन्फ्रेंस में भी यह स्पष्ट नहीं कर पाते कि उनका नेता कौन है।

युवाओं एवं महिलाओं को सहकारी समितियों से जोड़ने पर विशेष फोकस

'सहकार सदस्यता अभियान' के तहत मंगलवार को जयपुर के सेंट विल्फ्रेड कॉलेज में युवाओं के साथ संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया।

- ''सहकार सदस्यता अभियान'' के लिए 3207 पैक्स के स्तर पर हो चुका शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन

जयपुर । राज्य सरकार द्वारा 2 से 15 अक्टूबर तक आयोजित किए जा रहे ''सहकार सदस्यता अभियान'' के अंतर्गत मंगलवार तक प्रदेश में 3207 पैक्स के स्तर पर शिविरों का सफलतापूर्वक आयोजन किया जा चुका है। इन शिविरों के माध्यम से सहकारी समितियों की सदस्य संख्या में तीव्र गति से वृद्धि हो रही है तथा अभियान के अंतर्गत प्रावधित किये गए अन्य कार्य भी सुगमतापूर्वक सम्पन्न हो रहे हैं।

प्राप्त जानकारी के अनुसार मंगलवार को प्रदेश में 630 पैक्स के स्तर पर शिविरों का आयोजन किया गया। अभियान के अंतर्गत अब तक 959 नवीन पैक्स के गठन हेतु प्रस्ताव सहकारिता विभाग को प्राप्त हो चुके हैं तथा 1076 पैक्स एवं केवीएसएस द्वारा गोदाम निर्माण हेतु भूमि चिह्नीकरण की कार्यवाही सम्पन्न की जा चुकी है। वहीं, पीएम किसान सम्मान निधि योजना के अंतर्गत 18 हजार 595 कृषकों की आधार सीडिंग तथा 8,419 कृषकों की ई-केवाईसी का कार्य किया गया है। अभियान के अंतर्गत युवाओं एवं महिलाओं को सहकारी समितियों से जोड़ने का कार्य तीव्र गति से जारी है।

जबकि, प्रतिदिन बड़ी संख्या में जनसाधारण को प्रस्तावित नवीन सहकारी अधिनियम के प्रमुख प्रावधानों की जानकारी भी प्रदान की जा रही है। अब तक लगभग 2.50 लाख लोगों को नवीन सहकारी अधिनियम के प्रावधानों की जानकारी प्रदान की जा चुकी है। अभियान के अंतर्गत अधिक से अधिक युवाओं एवं महिलाओं को सहकारी समितियों से जोड़ने पर विशेष रूप से फोकस किया जा रहा है। इसके लिए शैक्षिणक संस्थाओं, एनजीओ, राजीविका, हिन्दुस्तान स्काउट एंड गाइड आदि का सहयोग लिया जा रहा है। मंगलवार को जयपुर के सेंट विल्फ्रेड कॉलेज में 'सहकार सदस्यता अभियान' के अंतर्गत युवाओं के साथ संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस दौरान सहकारिता विभाग के अधिकारियों ने विद्यार्थियों को सहकारिता के विभिन्न आयामों एवं विभाग की कल्याणकारी योजनाओं की विस्तार से जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम के दौरान लगभग 2,000 छात्र-छात्राओं से सदस्यता फॉर्म भरवाये गए। अतिरिक्त रजिस्ट्रार (द्वितीय) संदीप खण्डेलवाल, अतिरिक्त रजिस्ट्रार (जयपुर खण्ड) मदनलाल गुर्जर, केन्द्रीय सहकारी बैंक, जयपुर के प्रबंध निदेशक दिनेश कुमार शर्मा एवं उप रजिस्ट्रार जयपुर (शहर) शिरीष वि. चान्दे इस दौरान मौजूद रहे।

विद्युत प्रसारण निगम और एम.एन. आई.टी. के बीच करार

जयपुर। मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर और राजस्थान विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड द्वारा संचालित स्टेट लोड डिस्पैच सेंटर, जयपुर के बीच विद्युत क्षेत्र में नई तकनीक अपनाने के समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।

इस समझौते का उद्देश्य ज्ञान साझाकरण, अनुसंधान एवं विकास, कौशल संवर्द्धन तथा क्षमता निर्माण के क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा देना है।राजस्थान विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड के अध्यक्ष अजिताभ शर्मा ने बताया कि यह समझौता संयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं, औद्योगिक प्रशिक्षण, छात्र इंटर्नशिप, कार्यशालाओं एवं फैकल्टी, उद्योग, संवाद जैसे विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षा और उद्योग के बीच सम्बन्धों को सुदृढ़ करेगा तथा तकनीकी उत्कृष्टता एवं राजस्थान को ऊर्जा क्षेत्र के भविष्य की चुनौतियों के रूप मे भी तैयार करेगा।

अब एस.डी.ओ. व मेला अधिकारी भी जारी कर सकेंगे विशेष परमिट

- ऊंट परिवहन को लेकर नए नियमों का नोटिफिकेशन जारी
- कैबिनेट मंत्री जोराराम कुमावत ने दिए आदेश

जयपुर । राजस्थान से ऊंटों को अन्य राज्यों में ले जाना अब और भी आसान हो गया है, इसके लिए पशुपालन विभाग ने पशुपालन, गोपालन, डेयरी एवं देवस्थान विभाग के कैबिनेट मंत्री श्री जोराराम कुमावत से नियमों की स्वीकृति लेकर नोटिफिकेशन जारी कर दिया है। अब ऊंटपालकों को निर्धारित प्रपत्रों के माध्यम से ऊंट ले जाने की अनुमति होगी। कुमावत ने कहा कि राजस्थान ऊंट (वध का प्रतिषेध और अस्थायी प्रव्रजन या निर्यात का विनियमन) अधिनियम, 2015 में ऊंट को चराई, खेती डेयरी और पशु मेलों में भाग लेने के लिए राज्य से बाहर ले जाने का प्रावधान है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की पहल से महिलाओं को मिला खेती में नया संबल

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान सरकार ने महिला कृषकों को सशक्त बनाने के लिए खरीफ 2025 सीजन में निःशुल्क बीज मिनीकिट वितरित किए हैं।

मूंग, मोठ, मक्का, बाजरा, ज्वार, मूंगफली और सोयाबीन जैसी फसलों के कुल 27,95,337 मिनीकिट विभिन्न योजनाओं के तहत किसानों तक पहुँचाए गए हैं। इनमें से बड़ी संख्या में किट महिलाओं को प्रदान की गई हैं।

महिला की हत्या करने वाले अभियुक्त को आजीवन कारावास

जयपुर । एससी, एसटी मामलों की विशेष अदालत महानगर प्रथम ने आपसी विवाद के चलते परिचित महिला की हत्या करने वाले अभियुक्त सोनू को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। इसके साथ ही अदालत ने अभियुक्त पर एक लाख रुपए का जुर्माना भी लगाया है। पीठासीन अधिकारी मोहन लाल जाट ने अपने आदेश में कहा कि अभियुक्त ने महिला की हत्या करने जैसा गंभीर अपराध किया है। ऐसे में उसके प्रति नरमी नहीं अपनाई जा सकती।

अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक अभियोजक ने अदालत को बताया कि मामले में संजय साहू ने 23 दिसंबर, 2018 को खोह-नागोरियान थाने में रिपोर्ट दी थी। जिसमें कहा कि वह दोपहर को वह दुकान से लूनियावास खाना खाने जा रहा था। मंगल बाजार मैदान के पास उसे काफी भीड नजर आई। उसने पास जाकर देखा तो पेड के नीचे महिला की लाश पडी हुई है और साडी खून से सनी है। इस पर उसने अपने मोबाइल से पुलिस कंट्रोल रूम में सूचना दी थी। रिपोर्ट पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने अभियुक्त को गिरफ्तार कर अदालत में आरोप पत्र पेश किया। सुनवाई के दौरान अभियोजन पक्ष के एक गवाह मोहन ने अदालत को बताया कि मृतका प्रेम देवी के पति की मौत होने के बाद अभियुक्त उसके घर आने लगा था।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने की जनसुनवाई

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर । उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने मंगलवार को अपने सरकारी आवास पर जनसुनवाई का आयोजन किया, जिसमें बड़ी संख्या में आमजन अपनी विभिन्न समस्याएं लेकर पहुंचे।

जनसुनवाई के दौरान दिया कुमारी ने प्रत्येक व्यक्ति से व्यक्तिगत रूप से मुलाकात कर उनकी समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुना। जनता ने सड़क, पानी, बिजली, पेंशन और अन्य नागरिक सुविधाओं से जुड़ी समस्याएं रखीं। उपमुख्यमंत्री ने मौके पर उपस्थित संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी शिकायतों का शीघ्र समाधान सुनिश्चित किया जाए और किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इस अवसर पर संबंधित विभागों के अधिकारी भी मौजूद रहे, जिन्हें समस्या समाधान के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। दिया कुमारी ने कहा कि सरकार जनता के साथ है और उनकी समस्याओं का त्वरित समाधान सरकार की प्राथमिकता है।

ब्रिटिश संसद पहुंचे देवनानी, अजमेर की ऐतिहासिक पेंटिंग भी देखी

जयपुर। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने अपने लंदन प्रवास के दौरान ब्रिटिश संसद का भ्रमण किया। उन्होंने हाउस ऑफ कॉमंस और हाउस ऑफ लाड्‌र्स की कार्यप्रणाली और संसदीय परंपराओं को करीब से समझा। उन्होंने वेस्टमिंस्टर हॉल और सेंट्रल लॉबी का अवलोकन करते हुए कहा कि हालांकि ब्रिटेन की संसदीय परंपराएं पुरानी हैं, पर भारत का लोकतंत्र आज विश्व का सबसे बड़ा और सुदृढ लोकतंत्र है। इस अवसर पर देवनानी ने सेंट स्टीफन हॉल में लगी सर थॉमस रॉ एट द कोर्ट ऑफ अजमेर 1614 की ऐतिहासिक पेंटिंग को भी देखा। उन्होंने कहा कि यह चित्र भारत-ब्रिटेन के गहरे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों का प्रतीक है।

76 हजार किलो संदिग्ध खाद्य पदार्थ जब्त

- राजस्थान में मिलावटखोरी पर भजनलाल सरकार की बड़ी कार्रवाई

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान सरकार ने त्यौंहारी सीजन के मद्देनज़र मिलावट के खिलाफ एक बड़ा अभियान शुरू किया है। अभियान के तहत अब तक प्रदेशभर में 76283 किलोग्राम संदिग्ध या मिलावटी खाद्य सामग्री जब्त की गई है, जबकि 58,780 किलोग्राम सामग्री को नष्ट किया जा चुका है। यह कार्रवाई खाद्य सुरक्षा आयुक्तालय द्वारा 'सिर्फ रोशनी ही नहीं, बल्कि प्रत्येक थाली भी हो सुरक्षित' थीम के तहत संचालित की जा रही है, जिससे त्योहारों के दौरान आमजन को शुद्ध और सुरक्षित खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराए जा सकें।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग की प्रमुख शासन सचिव गायत्री राठौड़ ने जानकारी दी कि अभियान की निगरानी स्वयं मुख्यमंत्री कर रहे हैं और चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर के मार्गदर्शन में पूरे राज्य में सघन निरीक्षण किए जा रहे हैं। मिठाई, घी, तेल, मावा, डेयरी उत्पाद और खाद्य रंग जैसे उत्पादों के साथ-साथ इनके निर्माण में उपयोग होने वाले कच्चे माल की आपूर्ति करने वाली इकाइयों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

एक सितंबर से अब तक कुल 2835 निरीक्षण किए जा चुके हैं, जिनमें 2556 प्रवर्तन जांचें शामिल हैं। इसके साथ ही 3,520 नमूनों की जांच के लिए टीमें फील्ड में भेजी गईं। यह कार्रवाई उन विक्रेताओं और निर्माताओं के खिलाफ केंद्रित है जो दूध, खोया, खाद्य तेल और घी जैसे उच्च मांग वाले उत्पादों में मिलावट करते हैं।

विभाग की ओर से जहां आवश्यक पाया गया, वहां सुधार नोटिस जारी किए गए हैं और खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम, 2006 के अंतर्गत कानूनी कार्रवाई भी की जा रही है। खाद्य सुरक्षा आयुक्त डॉ. टी. शुभमंगला ने बताया कि राज्यभर में चल रहे इस अभियान का मुख्य उद्देश्य त्योहारों के दौरान उपभोक्ताओं को मिलावट रहित खाद्य सामग्री उपलब्ध कराना है। उन्होंने बताया कि विभाग द्वारा मिठाई निर्माताओं और खाद्य व्यवसायियों के लिए स्वच्छता, भंडारण तथा शुद्ध कच्चे माल के उपयोग पर कार्यशालाएं आयोजित की गई हैं। उन्होंने आमजन से अपील की है कि वे यदि किसी भी प्रकार की संदिग्ध या अस्वच्छ खाद्य गतिविधि को देखें तो तत्काल इसकी सूचना एफएसएसएआई के फूड सेफ्टी कनेक्ट ऐप या स्थानीय नियंत्रण कक्ष में दर्ज कराएं, जिससे मिलावटखोरी के खिलाफ जारी इस मुहिम को और अधिक सशक्त बनाया जा सके।

अपहरण के मामले में चार आरोपी गिरफ्तार

- चार-पांच बदमाशों ने युवक से मारपीट की और थार गाड़ी में अपहरण कर ले गए थे
- पुलिस टीम ने 150 से अधिक सीसीटीवी फुटेज चैक किए तो जानकारी मिली कि अपहरणकर्ता दौसा की तरफ गए हैं

निवाई, (निसं)। निवाई थाना पुलिस ने अपहरण के मामले में चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

थानाधिकारी रामजीलाल बैरवा ने बताया कि सूरजमल पुत्र हनुमान मीणा निवासी दौलतपुरा हाल निवासी दादू दयाल कॉलोनी निवाई ने सितंबर में मामला दर्ज करवाया था कि चार-पांच बदमाशों ने उसके भाई भरत मीणा के साथ मारपीट की और उसकी थार गाड़ी में अपहरण कर ले गए। पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर टीम का गठन किया और तलाशी अभियान शुरू किया। पुलिस टीम ने 150 से अधिक सीसीटीवी फुटेज चैक किए और तकनीकी साक्ष्य जुटाए। इस पर टीम को जानकारी मिली कि अपहरणकर्ता दौसा की तरफ गए हैं। पुलिस ने उनका पीछा किया तो आरोपी करौली धौलपुर जिले की सीमा पर भरत मीणा को छोड़कर फरार हो गए।

पुलिस ने भारत मीणा को दस्तयाब कर सुरक्षित परिवार जनों को सौंप दिया। इसके बाद आरोपियों की गिरफ्तारी के प्रयास में जुट गई। तलाशी अभियान के दौरान टीम को सूचना मिली कि आरोपी धौलपुर में ही हैं। उन्होंने बताया कि पुलिस टीम ने स्थानीय पुलिस की मदद से धौलपुर से आरोपी भगवान दास पुत्र छुट्टनलाल मीणा दोनों निवासी सुनकई, थाना आंगई, जिला धौलपुर, सुनील पुत्र संतराम मीणा व किशन लाल पुत्र सन्तराम मीणा दोनों निवासी मडासिल थाना सरमथुरा जिला धौलपुर को गिरफ्तार कर लिया।

कोलायत में मालगाड़ी पटरी से उतरी, 10 फीट दूर जाकर गिरे डिब्बे

'मालगाड़ी के 37 डिब्बे पटरी से उतरे हैं, लेकिन किसी तरह की जनहानि नहीं हुई है'

- रेल की पटरियां अलग होकर करीब दो फीट तक एक दूसरे के ऊपर पहुंच गई

बीकानेर, (निसं)। यहां बीकानेर से जैसलमेर की ओर जा रही एक मालगाड़ी मंगलवार सुबह करीब सात बजे अचानक डिरेल हो गई। मालगाड़ी के करीब 37 डिब्बे पटरी से उतर गए और कुछ डिब्बे लगभग 10 से 20 फीट दूरी तक जा गिरे। रेल की पटरियां एक दूसरे से अलग होकर करीब दो फीट तक एक दूसरे के ऊपर पहुंच गई। गनीमत रही कि ये मालगाड़ी का हादसा है। इसी ट्रैक से बीकानेर-जैसलमेर रेल भी दिन में दो बार आना-जाना करती है। मालगाड़ी के कारण कोई घायल नहीं हुआ। रेलवे प्रशासन मौके पर पहुंचा। डिब्बों को मौके से हटाकर इस मार्ग पर यातायात फिर से शुरू किया जाएगा। इस बीच बीकानेर से जैसलमेर के बीच सुबह 7 बजकर 40 मिनट पर रवाना होने वाली 14704 नंबर गाड़ी रद्द कर दिया गया।

उत्तर-पश्चिम रेलवे के प्रवक्ता शशि किरण ने बताया कि रेलवे के उच्चाधिकारी मौके पर पहुंच गए हैं। फिलहाल एक ट्रेन को रद्द किया गया है। जल्दी ही स्थिति सामान्य कर ली जाएगी। उन्होंने बताया कि कुल 37 डिब्बे पटरी से उतरे हैं लेकिन किसी तरह की जनहानि नहीं हुई है। कोलायत से बीकानेर के बीच इंदो का बाला गांव के पास ये हादसा हुआ है। सुबह सात बजे ये मालगाड़ी बीकानेर से जैसलमेर की ओर जा रही थी। इंदा का बाला गांव के ठीक पास ही पटरी से गाड़ी नीचे उतर गई। स्पीड में होने के कारण पटरी के कुछ डिब्बे तो दूर तक जा गिरे। एक दूसरे से जुड़े होने के कारण एक के बाद एक चार डिब्बे नीचे उतर गए। तभी मालगाड़ी के लोको पायलट ने इसे रोक दिया। रेलवे ट्रेक करीब 100 फीट तक क्षतिग्रस्त हो गया है, जिसे वापस जोड़कर इस मार्ग को शुरू किया जाएगा। हालांकि इस मार्ग पर सवारी गाड़ी के रूप में बीकानेर जैसलमेर ट्रेन ही चलती है। देर रात ये दोनों ट्रेन निकल चुकी है। अब रात में ही यहां से सवारी गाड़ी को निकलना है। तब तक रेलवे इसे दुरुस्त कर देगा। रेलवे के सीनियर डीसीएम भूपेश यादव ने बताया कि हादसे में किसी को चोट नहीं लगी है।

यादव फिलहाल कुछ भी कहने से बच रहे हैं। ये हादसा इतना जबरदस्त था कि रेल पटरियों को जहां से जोड़ा जाता है, वो वहां से अपना स्थान छोड़कर करीब 2 फीट आगे निकल गई। पटरियों के किनारे समानान्तर रूप से एक दूसरे के साथ हो गए। इतना ही नहीं जिस ट्रैक पर डिब्बे रखे होते हैं, वो भी उतरकर पटरियों से दूर जा गिरे। आमतौर पर रेल पटरियों के घुमाव वाले स्थान पर डिरेल हो जाती है लेकिन इंदों का बाला गांव में ये सीधी पटरियों पर ही पटरी से नीचे उतर गई। आमतौर पर ऐसा नहीं होता है। ऐसे में रेलवे को इसकी जांच करवानी पड़ेगी। इसी ट्रैक पर दो सवारी गाड़ी भी निकलती है।

जुआ खेलते दो आरोपी गिरफ्तार

टोंक, (निसं)। उनियारा उपखण्ड के थाना सोप क्षेत्र में पुलिस ने कई स्थानों पर दबिश देकर जुआ खेलते दो आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से नकद 980 रुपये भी जब्त किये हैं। थाना प्रभारी ने बताया कि मुखबिर की सूचना पर सोप थाना टीम ने गोमती सागर की पाल स्थित पटवार घर के पास जुआबाजी करते विनोद किर एवं सौराज बैरवा को सट्टे की खाईवाली करते हुए पकड़ा।

Office of the Superintendent Engineer and Project Manager WCDC, Karauli

No. :- ( ) / 1641 Date :- 03/10/2025

NOTICE INVITING BID
NIB No. : 28,29,30/2025-26

Bids for various works of Project PMKSY 2.0 & MJSA 2.0 of estimated value INR (153.72+70.72+59.79) 284.23 lacs, (64.80+15.51) 80.31 lacs & (5.32+3.42) 8.74 lacs are invited from interested bidders up to 6.00 PM, 08-10-2025, Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal **(https://eproc.rajasthan.gov.in or https://sppp.rajasthan.gov.in/)** of the state, departmental website **(https://water.rajasthan.gov.in/wdsc).**

NIB No.	NIB CODE	UBN No.
28	WSC2526A0785	WSC2526WSRC01358 01359, 01360
29	WSC2526A0786	WSC2526WSRC01361, 01362
30	WSC2526A0787	WSC2526WSRC01363, 01364

Raj.Samwad/C/25/11581 **Superintending Engineer and Project Manager**

OFFICE OF THE CHAIRMAN FACULTY
Rajasthan University of Veterinary and Animal Science (Jobner)

No. :- F.( )/Chairman Faculty/RAJUVAS (Jbn.) Jaipur/2025/55 Date :- 06/10/2025

WALK-IN-INTERVIEW FOR TEACHING ASSOCIATES (CONTRACTUAL)
CORRIGENDUM

In continuation to this office previous Advertisement No. 51 dated 25.09.2025, Last date and time for submission of applications from the eligible candidates to work as Contractual Teaching Associates in RUVAS (Jobner), Jaipur is extended up to 13th October, 2025, till 11:00 A.M. through email to Chairman Faculty on E-mail id: cfrajuvasjaipur@gmail.com. (no need for the post). The candidates can submit their application form personally also at the office of the Chairman Faculty, RUVAS (Jobner) Jaipur at Post Graduate Institute of Veterinary Education and Research (PGIVER), N.H.-11, Agra Road, Jamdoli, Jaipur. Other terms & conditions are remain same.

Raj.Samwad/C/25/11569 **CHAIRMAN FACULTY**

Rajasthan Council of School Education
S. Radha Krishnan ShikshaSankul, 5th Block, 2nd & 3rdFloor, JLN Marg, Jaipur – 17
Ph.: 0141-2700366, 2715590, 2715550, E-Mail: rajssa_acctt@yahoo.co.in; rcse.ict@gmail.com

No. :- {Ref. No.} 1791 Dated :- 06/10/2025

NOTICE INVITING e-BID (NIB : 05/2025-26)

Request for proposal invited for Supply, Installation, Testing, Commissioning and operations of ICT Lab in 3213 Govt. Schools up to 1.00 PM of dated 27/10/2025 Other details may be seen in the Bidding Document at State Public Procurement Portal website **www.sppp.rajasthan.gov.in or website "www.rajsmsa.nic.in"** and e-proc portal.

Estimated cost: 35987.50 Lacs
UBN No : RSE2526GLOB01594

State Project Director
RCScE, Jaipur

Raj.Samwad/C/25/11576

मधुमक्खियों का हमला, पांच बच्चे घायल

- हैंडपंप पर नहाते समय हुई घटना, अस्पताल में भर्ती

डूंगरपुर, (निसं)। कोतवाली थाना क्षेत्र के महुडी वसुवा गांव में हैण्डपंप पर नहाने गए नन्हे-नन्हे बच्चों पर मधुमक्खियों ने हमला कर दिया। हमले में पांच बच्चे घायल हो गए। घायल बच्चों को डूंगरपुर जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

जानकारी के अनुसार कोतवाली थाना के महुडी वसुवा गांव निवासी पंकज अर्चना किंजल और गंगा नहाने के लिए गांव के हैण्डपंप पर गए थे। हैण्डपंप के पास एक पेड़ पर मधुमक्खियों का छत्ता लगा हुआ था। बच्चों के नहाते समय अचानक मधुमक्खियों ने बच्चों पर हमला कर दिया। बच्चे रोते हुए दौड़कर अपने घर की ओर भागे। इस दौरान मधुमक्खियां बच्चों के पीछे लगी रही और बच्चे घर पहुंचे तो वहां भी मधुमक्खियों ने उन्हें काटा। इससे बच्चों के शरीर पर कई जगह सूजन आ गई और घायल हो गए, जिसके बाद परिजन सभी बच्चों को लेकर डूंगरपुर जिला अस्पताल पहुंचे और उन्हें भर्ती करवाया गया। फिलहाल बच्चों का जिला अस्पताल में इलाज जारी है।

पन्द्रह हजार की रिश्वत लेते संविदाकर्मी गिरफ्तार

- आरोपी ने परिवादी से कार्य की एमबी भरने की एवज में अठारह हजार रुपए की रिश्वत मांगी
- वर्तमान में पंचायत समिति अलीगढ़ में जेटीए (जूनियर टेक्नीकल असिस्टेन्ट) के पद पर संविदा पर कार्यरत है आरोपी

उनियारा/चौरु, (निसं)। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो टोंक ने मंगलवार को अलीगढ़ पंचायत समिति में कार्यरत जेटीए (जूनियर टेक्नीकल असिस्टेन्ट) संविदाकर्मी विक्रम कुमावत पन्द्रह हजार रुपए की रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया गया।

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो टोंक की कार्रवाई के बाद पंचायत समिति अधिकारी व कर्मचारियों में हड़कंप मच गया। इसके बाद भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो टोंक टीम ने रिश्वत लेते रंगे हाथों पकड़े गए आरोपी टी.ए. (जूनियर टेक्नीकल असिस्टेंट) संविदाकर्मी विक्रम कुमावत को गिरफ्तार कर पूछताछ कार्रवाई के लिए पुलिस थाना अलीगढ़ में लाया गया। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो टोंक अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक झाबरमल ने बताया कि रिश्वत लेने का आरोपी विक्रम कुमावत निवासी निवासी ग्राम गांबडी पुलिस थाना नीम का थाना जिला सीकर है, जो वर्तमान में पंचायत समिति अलीगढ़ में जेटीए (जूनियर टेक्नीकल असिस्टेन्ट) के पद पर संविदा पर कार्यरत है।

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस स्मिता श्रीवास्तव ने बताया कि एसीबी की टोंक इकाई को प्राप्त शिकायत में परिवादी के पिताजी को नाम महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम के तहत वर्ष 2022-2023 में खेत पर मेंढबंदी, तालाब की पाल मिट्टी डालना, बागवानी, पशु आश्रय निर्माण कार्य के लिए स्वीकृत हुआ था। जिसमे से कुछ कार्य हो चुका है तथा कुछ कार्य शेष है। कुछ कार्य की मस्टरोल भरी जा चुकी थी। लेकिन आरोपी विक्रम कुमावत जे.टी.ए (जूनियर टेक्नीकल असिस्टेन्ट) संविदाकर्मी पंचायत समिति अलीगढ़ जिला टोंक द्वारा माप पुस्तिका (एम.बी.) भरने की एवज में 18 हजार रूपये की रिश्वत राशि मांग कर परिवादी को परेशान किया जा रहा था। इस पर भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो टोंक ने शुक्रवार को आरोपी द्वारा अठारह हजार रुपए रूपये रिश्वत राशि की मांग कर परिवादी द्वारा कम करने की कहने पर, पन्द्रह हजार रुपए रिश्वत की मांग की जाकर रिश्वत राशि देने पर परिवादी का काम करने के कहने का आरोपी से शिकायत का सत्यापन किया गया।

इस पर मंगलवार को एसीबी के महावीर सिंह राणावत उप महानिरीक्षक पुलिस अजमेर रेंज अजमेर के सुपरविजन में भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो टोंक टीम ने जाल बिछाया। इस पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक झाबरमल ने ट्रेप की कार्रवाई करते हुए आरोपी विक्रम कुमावत जे.टी.ए (जूनियर टेक्नीकल असिस्टेन्ट) संविदाकर्मी को परिवादी से पन्द्रह हजार रुपए रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया गया। आरोपी द्वारा पन्द्रह हजार रुपए की राशि प्राप्त कर परिवादी को खर्च के लिए पांच रूपये रिश्वत राशि में से लौटाये गये। इधर परिवादी का इशारा मिलते ही एसीबी ने आरोपी को रिश्वत लेते रंगे हाथों पकड़ा। एसीबी द्वारा आरोपी से पूछताछ तथा कार्रवाई जारी है। एसीबी द्वारा मामले में भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के अन्तर्गत प्रकरण दर्ज कर अग्रिम अनुसंधान शुरू किया गया।

Rajasthan State Forest Development Corporation Limited
(A Government of Rajasthan Undertaking) Badopal Road, GFC Colony, Suratgarh,
Phone No: 01509-223326 , Email-gmsuratgarh@rajasthan.gov.in

क्रमांक :- एफ8(9)स्टोर/मप्र/राराविनिलिसू/2025-26/1109 दिनांक :- 29/09/2025

ई-बोली संख्या 02/2025-26

महाप्रबंधक राजस्थान राज्य वन विकास निगम लिमिटेड क्षेत्रीय कार्यालय, सूरतगढ़ में लकड़ी (ईमारती व जलाऊ) पातन, चट्टा लगााई तथा निर्धारित विभागीय विक्रय केन्द्रों तक परिवहन (मय भराई, कांटा तुलाई व खाली कराई) कार्य करवाया जाना है। बोली प्रस्तुत करने की आरम्भ तिथि दिनांक 29.09.2025 तथा अन्तिम तिथि दिनांक 24.10.2025 है। उक्त कार्य की अनुमानित लागत राशि रूपये 951.00 लाख है। बोली से संबंधित समस्त विवरण वेबसाईट **http://eproc.rajasthan.gov.in** व **www.sppp.raj.nic.in** पर भी देखी/डाउनलोड की जा सकती हैं।

NIB No. FOR2526A1760
UBN No. FOR2526WLOB02321

महाप्रबंधक
राजस्थान राज्य वन विकास निगम लिमिटेड
क्षेत्रीय कार्यालय, सूरतगढ़

राज.संवाद/सी/25/11579

OFFICE OF THE MUNICIPAL COUNCIL JAISALMER
Off Address :- Near Air Force Circle, Jodhpur Road, Jaisalmer - 345001
Ph:- 02992-252503, E-mail: mbj_jsm@yahoo.com

S.No./MCJ Vikash/2025-26/4229 Date :- 03.10.2025

Notice Inviting Request for Proposal (RFP)
NIT No. 09/2025-26 RFP No. DLB2526RFP0032

Online Technical and Financial Bids in Single Stage two envelops are invited by Municipal Council Jaisalmer. Details may be seen at our office or at the website of the State Public Procurement Portal http://sppp.rajasthan.gov.in, http://eproc.rajasthan.gov.in and may be downloaded from these websites from.

RFP No DLB2526RFP0032

Commissioner
Municipal Council
Jaisalmer

Raj.Samwad/C/25/11606

कार्यालय नगर परिषद्, जैसलमेर (राज.) 345001

क्रमांक/स्टोर/2025–26/325 दिनांक :–03.10.2025

निविदा सूचना स्टोर/2025–26/06
NIB Code-DLB2526A6716

नगर परिषद जैसलमेर की ओर से आपूर्तिकर्ता फर्म व नगर परिषद जैसलमेर में उपयुक्त श्रैणी में पंजीकृत संवेदकों से विभिन्न आपूर्ति कार्यों हेतु ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती हैं। संविदा से संबंधित कार्यों की विस्तृत जानकारी निविदा की शर्तें आदि वेबसाईट http://sppp.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती हैं। उक्त कार्यों के यू.बी.एन. नं. **DLB2526SLOB20496** हैं।

आयुक्त
नगर परिषद् जैसलमेर

राज.संवाद/सी/25/11605

कार्यालय नगर पालिका मण्डल बांदीकुई (दौसा)
Email: bandikui.jaipur@gmail.com

क्रमांक :– न.पा.बा./2025/2848 दिनांक :– 03.10.2025

BID सूचना

समस्त पंजीकृत संवेदक/सामाजिक संस्थाओ को सूचित किया जाता है कि नगर पालिका बांदीकुई **NIB Code. DLB2526A6731** तथा **UBN No. DLB2526GSRC20523, DLB2526GSRC20525, DLB2526SSRC20526, DLB2526SSRC20527, DLB2526SSRC20529** कार्य करवाना चाहती है अतः इच्छुक व्यक्ति नियत दिनांक 10.10.2025 को प्रात 11:00 बजे तक अपनी दर ऑफलाईन प्रस्तुत कर सकते है। निविदा आफलाईन बेबसाईट http://sppp..goverment.gov.in पर देखी जा सकती है । निविंदा से संबंधित शर्ते उपरोक्त वेबसाईट पर देखी जा सकती है ।

अधिशाषी अधिकारी
नगर पालिका बांदीकुई

राज.संवाद/सी/25/11537

राजस्थान सरकार
कार्यालय खनि अभियन्ता, खान एवं भू-विज्ञान विभाग, करौली

क्रमांक-खअ/करौ/बजरी अवैध/2025/ दिनांक-

प्रेस विज्ञप्ति

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि कार्यालय द्वारा अवैध खनन/निर्गमन/भण्डारण की चैकिंग के दौरान जब्त की गयी खनिज बजरी की नीलामी दिनांक 27.10.2025 को प्रातः 11.00 बजे कार्यालय खनि अभियन्ता, करौली परिसर में की जावेगी। इच्छुक बोलीदाता नीलामी से पूर्व बयाना राशि एवं प्रतिभूति राशि का डी.डी. खनि अभियन्ता, करौली के पक्ष में कार्यालय में जमा कराकर बोली में भाग ले सकेंगे।

क्र. सं.	सामग्री का नाम	भण्डारण स्थल	अनुमानित मात्रा	अनुमानित लागत मूल्य	बयाना राशि	अमानता राशि
1	खनिज बजरी	राजस्व ग्राम हाडौती (कांटडा) तहसील सपोटरा	2790 टन	18,13,500/-	36270/-	90675/-

नोट-नीलामी से संबंधित शर्तो एवं खनिज बजरी के स्टॉक (भण्डारण) की सूची का अवलोकन विभागीय वेबसाईट mines.rajasthan.gov.in पर जाकर किया जा सकता है एवं इस संबंध में जानकारी कार्यालय दिवस में कार्यालय से भी प्राप्त की जा सकती है।

(डी.एस. मीना)
खनि अभियन्ता, करौली

DIPR/C/14532/2025

कार्यालय नगर पालिका मण्डल नवलगढ़ (झुन्झुनूं)

क्रमांक : न.पा.न./2025–26/भूमि/3008 दिनांक : 06.10.2025

ई–निविदा सूचना संख्या 05/2025–26

कुल कार्यो की संख्या	01
निविदा की कुल लागत (लाखों में)	22.40 लाख
कुल धरोहर राशि 02 प्रतिशत् (रुपये में)	44800/–रूपयें
कुल धरोहर राशि ½ प्रतिशत् (रुपये में)	11200/–रूपयें
निविदा डानलोड करने की तिथि	07.10.2025 को प्रातः 10:00 बजे से दिनांकः 15.10.2025 सायः 6:00 बजे तक
ऑनलाईन निविदा जमा करने की तिथि	07.10.2025 को प्रातः 10:00 बजे से दिनांकः 15.10.2025 सायः 6:00 बजे तक
ऑनलाईन निविदा खोलने की तिथि	16.10.2025 को प्रातः 10.00 बजे
निविदा कॉपी/मूल दस्तावेज जमा कराने की तिथि	

निविदा सूचना एवं निविदा सूची इंटरनेटर साईट http://sppp.raj.nic.in बेबसाईट पर **NIB Code DLB2526A6826** के **UBN No.** से **DLB2526SLOB20760** तक पर भी देखी जा सकती है तथा शेष शर्ते RPPT एक्ट 2013 के अनुसार होगी।

अध्यक्ष
नगरपालिका नवलगढ़

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका नवलगढ़

राज.संवाद/सी/25/11547

कोलायत क्षेत्र में बारिश के साथ ओले गिरे, फसलों को नुकसान पहुंचा

गांवों में बारिश और ओलों से मूंग, मोठ, कपास, ग्वार और तिल की फसल को भारी नुकसान हुआ

- बीठनोक, भोलासर, मौखां, हाडलां, मढ, कोटड़ी, माधोगढ़ और सांखला सहित कई गांवों में फसलें पूरी तरह से बर्बाद हो गई

बीकानेर, (निसं)। यहां सुबह से देर रात तक हुई बारिश ने किसानों की चिंता बढ़ा दी। वहीं कोलायत क्षेत्र में करीब आधे घंटे तक ओलावृष्टि हुई, जिससे गांवों में बारिश और ओलों से मूंग, मोठ, कपास, ग्वार और तिल की फसल को भारी नुकसान हुआ है।

कोलायत क्षेत्र में शाम करीब आधे घंटे तक ओलावृष्टि हुई। चने के आकार के ओलों ने खेतों में खड़ी फसलों को तहस-नहस कर दिया। बीठनोक, भोलासर, मौखां, हाडलां, मढ, कोटड़ी, माधोगढ़ और सांखला सहित कई गांवों में फसलें पूरी तरह से बर्बाद हो गई। किसानों का कहना है कि खेतों में पकी हुई मोठ, मूंग, ग्वार, कपास और तिल की फसल चौपट हो गई, जिससे भारी आर्थिक नुकसान होना तय है। लूणकरनसर से श्रीडूंगरगढ़ और नोखा से कोलायत तक कई गांवों में फसलें प्रभावित हुई हैं। बारिश और ओलावृष्टि से हुए नुकसान को देखते हुए किसान अब प्रशासन से फसलों की गिरदावरी कराने और बीमा कंपनी से मुआवजे की मांग कर रहे हैं। किसानों ने कहा कि इस बार की बरसात ने मेहनत पर पानी फेर दिया।

बीकानेर में मौसम सुहाना हो गया है। दो दिन की बारिश के बाद मंगलवार को धूप खिली है लेकिन तल्खी कुछ कम है। अब तक आसमान में बादलों की आवाजाही बनी हुई है, जिससे पारे में बढ़ोतरी का ग्राफ कुछ कम है। पिछले चौबीस घंटे में बीकानेर में अधिकतम तापमान महज 29.3 और न्यूनतम 20.8 डिग्री सेल्सियस ही रहा। आज इसमें कुछ बढ़ोतरी हो सकती है।

कार्यालय जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर

क्रमांक :- जो.वि.प्रा./जोधपुर/जोन पूर्व/राजकाज 18124410 दिनांक :- 03/10/2025

ई-निविदा सूचना संख्या :- पूर्व/12/2025-26

जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर की ओर से प्राधिकरण एवं राजकीय विभाग मे नियमानुसार उपयुक्त श्रेणी मे पंजीकृत ठेकेदार से सिविल कार्य हेतु मुहरबंद एवं ई निविदाएं आमंत्रित की जाती है। इन कार्यो की अनुमानित लागत, निविदा बेचे जाने तथा प्राप्त करने की दिनांक, निविदा, शर्ते आदि सम्पूर्ण विवरण वेबसाईट **www.jodhpurjda.org, www.eproc.rajasthan.gov.in** एवं **https://sppp.rajasthan.gov.in** पर देखी जा सकती है।

NIB CODE – JOD2526A0155, UBN No. – JOD2526WSOB00328, 329, 330, 331

राज.संवाद/सी/25/11557 अधिशाषी अभियंता (पूर्व)

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड निवाई

क्रमांक-3262-77 दिनांक-25.09.2025

निविदा सूचना संख्या- 23/2025-26 खण्ड निवाई संशोधन आदेश

इस कार्यालय द्वारा आमन्त्रित निविदा सूचना क्रमांक 3070-79 दिनांक 16.09.2025 जिसके ऑनलाईन निविदा संख्या 23/2025-26 के क्र.सं. 1 से 6 पर इन्द्राज अनुमानित लागत निर्माण कार्यो की राशि 219.45 लाख रूपये के स्थान पर राशि रू. 396.55 लाख पढ़ा जावें।

नोट-निविदा की शेष शर्तें यथावत रहेगी।

DIPR RO NO.- 13997, Release Date- 24.09.2025

(गौतम मीणा) अधिशाषी अभियन्ता
सा.नि.वि. खण्ड निवाई
मो.नं. 7296982833

DIPR/C/14554/2025

कार्यालय नगरपरिषद, राजसमन्द
जिला परिषद रोड़, राजनगर

टेलिफोन नं. 02952–220034, फेक्स नं. 02952–221233, ई–मेल rajsamandnagarpalika@gmail.com
क्रमांक : एफ( )नपरा/इंजी/ई निविदा/19/2025–26/5230 दिनांक :– 01.10.2025

ई–निविदा सूचना संख्या 19/2025–26

नगर परिषद राजसमन्द द्वारा नगरीय विकास कर एवं अन्य सर्विस हेतु समस्त विभागों में पंजीकृत सर्विस प्रोवाईडर, संवेदकों, कम्पनी, संगठनों/संस्थानों से ई–प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन तकनीकी व वित्तिय निविदाऐं आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेबसाईट www.eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखी व डाउनलोड़ की जा सकती है।

निविदा क्रार्यक्रम	तिथि व समय
कार्य की संख्या	1
कार्यो की अनुमानित लागत	70.00 लाख
निविदा अपलोड की तिथि	06.10.2025 06:00 PM
निविदा डाउनलोड प्रारम्भ तिथि	07.10.2025 09:00 PM
ऑनलाईन निविदा प्रस्तुत करने की अन्तिम तिथि	16.10.2025 06:00 PM
भौतिक रूप से दस्तावेज जमा करने की तिथि	17.10.2025 01:00 PM
ऑनलाईन निविदा खोलने की तिथि	17.10.2025 04:00 PM
ऑनलाईन निविदा हेतु वेबसाईट	http://eproc.rajasthan.gov.in
दोष निवारण अवधी	नियमानुसार
UBN NO-	DLB2526SLOB20485

राज.संवाद/सी/25/11608

सभापति
नगरपरिषद राजसमन्द

आयुक्त
नगरपरिषद राजसमन्द

सीकर में चार इंच से ज्यादा बारिश, नानी बीहड़ में बना कच्चा बांध टूटा

- नेशनल हाइवे संख्या 52 पर करीब 5 से 6 किलोमीटर तक गंदा पानी आ गया

सीकर, (निसं)। प्रदेश में एक्टिव हुआ मानसून सीकर में मेहरबान रहा। यहां पिछले 24 घंटे में करीब चार इंच से ज्यादा बारिश हुई। रात को करीब 12 बजे बारिश का दौर शुरू हुआ जो सुबह करीब 2-3 बजे तक चला। सुबह भी आसमान में बादल छाए रहे। इसके बाद सीकर में धूप निकली हुई हुई।

सीकर में बीती रात हुई बारिश के बाद नानी बीहड़ में बना गंदे पानी का कच्चा बांध टूट गया। ऐसे में यहां सुंदर नगर में रास्ते की मिट्टी का कटाव होने की वजह से मुख्य सड़क से संपर्क टूट गया। नजदीक से ही गुजरने वाले नेशनल हाइवे संख्या 52 पर करीब 5 से 6 किलोमीटर तक गंदा पानी आ गया। इस गंदे पानी के बीच से ही लोग निकलने को मजबूर रहे। यहां बार-बार जाम भी लगता रहा। हालांकि स्पेरो टीम

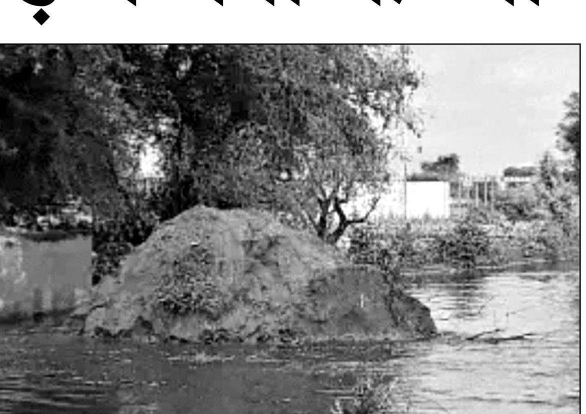

सीकर में हुई बरसात के बाद कई जगह पर जल भराव हो गया।

और ट्रैफिक पुलिस ने ट्रैफिक को दुरुस्त करवाया।

सीकर के कृषि अनुसंधान केंद्र फतेहपुर पर सुबह न्यूनतम तापमान 18.5 डिग्री और अधिकतम तापमान 27.7 डिग्री दर्ज किया गया है। इससे पहले सोमवार का दिन सीजन का सबसे ठंडा दिन रहा था। जिले में न्यूनतम तापमान 19 डिग्री और अधिकतम तापमान 24.5 डिग्री दर्ज किया गया था। न्यूनतम और अधिकतम तापमान में मात्र 5 डिग्री का ही फर्क रहा था। सीकर में देर रात करीब दो घंटे तक बारिश होने के चलते नवलगढ़ रोड पर करीब आधा इंच तक जलभराव हुआ। इसके साथ ही यहां काफी कीचड़ रहा। ऐसे में पैदल चलने वाले लोगों की आवाजाही न के बराबर रही।

जयपुर मौसम केंद्र के मुताबिक आज भी राजस्थान में वेस्टर्न डिस्टरबेंस एक्टिव रहने के चलते बारिश होने के आसार हैं। सीकर में भी आज बारिश का येलो अलर्ट जारी किया गया है। कल से सीकर में बारिश का दौर थम जाएगा। जबकि आठ अक्टूबर से मौसम सामान्य रहने का अनुमान है। ऐसे में यहां पर मौसम साफ रहने के साथ ही तापमान में 3 से 5 डिग्री की गिरावट होगी। तापमान में गिरावट होने के साथ ही सुबह और रात के समय सर्दी का असर बढ़ने लगेगा।

वहीं सीकर ग्रामीण में 72 एमएम, सीकर सिटी में 54, पलसाना में 86, पाटन में 27, दांतारामगढ़ में 39, फतेहपुर में 34, रामगढ़ शेखावाटी में 42, धोद में 83, नीमकाथाना में 39, लोसल में 102, नेछवा 62, श्रीमाधोपुर में 105, रींगस में 94, अजीतगढ़ में 52, खंडेला में 92 एमएम बरसात दर्ज की गई।

कार्यालय ग्राम पंचायत कंचनपुर, पंचायत समिति बाड़ी, जिला धौलपुर

क्रमांक- प.स.व./ई-निविदा/2025/170 दिनांक-29.10.2025

ई-निविदा सूचना 02/2025-2026

इस कार्यालय द्वारा स्वच्छता एवं कचरा प्रबन्धन हेतु पंजीकृत फर्मो से ऑनलाईन ई-निविदा दिनांक 10.10.2025 दोपहर 12 बजे तक आमंत्रित की जाती है। जिसका विस्तृत विवरण www.sppp.rajasthan.gov.in एवं www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखा व डाउनलोड किया जा सकता है।

NIB NO. ZDH2526A0369, UBN NO. ZDH2526SLOB00476

सरपंच
ग्राम पंचायत कंचनपुर
पंचायत समिति, बाड़ी

ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत कंचनपुर
पंचायत समिति, बाड़ी, राज.

DIPR/C/14540/2025

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग खण्ड कोटपूतली

क्रमांक-1785-93 दिनांक-23.09.2025

ई-निविदा सूचना संख्या 11/2025-26 प्रकाशन बाबत

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से सिविल कार्य (तीन) अनुमानित राशि रू. 321.55 लाख (मय डीएलपी अवधि) के लिए निर्धारित प्रपत्र में दिनांक 09.10.2025 सायं 06.00 बजे तक ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। संबंधित पूर्ण विवरण वेब साईट http://dipr.rajasthan.gov.in/ tenders asp, http://eproc.rajasthan.gov.in एवं http://sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है।

UBN NO. 1. PWD2526WSOB13147, 2. PWD2526WSOB13148, 3. PWD2526WSOB13150

(वी.एस. शेखावत) अधिशाषी अभियन्ता
सा.नि.वि. खण्ड कोटपूतली

DIPR/C/14507/2025

राजस्थान ऊर्जा विकास एवं आईटी सर्विसेज लिमिटेड
(राजस्थान सरकार का उपक्रम), पंजि.कार्या. : विद्युत भवन, ज्योति नगर, जयपुर - 302005

निविदा आमंत्रण विज्ञप्ति

रा. ऊ. वि. एवं आईटी सर्विसेस लि. जयपुर द्वारा एन. आई. टी संख्या HR 07/2025-26 में यथा उल्लेखित नियमों/शर्तो/तकनीकी विशिष्टता के अनुसार ईछुक निविदा दाता/फ़र्म/एजन्सी से हायरिंग ऑफ मैनपावर सर्विस हेतु अलग अलग मोहरबंद लिफाफो मे निविदा आमंत्रित की जाती है। अधिक जानकारी के लिए कृपया **www.sppp.rajasthan.gov.in** तथा **https://eproc.rajasthan.gov.in** की वैबसाइट देखें। **UBN-RUV2526SLOB00010**

राज.संवाद/सी/25/11553 आरयूवीआईटीएल/पीआर- 108 (2025) उप निदेशक (मा. स.)

बिजली शिकायतों के लिए टोल फ्री नम्बर 1800 180 6507

जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड
कॉरपोरेट आइडेन्टीफिकेशन नम्बर (सीन)-यू40109आरजे2000एसजीसी016483
पंजीकृत कार्यालय : न्यू पॉवर हाउस, जोधपुर-342003, फोन न. : 0291-2742264
ईमेल :- seciviljdvvnl@gmail.com, वेबसाईट :- http://energy.rajasthan.gov.in/jdvvnl

ई-निविदा सख्या 14/2025-26

केन्द्र/राज्य सरकार के विभागों में 'ए' व 'एए' श्रेणी तथा जो.वि.वि.नि.लि. के उपयुक्त श्रेणी में पंजीकृत, अनुभवी, वस्तु एवं सेवाकर (GST) विभाग से पंजीकृत निविदाकारों से अधिशाषी अभियन्ता {सिविल} जोधपुर डिस्कॉम, जोधपुर 9413359193/बाड़मेर; 9413359455/बीकानेर; 9413359744 के अधीन विभिन्न सिविल निर्माण कार्यो के लिए ई–प्रोक्यूरमेंट प्रक्रिया से ऑनलाईन निविदाएँ आमंत्रित की जाती है। कार्य का विवरण, अनुमानित लागत, निविदा शुल्क, प्रकिया शुल्क, अमानत राशि, निविदा खोलने की तिथि व सामान्य अनुबन्ध की शर्ते आदि समस्त विवरण, वेबसाईट **http://energy.rajasthan.gov.in/jdvvnl** एवं **http://sppp.raj.gov.in** व **http://eproc.rajasthan.gov.in** पर उपलब्ध है। भविष्य में संशोधान/अवधि विस्तार, यदि कोई हो तो, उसकी सूचना **http://energy.rajasthan.gov.in/jdvvnl** एवं **http://sppp.raj.gov.in, http://eproc.rajasthan.gov.in** पर प्रकाशित की जावेगी।

JVV2526WSOB00588, JVV2526WSOB00558, JVV2526WSOB00572, JVV2526WSOB00581, JVV2526WSOB00589, JVV2526WSOB00559, JVV2526WSOB00573, JVV2526WSOB00583, JVV2526WSOB00590, JVV2526WSOB00538, JVV2526WSOB00583, JVV2526WSOB00560, JVV2526WSOB00591, JVV2526WSOB00537, JVV2526WSOB00574, JVV2526WSOB00561, JVV2526WSOB00592, JVV2526WSOB00540, JVV2526WSOB00575, JVV2526WSOB00562, JVV2526WSOB00590, JVV2526WSOB00539, JVV2526WSOB00576, JVV2526WSOB00563, JVV2526WSOB00593, JVV2526WSOB00541, JVV2526WSOB00577, JVV2526WSOB00564, JVV2526WSOB00594, JVV2526WSOB00533, JVV2526WSOB00578, JVV2526WSOB00565, JVV2526WSOB00595, JVV2526WSOB00532, JVV2526WSOB00579, JVV2526WSOB00566, JVV2526WSOB00596, JVV2526WSOB00535, JVV2526WSOB00572, JVV2526WSOB00567, JVV2526WSOB00569, JVV2526WSOB00534, JVV2526WSOB00580, JVV2526WSOB00568, JVV2526WSOB00570, JVV2526WSOB00571, JVV2526WSOB00556, JVV2526WSOB00555

राज.संवाद/सी/25/11564 अधीक्षण अभियंता {सिविल}

बिजली संबंधी शिकायतों के लिए टोल फ्री नम्बर 1800 180 6045

इकोलॉजिकल जोन में धड़ल्ले से हो रहा अवैध निर्माण, जे.डी.ए. प्रशासन मौन!

आगरा रोड पर जामडोली क्षेत्र में कृषि भूमि पर काटी जा रही है अवैध कॉलोनियां

जयपुर (कासं)। राजधानी में आगरा रोड स्थित इकोलॉजिकल जोन में इन दिनों अवैध कॉलोनियां काटकर उनमें धडल्ले से अवैध निर्माण किए जा रहे है। इसके बावजूद जे.डी.ए. की प्रवर्तन विंग यहां कार्रवाई के बजाय चुप्पी साधे बैठी है।

बताया जा रहा है कि जामडोली और उसके आसपास के क्षेत्र में कृषि भूमि का रूपांतरण करवाये बिना ही गृह निर्माण सहकारी समितियों के बैकडेट

- **गृह निर्माण सहकारी सोसायटियों के बैक डेट के पट्टे देकर लोगों को ठग रहे हैं भू-माफिया और बिल्डर**

आगरा रोड पर जामडोली चौराहे स्थित विरासत विहार में अवैध निर्माण कार्य जोरों पर है।

के पट्टों की आड़ में धल्ल्ले से कॉलोनियां बसाने का खेल चल रहा है। यहां भू-माफियाओं और बिल्डरों के गठजोड़ के कारण रातोंरात ही अवैध कॉलोनियां बस रही है, परंतु जेडीए प्रशासन तमाम शिकायतों के बावजूद भी यहां चुप्पी साधे बैठा है।

सूत्रों ने बताया कि आगरा रोड पर जामडोली चौराहे पर केशव विद्यापीठ के नजदीक 1 बीघा ज़मीन पर अवैध कॉलोनी "विरासत विहार" में भी पुनः अवैध निर्माण जोरों पर है। यहां जेडीए की टीम ने करीब 4 महीने पहले अवैध निर्माण कार्य रुकवाया था। इसके बाद करीब 3 महीने तक सब कुछ काम बंद रहा, परंतु नवरात्रि और दशहरे की छुट्टियों की आड़ में अब यहाँ तेज़ी से निर्माण कार्य पुनः शुरू हो गए।

भू-माफिया और बिल्डर लोगों को सस्ते मकान देने की आड़ में यहां तेजी से मकान बनाने में जुटे है। लोगों से एडवांस बुकिंग राशि लेकर दीपावली पर मकान का पजेशन सौंपने के दावे किए जा रहे है। स्थानीय लोगों का कहना है कि सरकार द्वारा ब्लैक लिस्टेड की गई सोसायटियों से फ़र्ज़ी बैक डेट के पट्टे दिए जा रहे है। इसके बावजूद जेडीए का ज़ोन 10 प्रशासन यहाँ सख़्ती से कार्रवाई नहीं कर रहा।

खाद्य तेल और मिठाइयों के नमूने लिए

जयपुर। प्रदेश में चलाए जा रहे शुद्ध आहार मिलावट पर वार अभियान के तहत दीपावली के त्यौहार पर आमजन को शुद्ध एवं सुरक्षित खाद्य सामग्री उपलब्ध करवाने के क्रम में सीएमएचओ जयपुर द्वितीय की टीम ने जोबनेर कस्बे के मुख्य बाजार में एक दर्जन दुकानों का निरीक्षण कर पांच नमूने खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम के अंतर्गत लिए।

सीएमएचओ जयपुर द्वितीय डॉक्टर मनीष मित्तल ने बताया कि टीम द्वारा आनंद ट्रेडिंग से बीकानेरी गोल्ड ब्रांड का मूंगफली तेल का सैंपल लिया। बस स्टैंड स्थित मैसर्स हरिओम जोधाणा मिष्ठान भंडार से मोतीचूर लड्डू, मैसर्स जोबनेर स्वीट होम से बर्फी मावा मिठाई,नया बाजार से मैसर्स पन्ना मिष्ठान भंडार से मिश्री मावा, मैसर्स शिव शक्ति मिष्ठान भंडार से मावा मिठाई के सैंपल लिए जिनकी जांच रिपोर्ट प्राप्त होने पर नियमानुसार कार्यवाही की जाएगी। मिठाई विक्रेताओं को मिठाइयां तैयार करने में शुद्ध खाद्य सामग्री उपयोग में लेने, खाद्य सामग्री को ढक कर रखने,सफाई व्यवस्था दुरुस्त करने के निर्देश दिए गए। टीम में खाद्य सुरक्षा अधिकारी सुशील चोटवानी, विनोद थारवान एवं राजेश नागर शामिल रहे।

खाली जमीन पर कब्जा करके पट्टे जारी करवाकर बेचने वाले दो बदमाश दबोचे

जामडोली पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके पास से फर्जीवाडे की रकम में से 4 लाख रु. बरामद किए

जयपुर। जामडोली थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए अवैध रूप से खाली जमीन पर कब्जा कर साजिश रचकर पट्टे जारी कर बेचने वाले दो आरोपियों को पकड़ा है। पुलिस ने आरोपियों के पास से बेचे गए भूखंडों की एवज में प्राप्त की गई राशि में से चार लाख रुपये भी बरामद किए गए है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर पूर्व संजीव नैन ने बताया कि जामडोली थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए अवैध रूप से खाली जमीन पर कब्जा कर साजिश रच कर पट्टे जारी करने बेचने वाले भगवान सहाय निठारवाल निवासी भांकरोटा जयपुर और नन्छु राम मीणा निवासी जामडोली जयपुर को गिरफ्तार किया है।

पुलिस जांच में सामने आया कि अपराध में लिप्त आरोपित लम्बे समय से खाली पडी जमीन की रेकी कर एवं उस जमीन के मालिक का पता कर एवं उसके नाम से फर्जी बेचान संबंधी दस्तावेज तैयार कर उस पर फर्जी तरीके से सोसायटी के फर्जी पट्टे, साईट प्लॉन व रसीद तैयार कर लोगों को बेच कर उनसे राशि हडपने है।

जानकारी के अनुसार बन्धु गृह निर्माण सहकारी समिति पर ज्वाइंट रजिस्ट्रार को ऑपरेटिव, जयपुर प्रशासक नियुक्त हो गया था तथा प्रबन्धक मंडल भंग कर समिति का कार्यभार उसी दिन संयुक्त पंजीयक सहकारी समितियां जयपुर ग्रहण कर लिया था।

आरोपित भगवान सहाय निठारवाल, नच्छूराम मीणा, बाल सिंह, नाजिम लाल मीणा आदि ने फर्जी पट्टे बनाकर 2022 के बाद लोगों के बेच दिये। ये सभी पट्टे 1997-1998 के थे। ये सभी पट्टे 1997-1998 के थे। जिस पर पट्टाधारकों ने आपत्ति जताई तो उन्होंने वर्तमान अवधि के पट्टे देने हेतु उनसे असल पट्टे प्राप्त कर लिये। उन्हें पुनः ना तो दूसरे पट्टे दिए और ना ही पैसे लौटाये। आरोपित भगवान सहाय निठारवाल और नच्छूराम, नाजिम लाल ने वर्ष 2022 में सहमति पत्र बनाकर 28-28 हजार वर्ग गज भूमि आपस में बांटकर 508 फर्जी पट्टे बेच दिये। आरोपियों से पूछताछ की जा रही है, जिनसे पट्टो व फर्जी दस्तावेजों की बरामदगी किया जाना शेष है।

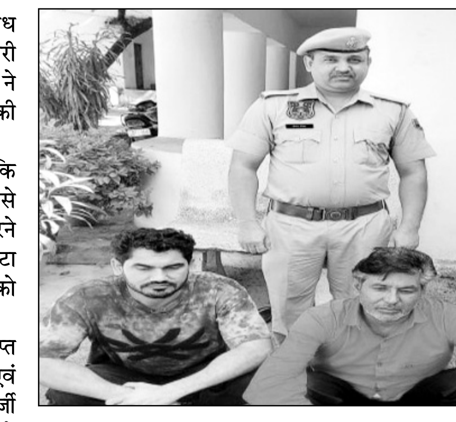

गिरफ्तार आरोपी भगवान सहाय और नन्छुराम मीणा

लंदन में देवनानी का अभिनंदन

जयपुर। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने लंदन स्थित भारतीय उच्चायोग में प्रवासी भारतीयों से मुलाकात की। प्रवासी समुदाय ने उनका उत्साहपूर्वक स्वागत किया। देवनानी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत अभूतपूर्व प्रगति कर रहा है और वैश्विक मंच पर अपनी निर्णायक भूमिका निभा रहा है। उन्होंने डिजिटल इंडिया, आत्मनिर्भर भारत और जीएसटी जैसे सुधारों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि भारत-ब्रिटेन के बीच से दोनों देशों के संबंध और मजबूत होंगे तथा व्यापार, निवेश-रोजगार के नए अवसर खुलेंगे। देवनानी ने बताया कि 10 दिसंबर को राजस्थान में प्रवासी दिवस मनाया जाएगा और प्रवासी भारतीयों से इसमें सहभागिता का आग्रह किया। समारोह में राज्यसभा उपसभापति हरिवंश, अन्य राज्यों के विधानसभा अध्यक्ष, ब्रिटिश सांसद और कई गणमान्य अतिथि मौजूद रहे।

एस.के.आई.टी. में बैटरी मैनेजमेंट सिस्टम पर पांच दिवसीय वर्कशॉप का आगाज

जयपुर (कासं)। स्वामी केशवानंद इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, मैनेजमेंट एंड ग्रामोथन (एसकेआईटी) जयपुर के इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग के आईई(आई) छात्र अध्याय द्वारा "ड्राइविंग द फ्यूचर: पावर, मोबिलिटी एंड इंटेलिजेंस (बैटरी मैनेजमेंट सिस्टम)" विषय पर पाँच दिवसीय हैंड्स-ऑन वर्कशॉप का शुभारंभ हुआ।

कार्यशाला का उद्घाटन डॉ. अंकुश टंडन, विभागाध्यक्ष (इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग) द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन संबोधन में डॉ. टंडन ने इलेक्ट्रिक वाहनों तथा सतत ऊर्जा समाधान के विकास में बैटरी मैनेजमेंट सिस्टम की बढ़ती भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने विद्यार्थियों से सक्रिय भागीदारी करने और आधुनिक ऊर्जा प्रौद्योगिकियों की व्यवहारिक समझ विकसित करने का आव्हान किया। कार्यशाला के संयोजक जितेन्द्र सिंह, जिनेन्द्र राहुल तथा डॉ. सुमन शर्मा, एवं सह-संयोजक दिनेश कुमार ने आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सह-संयोजक दिनेश कुमार ने विद्यार्थियों को बैटरी मैनेजमेंट सिस्टम के संतुलन और तीव्र चार्जिंग की प्रक्रिया के महत्व को समझाया।

उन्होंने बताया कि कैसे उचित बैलेंसिंग बैटरी की कार्यक्षमता और जीवनकाल को बढ़ाती है। साथ ही, उन्होंने प्रायोगिक प्रदर्शन के माध्यम से विद्यार्थियों को बैटरी प्रबंधन की वास्तविक कार्यप्रणाली से अवगत कराया। उद्घाटन सत्र के साथ ही कार्यशाला की शुरुआत विभिन्न प्रायोगिक गतिविधियों, डेमो एवं प्रशिक्षण सत्रों से हुई, जिनमें बैटरी पैक डिज़ाइन, चार्ज-डिस्चार्ज नियंत्रण तथा स्मार्ट ऊर्जा प्रबंधन पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया। विभाग के अनेक विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

महिला विश्व कप क्रिकेट में कमेंट्री करेंगे प्रभात गोस्वामी

जयपुर (कासं)। भारत एवं श्रीलंका के तत्वावधान में आयोजित महिला क्रिकेट विश्व कप में जयपुर के कमेंटेटर प्रभात गोस्वामी आकाशवाणी से हिंदी में आंखों देखा हाल सुनाएंगे। गोस्वामी 9 अक्टूबर को आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम में आयोजित भारत - दक्षिण अफ्रीका के मैच में कमेंट्री करेंगे। उनके साथ अंग्रेज़ी में चेन्नई के आर. विश्वनाथ होंगे। गोस्वामी 1980 से आकाशवाणी से राष्ट्रीय- अंतरराष्ट्रीय स्तर के क्रिकेट मैचों में कमेंट्री कर रहे हैं। रणजी ट्रॉफी, दिलीप ट्रॉफी,ईरानी ट्रॉफी, देवधर एवं विल्स ट्रॉफी सहित अंतरराष्ट्रीय स्तर पर टैस्ट मैच,एक दिवसीय एवं टी -20 मैचों में आकाशवाणी से कमेंट्री कर चुके हैं। इसके साथ ही हॉकी, फुटबॉल एवं कबड्डी की राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भी कमेंट्री कर चुके हैं। महिला विश्व कप की कमेंट्री का प्रसारण आकाशवाणी से राष्ट्रीय स्तर पर होगा।

सार-समाचार

प्रदीप कपूर निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित

जयपुर। पूर्व अति.मुख्य नगर नियोजक एवं रेरा के पूर्व रजिस्ट्रार प्रदीप कपूर को हाल ही में सम्पन्न हुए इंस्टीट्यूट ऑफ टाउन प्लानर्स इंडिया नई दिल्ली के राष्ट्रीय काउन्सिल के चुनाव में निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया है। राजस्थान से लगभग 50 वर्ष के बाद आई.टी.पी. आई के अध्यक्ष पद पर प्रदीप कपूर निर्विरोध निर्वाचित हुये है। आई.टी.पी.आई . नगर नियोजन मे योग्यता रखने वाले नगर नियोजकों की राष्ट्रीय संस्था है, जिसके देशभर मे 9500 से अधिक सदस्य है। राजस्थान से इस संस्था के लिये अध्यक्ष बनने वाले कपूर दूसरे व्यक्ति है। इनका कार्यकाल सितम्वर 2027 तक का होगा। प्रदीप कपूर, देश के नगर नियोजकों में उनके महासचिव के रुप मे लगभग 20 वर्षो मे किये गये कार्यो के कारण अति लोकप्रिय है।

राजू मंगोड़ीवाला सूरत जाएंगे

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के सूरत प्रवास पर राजस्थान फाउंडेशन के बैनर में आयोजित प्रवासी व व्यापारिक तथा सामाजिक संगठनों की बैठक में भाग लेने हेतु भाजपा व्यावसायिक प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक व जयपुर ज्वैलर एसोसिएशन के उपाध्यक्ष वरिष्ठ समाजसेवी राजू मंगोड़ीवाला सूरत जाएंगे। राजस्थान फाउंडेशन द्वारा आमंत्रित कर भाजपा प्रवासी प्रकोष्ठ राजस्थान के पूर्व प्रदेश संयोजक राजू मंगोडीवाला सूरत में रह रहे राजस्थानियों से संवाद कर एकजुटता से रहने व निवेश हेतु प्रेरित करेंगे। उल्लेखनीय है कि प्रवासी प्रकोष्ठ मे रहकर कैट के प्रदेश अध्यक्ष राजू मंगोडीवाला ने देश विदेश में संगठन व भाजपा सरकार के कार्यक्रमों में अनूठी भागीदारी निभाई है। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की सूरत यात्रा से राजस्थान प्रवासियों में भारी उत्साह है और मुख्यमंत्री के आगमन पर स्वागत सत्कार के लिये सूरत निवासी राजस्थानी इंतजार कर रहे है।

"समावेशी गरबा उत्सव" संपन्न

जयपुर। रोटरी क्लब, बापू नगर एवं कला मंज़र सोसाइटी द्वारा हैंड्स टूगेदर अभियान के अंतर्गत सोमवार को श्री निर्मल विवेक स्पेशल स्कूल में समावेशी गरबा उत्सव - 2025 का भव्य आयोजन किया गया। गरबे का शुभारंभ पूर्णतः पारम्परिक ढंग से की गई और दुर्गा माता की आरती के साथ सबसे छोटे बच्चों से दीप प्रज्वलन करवाया गया। रोटरी क्लब, बापू नगर की अध्यक्ष मीता माथुर ने बताया कि इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में सांसद मंजू शर्मा, विशिष्ट अतिथि ग्रेटर महापौर डॉ. सौम्या गुर्जर आमंत्रित थे, किंतु एस. एम.एस अस्पताल में हुये दुखद अग्निकांड के कारण आयोजन में उपस्थित नही हो सके। विशिष्ट अतिथि के रूप में मोना शर्मा (निदेशक, वसुधा जन विकास संस्थान) आयोजन में उपस्थिति रहीं। श्रीनिर्मल विवेक स्कूल की मैनेजमेंट कमेटी से श्री वी.के.सिंघवी भी आयोजन में शामिल रहे। हैंड्स टूगेदर अभियान की फाउंडर मीनाक्षी माथुर ने बताया की इस कार्यक्रम में विशेष बच्चों एवं सामान्य बच्चों ने एक साथ भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य समाज में समावेशिता की भावना को प्रोत्साहित करना तथा दिव्यांगता के प्रति सकारात्मक व वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना है। गरबा में भाग लेने वाले स्कूलों के प्रिंसिपल्स को सम्मानित किया गया। आयोजन की सहयोगी संस्थाओं में नन्हे कदम सोसाइटी, अहान फाउंडेशन, शुभचिंतक सहयोगी फाउंडेशन, वसुधा जन विकास संस्थान, टेरा ज्वेल्स, करनामा जयपुर, कोनार्क कोचिंग सेंटर व नीरज माथुर के नाम शामिल हैं। एस.एस. जैन सुबोध पी.जी. (स्वायत्त) कॉलेज, व श्री गोपाल कृष्ण सेवा समिति के युवाओं ने स्वयंसेवकों के रूप में भागीदारी निभाई। अंडरप्रिविलेज्ड बच्चों के स्कूल के में स्कूलम ने भाग लिया।

'सीमित संसाधन सफलता में बाधा नहीं'

जयपुर। अल्का गौड़ फाउन्डेशन की संस्थापक डॉ. अल्का गौड़ ने कहा कि सीमित संसाधन कभी सफलता में बाधा नहीं बनते, आत्मविश्वास और निरंतरता ही असली पूंजी है। डॉ. गौड़ आईडीएफसी बैंक, एंड पावर्टी और श्वेत धारा के सहयोग से आयोजित ग्राम सखी वार्षिक कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि बोल रही थीं। कार्यक्रम में सीकर, दौसा, बोराज और रेनवाल की लगभग 200 महिला कृषक उपस्थित रहीं। उन्होंने महिलाओं को वित्तीय प्रबंधन, डिजिटल टूल्स और कम ऊर्जा में अधिक उत्पादकता के उपायों की जानकारी दी। ग्राम सखी जैसी पहल ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाकर समाज में सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में अग्रसर कर रही हैं।

चिकित्सा मंत्री के इस्तीफे की मांग

जयपुर। एसएमएस हॉस्पिटल में हुई दुर्भाग्यपूर्ण आगजनी में सरकार की लापरवाही के विरोध में राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी अभाव अभियोग प्रकोष्ठ की प्रदेशाध्यक्ष योगिता पंकज काकू शर्मा के नेतृत्व में जोरदार विरोध प्रदर्शन किया गया। प्रकोष्ठ के पदाधिकारियों-कार्यकर्ताओं ने चिकित्सा मंत्री गजेंद्र सिंह खींवसर की शव यात्रा निकालकर उनसे इस्तीफा मांगा।

सुमंगल-दीपावली मेले में पहुंचे मंत्री मदन दिलावर और ओटाराम देवासी

जनप्रतिनिधियों ने स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा बनाए गए उत्पादों को सराहा

जयपुर। ग्रामीण आजीविका विकास परिषद् (राजीविका) द्वारा आयोजित सुमंगल दीपावली मेला - 2025 में मंगवार को स्कूल शिक्षा, पंचायती राज एवं संस्कृत शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने मेले का भ्रमण किया। उन्होंने स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं द्वारा बनाए गए विविध उत्पादों को बारीकी से देखा और उनके कार्य की सराहना की। इस अवसर पर उन्होंने स्थानीय उत्पादों की खरीदारी की तथा कहा कि इन उत्पादों में ग्रामीण परंपरा, गुणवत्ता और नवाचार का उत्कृष्ट मेल दिखाई देता है। दिलावर ने राजीविका के फूड कोर्ट का भी भ्रमण किया और पारंपरिक राजस्थानी व्यंजनों का स्वाद चखा।

उन्होंने कहा कि मेले में प्रस्तुत खाद्य सामग्री न केवल स्वाद में विशिष्ट है, बल्कि यह ग्रामीण महिलाओं के पाक कौशल और उद्यिमता का सशक्त उदाहरण भी है।

राजीविका द्वारा आयोजित सुमंगल दीपावली मेले में मंगलवार को 2025 शिक्षा मंत्री मदन दिलावर और पंचायती राज राज्य मंत्री ओटाराम देवासी ने स्टॉल्स का अवलोकन किया।

मेले में ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज राज्य मंत्री ओटाराम देवासी ने भी शिरकत की। उन्होंने मेले के विभिन्न स्टॉलों का अवलोकन कर स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा बनाए गए उत्पादों की प्रशंसा की। इस दौरान उन्होंने कहा कि यह मेला ग्रामीण महिलाओं को विपणन मंच प्रदान कर आत्मनिर्भरता की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

मेले में प्रतिदिन बड़ी संख्या में आगंतुक पहुँच रहे हैं और ग्रामीण उत्पादों के प्रति उत्साह व विश्वास का वातावरण देखने को मिल रहा है। राजीविका द्वारा आयोजित यह मेला 1 से 12 अक्टूबर 2025 तक इंदिरा गांधी पंचायती राज संस्थान, जवाहरलाल नेहरू मार्ग, जयपुर में प्रतिदिन प्रातः 10 बजे से रात्रि 9 बजे तक आयोजित किया जा रहा है। मेले में राजस्थान के विभिन्न जिलों से आए हस्तनिर्मित उत्पाद, पारंपरिक परिधान, हस्तशिल्प और प्रामाणिक व्यंजन विशेष आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं।

जेल में कैदियों को नशे की दवाइयां पहुंचाने वाले पकड़े

जयपुर। बिंदायका थाना पुलिस ने नशे के सौदागरों के खिलाफ चलाए जा रहे ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत एक कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस जांच में सामने आया कि दोनों आरोपित जेल में बंदियों को नशे की दवाइयां सप्लाई करते थे। इनमें से एक अस्पताल का नर्सिंग ऑफिसर और दूसरा सजायाफ्ता बंदी है। दोनों आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

जयपुर (पश्चिम) डीसीपी हनुमान प्रसाद ने बताया कि बिंदायका थाना पुलिस ने नशे के सौदागरों के खिलाफ चलाए जा रहे ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत एक कार्रवाई करते हुए जेल में बंदियों को नशे की दवाइयां सप्लाई करने वाले गोगराज गढ़वाल निवासी गोविंदगढ़ जिला जयपुर हाल केंद्रीय कारागार जयपुर और राजकुमार जाट निवासी राजगढ जिला चुरू हाल नर्सिंग ऑफिसर द्वितीय ग्रेड कारागार जयपुर को गिरफ्तार किया है। पुलिस जांच में सामने आया कि इस गिरोह से जुड़े आरोपी इन टैबलेट्स और कैप्सूल को बाजार में बेचकर मोटा मुनाफा कमाते हैं। पहले जेल में रहने के दौरान जेल के नर्सिंग ऑफिसर राजकुमार से इनकी पहचान हो गई थी। इन्होंने जेल में बंदियों को ज्यादा मूल्य लेकर नशीली दवाइयां सप्लाई करने की साजिश रची। जिसमें नर्सिंग ऑफिसर राजकुमार ने मुख्य भूमिका निभाई। उसने अपने पद का फायदा उठाकर इस खेल में मुख्य भूमिका निभाई और अवैध तरीके से नशीली दवाइयां जेल में मोटे मुनाफे पर सप्लाई करने लगा। गौरतलब है कि इससे पहले भांकरोटा थाना पुलिस ने तीन आरोपियों को नशीली दवाइयों और कैप्सूल के साथ पकड़ा था। इस मामले में जांच पडताल बिंदायका थाना पुलिस कर रही थी। जहां जांच पड़ताल में सामने आई जानकारी के बाद थानाधिकारी विनोद कुमार के नेतृत्व में गढ़वालों की ढाणी (जयपुर) निवासी गोगराज गढ़वाल को जेल से प्रोडक्शन वारंट पर गिरफ्तार किया। पूछताछ में जेल के नर्सिंग ऑफिसर राजकुमार का नाम सामने आया।

महिला की हत्या करने वाला आरोपी पुलिस के हत्थे चढ़ा

जयपुर। विधाधर नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए हत्या की वारदात को अंजाम देने वाले आरोपित को गिरफ्तार किया है। पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपित लावारिस घूमती महिला को देखकर उसके साथ अनैतिक काम करने की नियत से गया था। लेकिन मृतक के पास एवं विरोध करने पर उसे मौत के घाट उतार दिया। आरोपित हत्या की वारदात को अंजाम देकर फरार हो गया था। जिसे पुलिस टीम ने चिन्हित करते हुए पकडा है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर (उत्तर) करण शर्मा ने बताया कि विद्याधर नगर थाना पुलिस को सूचना मिली थी कि थाना इलाके में स्थित स्वर्ण जयंती पार्क के पास सरस डेयरी के बन रहे लोहे के स्ट्रक्चर में एक महिला की अर्धनग्न लाश पडी हुई है। पुलिस जांच में सामने आया कि मृतक महिला अज्ञात है,जो घटना के तीन-चार दिन से पूर्व ही घटनास्थल के आसपास लावारिस हालत में घूम रही थी। घटनास्थल का निरीक्षण डॉग स्क्वायड एव एफएसएल टीम से करवाया गया एव साक्ष्य संकलित किये गये।। इस घटना की गंभीरता को देखते हुए वारदात को अंजाम देने वाले आरोपित की दस्तयाबी व गिरफ्तारी के लिए पुलिस की एक विशेष टीमें गठित की गई।

गठित टीम ने जांच पड़ताल करते हुए सामने आया कि मृतका तीन अक्टूबर की शाम को वार्ड नंबर 23 पार्षद कार्यालय के पीछे गली मे थी। उस समय मृतका की तरफ एक व्यक्ति गया था,जो कुछ समय बाद मृतका की हत्या करके वापस चला गया, जिसके आने जाने के बाद महिला गली मे पडी रही। उसके बाद संदिग्ध व्यक्ति फिर आया एवं मृतका की लाश को पार्षद कार्यालय के गली मे उठाकर लेकर डेयरी बुथ की तरफ लेकर आया एवं मृतका की लाश को डेयरी बूथ में फेंक कर फरार हो गया।

पुलिस ने कडी से कडी जोडते हुए वारदात को अंजाम देने वाले आरोपित सुरेश नायक उर्फ पावणा निवासी ना जमवारामगढ़ जिला जयपुर ग्रामीण हाल भट्टा बस्ती जयपुर की पहचान कर आरोपित को गिरफ्तार किया है। जिसने मृतका की हत्या की है एवं लाश को डेयरी बूथ में फेंककर फरार हो गया था। वहीं मृतक महिला की शिनाख्त नही हो पा रही है।

मादक पदार्थ ऑनलाइन पहुंचाने वाला गिरफ्तार

जयपुर। आदर्श नगर थाना पुलिस और जिला स्पेशल टीम (डीएसटी) जयपुर पूर्व ने कार्रवाई करते हुए ऑनलाइन मादक पदार्थ (स्मैक) की सप्लाई करने वाले एक शातिर तस्कर को गिरफ्तार किया है। पुलिस टीम ने आरोपित तस्कर के पास से 16 ग्राम स्मैक बरामद की। जिसकी वह डिलीवरी करने जा रहा है। इसके अलावा पुलिस ने आरोपित के पास से (दुपहिया) एक बाइक भी जब्त की है। जिसका उपयोग स्मैक डिलीवरी के लिए किया करता था। फिलहाल आरोपित से पुलिस टीम पूछताछ कर रही है। पुलिस उपायुक्त जयपुर(पूर्व) संजीव नैन ने बताया कि जयपुर शहर में कमिश्नरेट की ओर से चलाये जा रहे ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत डीएसटी पूर्व और आदर्श नगर थाना पुलिस ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए

जयपुर में नशे की सप्लाई करने वाले एक शातिर तस्कर नीरज (24) निवासी कठपुतली नगर कच्ची बस्ती ज्योति नगर को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने कार्रवाई के दौरान तस्कर नीरज के पास से 16 ग्राम स्मैक व परिवहन में प्रयुक्त वाहन बुलेट बाइक को जब्त किया।

मंडी समितियों को "ब्याज माफी योजना" में पुरानी बकाया राशि पर भी लाभ देने की मांग

जयपुर (कासं)। जयपुर फल व सब्जी थोक विक्रेता संघ के अध्यक्ष योगेश तंवर ने राजस्थान की कृषि उपज मंडी समितियों की समस्त पुरानी बकाया राशि वसूली तथा प्रकरणों के निस्तारण के लिए ब्याज माफी योजना 2025 लागू करने की मांग उठाई है। योगेश तंवर ने मंगलवार को मुख्यमंत्री भजनलाल और कृषि विपणन बोर्ड के निदेशक राजेश चौहान के नाम ज्ञापन सौंपा। उन्होंने हवामहल विधायक स्वामी बालमुकुंदाचार्य से भी इस मामले को लेकर मुलाकात की और ज्ञापन सौंपकर अपनी समस्याएं बतायी।

योगेश तंवर ने बताया कि राज्य सरकार ने 2017 में राजस्थान की समस्त कृषि उपज मंडी समितियों की समस्त पुरानी बकाया राशि पर ब्याज माफी योजना लागू की गई थी। यह योजना 1 अप्रैल 2023 तक निरन्तर लागू की गई थी। राजस्थान की सभी मंडियों में कार्यरत व्यापारी/आढ़तियों ने ब्याज माफी योजना का लाभ उठाया। जिन व्यापारियों की आवंटन राशि एवं मंडी शुल्क एवं लीज राशि बकाया थी, उन व्यापारियों को भी इस योजना का लाभ मिला।

तंवर ने बताया 2024 के बाद ब्याज माफी योजना नहीं लागू की गई है। वर्तमान में राज्य सरकार ने शहरी सेवा शिविर लगाकर जनता को सीधे विभिन्न सेवाओं में छूट के साथ साथ बकाया लीज राशि पर ब्याज माफी प्रदान की जा रही हैं, इसलिए हमारी मांग है कि राजस्थान की समस्त कृषि उपज मंडी समितियों में 1 अप्रैल 2024 से पहले की समस्त बकाया राशियों पर ब्याज माफी योजना लागू किया जाए।

जयपुर फल व सब्जी थोक विक्रेता संघ के अध्यक्ष योगेश तंवर ने हवामहल विधायक बालमुकुंदाचार्य से मुलाकात कर मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा।

ARBiT it happens here...

Celebrating the Ocean's Most Intelligent Invertebrate

Observed every year on October 8, World Octopus Day honours the mysterious and highly intelligent octopus, a creature known for its remarkable problem-solving skills, colour-changing abilities, and unique three-heart circulatory system. The day highlights the importance of marine conservation and the need to protect delicate ocean ecosystems where these fascinating animals thrive. From their incredible camouflage techniques to their ability to squeeze through tiny spaces, octopuses showcase nature's creativity and adaptability. World Octopus Day encourages people to learn more about ocean life, reduce plastic waste, and support sustainable seafood practices to safeguard marine biodiversity for future generations.

राष्ट्रदूत
WEDNESDAY
08 October 2025
A-B

#SERVICES

These Are Yours On The Indian Train

Essential Services Offered by Indian Railways

Indian Railways and its ticketing platform, IRCTC, offer a variety of services designed to enhance passenger comfort and safety throughout their journey. From affordable accommodations to emergency medical assistance and compensation for delays, knowing these services can make your travel experience much smoother. Here's a comprehensive guide to some of the key services available to train travelers in India.

Comfortable Stay Options: Dormitories and Retiring Rooms

For passengers with long layovers or who need a rest between connecting trains, Indian Railways provides dormitories and retiring rooms at many major stations. Dormitories are budget-friendly shared accommodations with basic bedding and amenities, perfect for solo travelers or those on a tight schedule. Retiring rooms, on the other hand, offer private spaces suitable for families or travelers seeking more comfort and privacy. Booking can be done online through the IRCTC website or app, or directly at the station counters. These rooms are available at nominal charges, making them an economical choice for resting during your journey.

Secure Your Belongings: Locker and Cloakroom Facilities

At many stations, Indian Railways offers locker and cloakroom services for temporary baggage storage. This is especially handy if you have a long wait at the station or want to explore without carrying heavy luggage. Cloakrooms allow storage of luggage for durations typically up to 30 days at affordable fees. Secure lockers are available at select stations for valuables. Passengers should check the availability, charges, and maximum storage duration at their respective stations.

Assistance When You Need It: Medical Emergencies on Trains

Medical emergencies can occur anytime during travel, and Indian Railways ensures passengers have access to prompt medical aid. Train staff are trained in basic first aid and can assist passengers who fall ill. In serious situations, they coordinate with medical professionals onboard or arrange for hospital care at the next station. Passengers can also call the Railway helpline (139) or seek help from the Railway Protection Force (RPF) for emergencies.

Travel with Peace of Mind: Free Travel Insurance

When booking tickets through the IRCTC platform, passengers can opt for travel insurance that provides coverage against accidental injury or death during the journey. This insurance is available for confirmed and RAC (Reservation Against Cancellation) ticket holders, usually at no extra cost or a nominal fee. However, it does not cover waitlisted tickets. The insurance offers a valuable safety net and peace of mind for travelers.

Food During Delays: Complimentary Meals

Indian Railways understands the inconvenience caused by train delays. For premium trains like Rajdhani, Shatabdi, and Duronto, if the train is delayed by more than two hours, passengers are entitled to free meals onboard. IRCTC staff distribute meals that typically include staples like rice, pulses, pickles, tea, and coffee. This service helps alleviate hunger during unforeseen delays and ensures passengers remain comfortable.

Compensation for Delays: Refund Policies

In the event that your train is delayed by three hours or more, you have the right to cancel your ticket and claim a full refund. Passengers can file a Ticket Deposit Receipt (TDR) online via the IRCTC website or app. This policy encourages accountability and offers financial protection to travelers affected by significant delays. For delays shorter than three hours, refunds are generally not available.

Additional Passenger Benefits

Beyond the above, Indian Railways provides several other helpful amenities.

Waiting Rooms: Access to waiting rooms with seating and sometimes air-conditioning is provided for ticket holders at many stations.

Complaint Redressal: Passengers can report grievances via helpline 139, online portals, or station complaint boxes.

Wheelchair Assistance: Available at most major stations to aid differently-abled and elderly passengers.

Knowing about these free and paid services from Indian Railways and IRCTC empowers you to travel smarter and more comfortably. Whether you need a place to rest, a secure spot for your bags, emergency medical help, or compensation for delays, Indian Railways has systems in place to support you. Always check the specific amenities available at your boarding and transit stations to plan your journey better.

"I remember I once switched Dad's coffee with a cup of hot tea," Sunil confessed, his voice a conspiratorial whisper. "He just took a sip and said, 'Huh, this coffee tastes a bit weak today,' and then just drank the whole thing." The others stared at him in disbelief. "You did that?" Anjali exclaimed, a mix of horror and amusement on her face. "And he never found out?" Sunil shook his head, a smug smile on his lips. "Never. He thought it was just a bad batch of coffee."

Sobremesa

Mahishadal Rajbari at Mahishadal Town under Purba Medinipur district in West Bengal.

#FAMILY

Dr. Goutam Sen
CTVS Surgeon
Traveller
Storyteller

The ancestral home, Sansar Villa, was built on an elevated area in the middle of the giant plot gifted to the Dewan of Jaipur in the late 19th century. Many generations have lived in this place which consisted of two buildings. The big central one surrounded by garden and vegetable patches was the residential building. It was enlarged as the family grew larger. The other smaller building in the front on one side was called the 'Baitakhana.' It was there from the beginning. This was the place where formal meetings of visitors and hosting of grand dinners were conducted. At times, distinguished visitors even resided there. As children, we often peeped behind the large doors to see the elegantly dressed Indians and White men who came to dine. As a family, it was not our practice to dine there.

This time, it was decided that when the family gathered for Durga Puja, we would make an exception and have a really formal meal there. The one with the best crockery and cutlery! The menu was regal, well thought out and cooked over many days. A whole troop of cooks followed mother's instruction to serve a meal gargantuan in proportion with all kinds of meats and favourite vegetables for each child followed by various Bengali sweets, Gokul Pithe, Sandesh and Pati Shapta were on the list. Caramel pudding was an oddity.

We began early and ate with a gusto not commonly seen. The dinner lasted long in to the night!

The mahogany dining table, a silent witness to countless gatherings, groaned under the weight of empty plates and forgotten crumbs. The last remnants of a feast, a half-eaten roti, a lone dal bowl and a scattered array of pickle jars, lay like a battlefield after a truce. The sweets remained to be savoured at a slower pace. The formal dinner was long over, but the family remained, a constellation of four siblings and their spouses, held in orbit by a force more potent than gravity: sobremesa.

Sunil, the eldest, whose hair had started to recede, leaned back in his chair, a contented sigh escaping his lips. "I swear, Mom's aloo sabzi tastes better now than it ever did."

His younger sister, Anjali, a successful architect with a sharp mind and an even sharper wit, scoffed good-naturedly.

"That's because you've been eating bland, overpriced restaurant food for the past ten years, bhai. Nobody seems to cook in your household." She cared little at the lifted eyebrows of her elder Bhabhi!

The third sibling, the ever-jovial and single Rohan, chuckled as he reached for another helping of the leftover mango pickle. "Don't listen to her, Sunil. She's just jealous as she can't cook like Mom."

"And you, Rohan," their youngest sister, Priya, chimed in, a mischievous glint in her eyes, "You're just trying to distract us from the fact that you've finished off all the pickle."

Laughter filled the room, a warm, melodic sound that seemed to chase away the years of separation. They had grown up within these very walls, their lives a tapestry woven with shared memories, triumphs and heartbreaks. The house itself felt alive, each creaking floorboard and faded wallpaper a testament to their history. The marble mantlepiece, with giant white marble flower vases on both sides of the large brass framed picture of Sansar Chandra Sen looking down, benignly gave an additional glow to the room. The two large sideboards stacked with tureens of various dishes gave a homely atmosphere. The waiting staff had long disappeared, as if aware that this was a very private and intimate moment.

The conversation meandered like a lazy river, drifting from the mundane to the profound. They talked about their childhood, a time when the world was a simpler place, where their biggest concern was whose turn it was to close all the doors at night. "Remember that time, we tried to climb onto the roof to get the cricket ball?" Rohan reminisced, a wide grin spreading across his face. "Priya, you were so scared, you almost cried."

Priya's eyes widened in mock indignation. "I did not! I just said I didn't want to get yelled at by Dad."

"And then you slipped and landed right in Mom's rose bushes," Anjali added, her laughter echoing in the quiet room. "She was furious, but Dad just pretended he didn't see anything." A collective wave of nostalgia washed over them. They remembered building forts out of bedsheets and pillows, turning the living room into a magical kingdom. They remembered late-night study sessions fueled by mathri and endless cups of chai. They remembered the hushed conversations they had on the terrace, their dreams and fears whispered into the cool night air. The topic shifted to mischief they thought their parents never knew about.

"I remember I once switched Dad's coffee with a cup of hot tea," Sunil confessed, his voice a conspiratorial whisper. "He just took a sip and said, 'Huh, this coffee tastes a bit weak today,' and then just drank the whole thing."

The others stared at him in disbelief. "You did that?" Anjali exclaimed, a mix of horror and amusement on her face. "And he never found out?"

Sunil shook his head, a smug smile on his lips. "Never. He thought it was just a bad batch of coffee."

Rohan, not to be outdone, told the story of the time he and Sunil secretly hosted a party in the house when their parents were away for the weekend. "We told them we were just going to have a couple of friends over for a study group," he said, winking at Sunil. "It was more like a college frat party. We had to use buckets of water and towels to clean up the mess before they came back. We even did the laundry ourselves. The help was tipped generously with strict instructions that the parents were not to be told anything." The empty bottles of beer and liquor were disposed in the neighbour's compound.

> From college, the conversation naturally transitioned to their careers. Sunil, now a respected engineer, spoke of the challenges and rewards of his work. Anjali, a renowned architect, shared her passion for creating spaces that were both beautiful and functional. Rohan, who had started his own business, talked about the joys and heartbreaks of entrepreneurship.

Priya, who was just a child at the time, listened in wide-eyed wonder. "And I thought I was a master of mischief for sneaking a few cookies out of the jar!"

"Oh, you were," Anjali said, patting her sister's hand. "But they were a whole other level of sneaky!"

The conversation moved on to their college days, a time of newfound freedom and responsibility. Sunil talked about his all-nighters in the library, his struggle to balance his engineering studies with his passion for photography. Anjali recounted the grueling hours she spent in the studio, her sketches and models slowly evolving into masterpieces. Rohan, ever the social butterfly, regaled them with tales of his fraternity life, the endless parties and the friendships he forged that lasted a lifetime. Priya, the baby of the family, spoke of her own college experience, a mix of nervousness and excitement as she navigated a new city and new friendships.

From college, the conversation naturally transitioned to their careers. Sunil, now a respected engineer, spoke of the challenges and rewards of his work. Anjali, a renowned architect, shared her passion for creating spaces that were both beautiful and functional. Rohan, who had started his own business, talked about the joys and heartbreaks of entrepreneurship. And Priya, a budding journalist, spoke of her dreams of telling stories that mattered.

They talked about the choices they made, the paths they took, and the 'what ifs' that lingered in the back of their minds. "I sometimes wonder what would have happened if I had pursued photography full-time," Sunil mused, a faraway look in his eyes.

"You'd probably be a starving artist," Anjali quipped, her voice soft. "But you'd be a happy one."

The laughter returned, gentle and comforting! They were no longer the children they once were, but the core of who they were remained unchanged. They were still siblings, bound by an unbreakable bond that transcended time and distance.

Then, inevitably, the conversation turned to the grand, all-encompassing topic of life and marriage. Sunil, the first to get married, spoke of the compromises and joys of building a life with someone. Anjali, who had chosen to focus on her career, defended her decision to not marry with a quiet confidence. Rohan, still single, joked about his 'bachelor for life' status, but a hint of longing in his eyes gave him away. Priya, the last to get married, spoke of the beautiful and messy journey of finding your soulmate.

Their spouses, who had been listening with a mixture of amusement and fascination, now joined in, sharing their own perspectives and anecdotes. The circle grew wider, the conversation more inclusive. They were no longer just a family of four, but a larger, more complex unit, bound not just by blood, but by love and shared experiences.

As the hours passed, the moon rose high in the night sky, casting a silver glow through the window. The candles on the table had guttered down to stubs, their flickering flames casting dancing shadows on the walls. No one wished to get up. The stories flowed, one tale after another, each one a thread in the rich tapestry of their lives.

Sunil confessed to a childhood mischief they all thought the parents never knew about: he once hid a stray puppy in the garden shed, feeding it scraps from the dinner table for a week before their father, a dog lover himself, found it and officially welcomed it into the family. The others were shocked and amused, their laughter a mix of surprise and fondness.

Rohan recalled a secret pact he and Anjali had made in their teenage years: if they were ever in trouble, they would lie for each other, no matter what. The pact was tested many times, and they always stood by it, their silent conspiracy a source of strength and comfort. Anjali's eyes welled up with tears as she recalled a time when Rohan took the blame for a broken vase, saving her from their mother's wrath.

Priya, the quietest of the bunch, surprised them all with a story of her own. In her college days, she had a secret part-time job as a barista to save up for a trip to Paris, a trip she never told her parents about. She revealed that she finally went last year, and it was a 'dream come true.'

The tales spilled out, a cascade of forgotten memories and buried secrets. The little things: the time Sunil tried to bake a cake for their mother's birthday and set off a small fire in the kitchen. At another time, Anjali and Rohan accidentally locked themselves out of the house and had to spend the night in the car; the time Priya wrote a love letter to her high school crush and had her sister, Anjali, deliver it for her.

The hours melted away, the night a blur of laughter, tears, and heartfelt confessions. They were no longer just siblings; they were friends, confidants and a source of strength for one another. The bonds that had been forged in childhood had only grown stronger with time, a testament to the enduring power of family.

As the night drew to a close, a comfortable silence settled over the group. The last sips of coffee were taken, the final crumbs of dessert devoured. They sat there, a silent testament to the power of sobremesa, that magic period of time after a meal where time seems to stand still, where the most meaningful conversations happen and where the bonds of family are renewed and strengthened.

Sunil finally pushed his chair back, a contented smile on his face. "Well, I guess it's time to call it a night. Or is it morning!"

The others groaned in protest, but they knew he was right. They slowly rose from their chairs, their movements sluggish with a mix of fatigue and contentment. They hugged each other tightly, a silent promise to meet again soon, not just for a holiday or a special occasion, but for the simple joy of being together.

As they walked out of the dining room, they left behind a trail of memories, a legacy of a family that had grown up, grown apart and then, miraculously, found their way back to each other. The old mahogany table, a silent witness to it all, stood sentinel, waiting for the day they would all return, to feast, to talk, and to once again, lose themselves in the magic of sobremesa.

rajeshsharma1049@gmail.com

#VITTORIA COLONNA

First woman poet of 16th century!

The book chronicles Colonna's development as a writer, her grief over the death of her husband, and her friendship with Michelangelo, with whom she carried on a long and moving correspondence

A new book just published by Macmillan introduces readers to Vittoria Colonna, a 16th-century writer who was the first woman to publish a book of poems in Italy.

Little known and long neglected, she channelled her grief about her husband's death and profound religious yearnings into sonnets that inspired women writers for centuries. Earlier this year, Ramie Targoff, a professor of English at Brandeis University, published a biography of the poet: 'Renaissance Woman: The Life of Vittoria Colonna.' The book chronicles Colonna's development as a writer, her grief over the death of her husband, and her friendship with Michelangelo, with whom she carried on a long and moving correspondence. The following is a sample of her writing, a poem titled 'Di così nobil fiamma Amor mi cinse' (which Targoff translated):

Love wrapped me in so noble a flame
That even once spent it continues to burn.
Nor do I fear new fire, since the first
Is so strong it extinguishes all others.
So rich a bond ties me to that fine yoke,
That my heart disdains all lesser chains.
It feels no longer either hope or fear,
Since one fire inflames it, one knot binds it tight.
A single pungent arrow afflicts my breast
So that it keeps alive the immortal wound,
It shields all other love from entering.
Love consumed the passion where once he lit it,
He broke the bow with his enduring shot,
melted all other knots in tying this one.

The New Yorker called Targoff's book a 'richly realized biography.' A reviewer in the New York Times wrote, "Vittoria Colonna has always deserved to be better known. Ramie Targoff's fine book will surely make that happen." Here, Targoff answers questions about the book, her work, and Colonna.

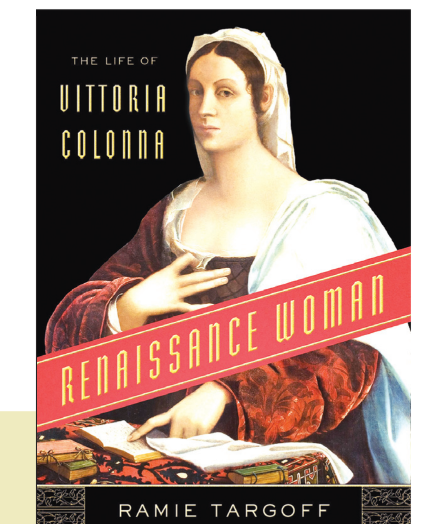

Ramie Targoff.

What motivated you to write this book?

I think this is a moment in which a lot of people are asking what role women played in our past. There are so many stories that haven't been told. My book allows you to glimpse history through a female lens. Colonna was quietly involved, but absolutely central, to all the things happening in this period. But she's never mentioned in any of the textbooks. I think that's interesting by itself, but it also makes people wonder what women were doing during different periods in history, women were always there and we just don't know about them.

Why do you find her poetry so engaging?

Colonna wrote two books of sonnets, one mourning her husband after he passed away, about dealing with her grief. She wrote another set of 103 poems, which she gave to Michelangelo, and those were spiritual sonnets about her relationship to her faith. Sometimes, they were written directly to God, sometimes to Mary, or to particular saints. They were about her religious anguish.

In both cases, I see the sonnet as a kind of therapeutic, confessional form, a way to figure yourself out. I love the weird tension between the tightness of the form and how much you can express of your deepest self and also express changes of mood and temperament inside the poem.

The poems are intimate, she never meant for them to be public. Someone collected all of them and published them to make some money. She was not happy about it. The first line of her first poem is "I write only to vent my inward pain." She says that she's writing as a therapeutic process.

Your book and Colonna's poetry have really struck a chord with the public. Last year, there was a big exhibition of Michelangelo's drawings at the Metropolitan Museum in Manhattan, and they dedicated a whole part of the gallery to his friendship with Vittoria Colonna. A lot of people saw her name, and she was featured in the New York Times review of the show. I think those things help. The book I wrote is for non-academics to read, meaning I didn't do a lot of intense analysis of poetry. Normally, when critics are writing about poems, they do a line by line reading, but there's almost none of that in this book. The book is a narrative history, so, poems come along to illustrate the material, but I don't do poetic analysis. The book reads fast, it's meant to be enjoyed, not studied. It's scholarly because so much research went into it, but I wrote it in a very different way, as a story.

What do you think she would have thought of your book?

I think she'd be delighted. My book presents her in a very sympathetic way but also in a very complex way as a person who had real struggles. The idea that she was just a saint diminishes her. That's not all of who she was. At the same time, I didn't want to represent her as a person who was just struggling all the time. She was a very formidable person, who also had a lot of grief. This book represents many different facets of her life, with sympathy but also with objectivity.

What's your next project?

Because of this work on Vittoria Colonna, I started getting more interested in women's writing. I want to write a composite biography of three or four extraordinary women who wrote at the time of Shakespeare who we don't know about. If you asked someone who had taken a college English class on Shakespeare to name a woman from that time, they typically can only think of Queen Elizabeth or fictional characters in Shakespeare's plays. I want to change that.

THE WALL

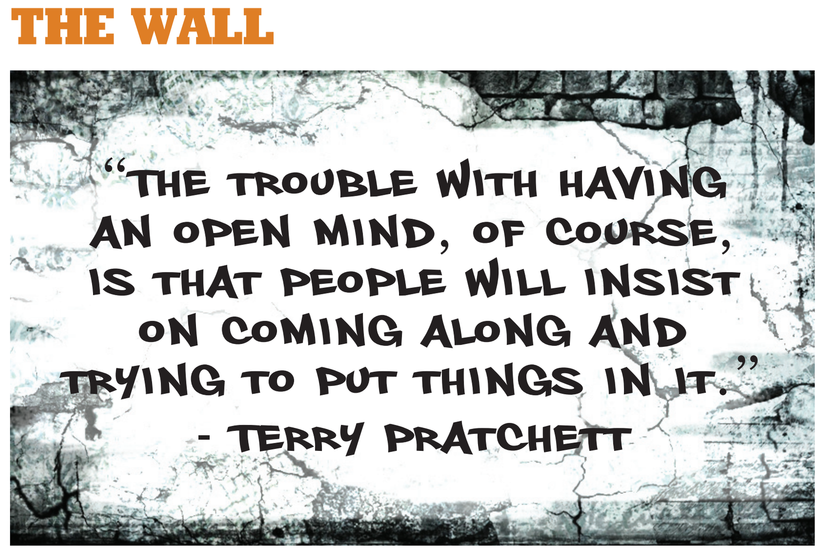

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

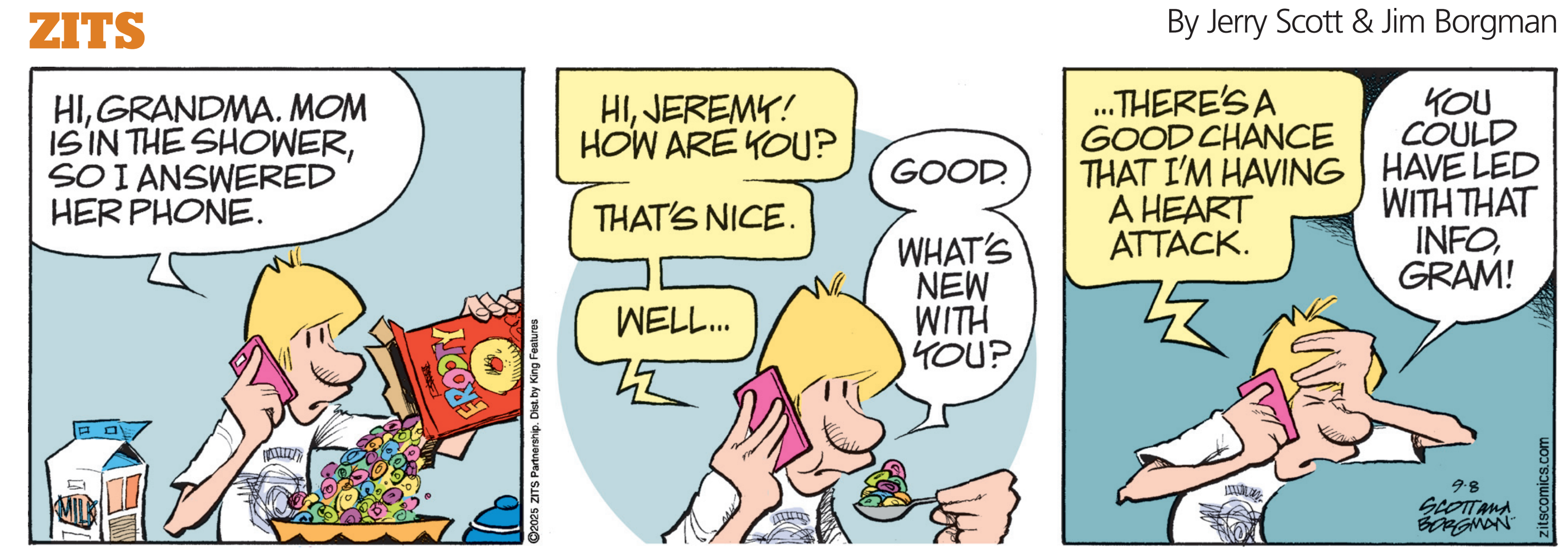

सोते परिवार पर हमला, दो बहनों को बोलेरो से टक्कर मारी, दोनों की मौत

हमले में परिवार के आठ सदस्य गंभीर रूप से घायल, पुलिस ने 10 हमलावरों को पकड़ा

अजमेर, (कासं)। कायड़ चौराहा जनाना रोड स्थित बंजारों की बस्ती रविवार की आधी रात चीखों से गूंज उठी। विवाहिता को ससुराल भेजने की बात पर रिश्तेदारी दुश्मनी में बदल गई। युवक के ससुराल पक्ष के लोग दो गाड़ियों में भरकर आए और सोते हुए परिवार पर जानलेवा हमला बोल दिया। इस हादसे में आठ लोग जख्मी हो गए। हमला कर भाग रहे लोगों ने दो बहनों पर कार चढ़ा दी, जिससे वह अचेत होकर जमीन पर गिर पड़ी। सूचना मिलने पर सिविल लाइन थाना पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को उपचार के लिए जेएलएन अस्पताल पहुंचाया, जहां दो बहनों की मौत हो गई।

सिविल लाइन थाना प्रभारी शंभु सिंह ने बताया कि रात करीब साढ़े बारह बजे जब परिवार सो रहा था, तभी बोलेरो और पिकअप में सवार करीब 10 लोग डेरे पर पहुंचे। ईश्वर की पत्नी रीना तीन माह पहले अपने पीहर किशनगढ़ चली गई थी। उसे ससुराल वापस लाने को लेकर चार अक्टूबर को झगड़ा हुआ था। इसी रंजिश के चलते यह हमला किया गया।

परिवादी ईश्वर बंजारा ने पुलिस को बताया कि हमलावरों में उसका ससुर छोटूलाल, साला मुकेश, चाचा ससुर हेतराम और अन्य लोगों ने आते ही सोते हुए परिवार पर सरियों और डंडों से हमला कर दिया। जब हमलावर भागने लगे, बीच-बचाव कर रही मीनाक्षी और पिंकी पर बोलेरो चढ़ा दी। दोनों गंभीर रूप से घायल हो गई और अस्पताल में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। पीड़िता काजल ने बताया कि सोते हुए परिवार पर जानलेवा हमला किया गया है। पीड़ित परिवार की शिकायत पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। इस मामले में पुलिस ने दस लोगों को डिटेन किया है।

मारपीट में घायल पीड़ित परिवार के लोगों का उपचार किया।

- विवाहिता को ससुराल भेजने की बात पर दुश्मनी में बदल गई रिश्तेदारी
- ससुराल पक्ष के लोग दो गाड़ियों में आए और सोते हुए परिवार पर हमला बोल दिया

बाप-बेटे करवा रहे थे धर्म परिवर्तन, बेटा गिरफ्तार, पिता फरार

श्रीगंगानगर, (निसं)। बीमारी ठीक करने का दावा करते हुए पास्टर (पादरी) पिता और उसका बेटा धर्म परिवर्तन करवा रहे हैं। अन्य धर्मों के खिलाफ अपशब्द भी बोल रहे हैं। पुलिस ने बाप-बेटे के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की है। बेटे को गिरफ्तार कर लिया गया है, जबकि पिता फरार है।

मामला श्रीगंगानगर में बॉर्डर एरिया के हिंदुमलकोट इलाके का है। उधर, देर रात काफी संख्या में लोग हिंदुमलकोट थाने के सामने इकट्ठे हुए थे। खाटलबाना गांव के रहने वाले शिकायतकर्ता सतनाम सिंह ने पुलिस को रिपोर्ट दी थी। रिपोर्ट में बताया कि सतनाम लंबे समय से बीमार है। उसी के गांव के रहने वाले पास्टर बग्गुसिंह ने उसकी बीमारी ठीक करने का दावा किया। इसके लिए बग्गुसिंह उसके घर आया। आरोप है कि बग्गुसिंह ने कहा कि ईसाई धर्म अपनाने से उसकी बीमारी ठीक हो जाएगी। इसके बाद उसे अपने घर ले जाकर जल पिलाया, मंत्र पढ़े और सिर पर हाथ रखकर कहा कि अब तुम ईसाई हो गए हो। प्रभु यीशु तुम्हारी बीमारी ठीक करेंगे। इस दौरान बग्गुसिंह ने विभिन्न धर्मों और धर्म गुरुओं के खिलाफ अपमानजनक टिप्पणी की। सतनाम सिंह (शिकायतकर्ता) ने यह बात अपने बेटे सुखविंद्र सिंह को बताई। सुखविंद्र सिंह ने पास्टर बग्गुसिंह से बात की। बग्गु ने धमकी देते हुए कहा कि उसके बड़े अधिकारियों से संपर्क हैं। उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। बग्गुसिंह के बेटे अमनदीप ने भी फोन पर जान से मारने की धमकी दी। सतनाम सिंह और उसके लड़के सुखविंद्र सिंह ने पुलिस को कॉल रिकॉर्डिंग समेत तमाम सबूत पुलिस को सौंपे हैं। श्रीगंगानगर के खाटलबाना गांव में पास्टर बग्गुसिंह और उसके बेटे अमनदीप पर लोगों को लालच देकर धर्म परिवर्तन कराने का आरोप लगाया गया है। शिकायतकर्ता सतनाम सिंह ने बताया कि बग्गुसिंह ने खाटलबाना में अपने घर पर चर्च बनाया है। यहां रोजाना प्रार्थना सभाएं और धर्म परिवर्तन की गतिविधियां चल रही हैं। गरीब और मजदूर वर्ग को लालच देकर ईसाई बनाया जा रहा है। हिंदुमलकोट थाने के एसएचओ गुरमेल सिंह बराड़ ने कहा कि बग्गुसिंह का नाम इससे पहले भी धर्म परिवर्तन के मामले में सामने आ चुका है। मार्च 2024 में संगरिया थाने में उसके और बोलांवाली निवासी अनिल कुमार के खिलाफ केस दर्ज हुआ था। इसमें शिकायतकर्ता बंशीलाल शर्मा ने बताया था कि 26 फरवरी 2024 को बग्गुसिंह ने बोलांवाली में अनिल कुमार के घर पर धार्मिक आयोजन के बहाने लोगों को बुलाया था। विभिन्न धर्मों की बुराई कर एक-एक लाख रुपए में ईसाई धर्म अपनाने को कहा। हिंदुमलकोट पुलिस ने 6 अक्टूबर को मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस ने धर्म परिवर्तन से जुड़े इस मामले से सबूत भी इकट्ठे किए हैं। इसके आधार पर आगे की कार्रवाई की जा रही है। हिंदुमलकोट थानाधिकारी गुरमेल सिंह मामले की जांच कर रहे हैं।

थानाधिकारी गुरमेल सिंह ने बताया कि बग्गु सिंह ने गांव खाटलबाना में 25 घरों में धर्म परिवर्तन करवाया है। उसने अपने घर में ही चर्च बना रखा है। आज गांव के लोगों से पूछताछ की जाएगी। साथ ही आरोपियों को कोर्ट में पेश किया जाएगा। बराड़ ने बताया कि आरोपी बाप-बेटे के खिलाफ धर्म परिवर्तन व धार्मिक मामलों को ठेस पहुंचाने के आरोप में मामला दर्ज किया गया है। उधर, जब सतनाम सिंह व उसका परिवार मामला दर्ज करवाकर जा रहे थे तो उनके साथ आरोपी पवन सिंह ने धक्का-मुक्की की और मारपीट की। जिसके बाद पवन सिंह को शांतिभंग में गिरफ्तार किया गया। पवन सिंह, बग्गुसिंह के मामा का बेटा है।

- मामला श्रीगंगानगर में बॉर्डर एरिया के हिंदुमलकोट इलाके का है

कास्टिंग एवं मॉडलिंग के नाम पर सायबर धोखाधड़ी में आरोपी गिरफ्तार

पूर्व में गिरफ्तार आरोपी दीपक मीणा से रिमांड अवधि में अनुसंधान के बाद कार्रवाई की

कोटा, (निसं)। सायबर पुलिस टीम ने कास्टिंग एवं मॉडलिंग के नाम पर युवतियों से साइबर ठगी के दर्ज प्रकरण में कार्रवाई करते हुए पूर्व में गिरफ्तार आरोपी दीपक मीणा से रिमांड अवधि के दौरान अनुसंधान करते हुए मामले में एक और आरोपी भोला बराता को पुरानी सब्जी मंडी से डिटेन कर पूछताछ के बाद प्रकरण में गिरफ्तार किया।

शहर पुलिस अधीक्षक तेजस्वनी गौतम ने बताया कि सायबर ठगी के प्रकरण में पूर्व में गिरफ्तार आरोपी दीपक मीणा से पूछताछ के दौरान अनुसंधान में सामने आया कि सायबर ठगी के काम में आने वाली मोबाइल सिम भोला बराता से खरीदी थी। शहर एसपी ने बताया कि सायबर थाने के थानाधिकारी सतीश चन्द के नेतृत्व में गठित टीम ने कार्रवाई करते हुए आरोपी श्यामनगर निवासी भोला बराता को गिरफ्तार किया। शहर एसपी ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी भोला बराता से पूछताछ के दौरान सामने आया कि आरोपी से शौक एवं नशा करने के लिये उक्त सिम पूर्व में गिरफ्तार आरोपी दीपक मीणा को चार सिम 1200 रूपये प्रति सिम के हिसाब से 4800 रूपये में बेच दी थी।

शहर एसपी ने बताया कि आरोपी ने सिम अपने परिचितों जिसमे उसकी पत्नी, चचेरे भाई, मौसेरी बहिन एवं चचेरे भाई की पत्नी के नाम से बोरखेड़ा इलाके से जारी करवाई थी। शहर एसपी ने बताया कि पकड़े गये आरोपियों से ठगी की राशि को शौक में खर्च किया जाना बताया है। पकड़े गये आरोपियों से अनुसंधान जारी है।

शहर एसपी ने बताया कि 21 सितम्बर को फरियादी समीर ने विज्ञान नगर थाने में रिपोर्ट दी। रिपोर्ट में कहा कि उसकी ई-मित्र की दुकान पर एक लड़का दीपक मीणा आता है, जो उसके अकाउंट मे ऑनलाइन रूपये डलवाता है एवं उससे नकद लेकर जाता है। रिपोर्ट में कहा कि उसके अकाउंट पर अलग-अलग जगह से सायबर फ्रॉड की शिकयातें सामने आई, जिस पर बैंक से जानकारी प्राप्त की तो सामने आया कि यें शिकायतें दीपक मीणा द्वारा किये गये ट्रांजेक्शन के कारण हुई है।

शहर एसपी ने बताया कि फरियादी की रिपोर्ट पर मामला दर्ज कर सायबर थानाधिकारी सतीशचन्द के नेतृत्व में गठित टीम ने मामले में अनुसंधान किया तो सामने आया कि दीपक मीणा ने अपने मोबाइल में फर्जी कास्टिंग कंपनी का अकाउंट बना रखा है, आरोपी दीपक मीणा 18-25 वर्ष की युवतियों को कास्टिंग में काम दिलाने के नाम पर व्हाट्सएप्स पर बिजनेस अकाउंट बनाकर युवतियों से चैट करके उनको प्रवंचित कर रूपये ई-मित्र के माध्यम से नकद प्राप्त कर ठगी करता था।

शहर एसपी ने बताया कि सायबर टीम ने कार्रवाई करते हुए पूर्व में आरोपी दीपक मीणा को गिरफ्तार किया। मामले में सामने आया कि ठगी के काम में उपयोग होने वाली मोबाइल सिम भोला बराता ने आरोपी दीपक मीणा को बेची, जिनसे आरोपी ठगी की वारदात को लगातार अंजाम देता रहा। सायबर टीम ने मामले में दूसरे आरोपी भोला बराता को भी गिरफ्तार किया।

- पकड़े गये आरोपियों से ठगी की राशि को शौक में खर्च किया जाना बताया है

बदमाशों ने घर पर पत्थरबाजी की

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले के मांडल थाना क्षेत्र के लुहारिया गांव में सोमवार को एक दर्जन बदमाशों ने घर पर पत्थरबाजी और गाली-गलौज की वारदात को अंजाम दिया। यह घटना उस समय हुई जब पीड़ित अपने घर में मौजूद थे। वहीं, पीड़ित परिवार ने आरोप लगाया कि एक माह पूर्व की गई कीचड़ फेंकने की वारदात के बावजूद मांडल पुलिस ने अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की, जिससे बदमाशों के हौसले और बढ़ गए हैं।

पीड़ित शहनाज बानू ने बताया कि बदमाश थाने में रिपोर्ट दर्ज कराने के दौरान भी उनके ऊपर दबाव बनाने के उद्देश्य से थाने के बाहर खड़े होकर निगरानी बनाए रखे। उन्होंने कहा कि हमें हर समय डर सताता है। कभी भी ये लोग हमें जान से मार सकते हैं। अगर पिछले आरोपियों पर कठोर कार्रवाई हुई होती तो वे इतने हिम्मत नहीं दिखा पाते। शहनाज ने पुलिस पर यह भी आरोप लगाया कि कीचड़ फेंकने की वारदात में शामिल आरोपियों को केवल पाबंद करके छोड़ दिया गया, जबकि उन्हें कड़ी सजा दी जानी चाहिए थी।

ईरांस के शमशान घाट की बदहाल स्थिति, कीचड़ भरे रास्ते से परेशानी

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले के रायला क्षेत्र के निकटवर्ती ईरांस ग्राम पंचायत स्थित श्मशान घाट वर्षों से बदहाल स्थिति में है। यहां अंतिम संस्कार के लिए बना टीन शेड पूरी तरह जर्जर हो चुका है, जिसकी छत और खंभों में दरारें आ गई हैं। टीन की चद्दर जगह-जगह से टूटकर लटक रही है, जिससे किसी भी समय हादसा होने की आशंका बनी रहती है।

जानकारी के अनुसार रविवार को रात्रि को अल्टो कार की टक्कर से राकेश वैष्णव (27) पुत्र श्यामदास वैष्णव की मौके पर ही मौत हो गई थी और साथी पिंटू घायल हो गया, जिसे प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी थी। राकेश का हादसे के बाद शव को रायला चिकित्सालय की मोर्चरी में रखवाया गया। सोमवार को रायला सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में डॉक्टर और गुलाबपुरा पुलिस टीम द्वारा पोस्टमार्टम कर शव परिजनों को सुपुर्द किया गया। इसके बाद जब ग्रामीण अंतिम संस्कार के लिए ईरांस श्मशान पहुंचे, तो उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। बरसात के पानी से रास्ते में कीचड़ हो रहा और नालियों नही होने रास्ते में खड्डे गंद पानी से भर गए थे, जिससे शव को शमशान घाट तक ले जाने में परेशानी का सामना करना पड़ा। ग्रामीणों के कंधो पर शव को कीचड़ से निकालने दौरान बारिश से भी परेशानियां झेलनी पड़ी और जर्जर अवस्था में टीनशेड में अंतिम संस्कार करना पड़ा। मानसी नदी के किनारे स्थित इस श्मशान भूमि पर बैठने या आश्रय की कोई समुचित व्यवस्था नहीं होने से शोकाकुल परिजनों व ग्रामीणों को खुले में खड़ा रहना पड़ा।

ग्रामीणों ने बताया कि यह टीन शेड लगभग 20 से 25 वर्ष पुराना है, जो अब पूरी तरह जर्जर हो चुका है। खंभों में दरारें हैं और अंदर सांप-बिच्छू का डर बना रहता है। ग्रामीणों का कहना है कि शमशान भूमि के लिए भूमि आवंटित भी की जा चुकी है, लेकिन कार्य अधूरा छोड़े जाने से अब तक स्थिति जस की तस बनी हुई है। कई बार शिकायत करने के बावजूद भी प्रशासन द्वारा इस ओर कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है। ग्रामीणों ने प्रशासन से मांग की है कि जल्द से जल्द नया टीन शेड बनवाया जाए, शमशान घाट तक पक्का मार्ग बनाया जाए, और आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाएं, ताकि भविष्य में किसी भी परिवार को ऐसी स्थिति का सामना न करना पड़े।

- अंतिम संस्कार के लिए बना टीनशेड पूरी तरह जर्जर, छत और खंभों में दरारें आई

गरीब हिन्दुओं का धर्मांतरण कराने के मामले में पांच आरोपी गिरफ्तार

अलवर, (निसं)। हिन्दू धर्म के गरीब महिला और पुरुषों का धर्मान्तरण कराने वाले पांच आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर उनके कब्जे से एक पेन ड्राईव और धर्म प्रचार की सामग्री को बरामद किया है। यह कार्रवाई बड़ौदामेव पुलिस थाना क्षेत्र में की गई है।

सुधीर चौधरी आईपीएस पुलिस अधीक्षक जिला अलवर ने जानकारी देते हुए बताया कि डॉ. प्रियंका आरपीएस अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ग्रामीण जिला अलवर व कैलाश जिन्दल आरपीएस वृताधिकारी वृत लक्ष्मणगढ़ जिला अलवर के निकटतम सुपरविजन में प्रभावी कार्रवाई करते हुए बड़ौदामेव पुलिस टीम द्वारा हिन्दू धर्म की गरीब महिलाओं एव पुरुषों को ईसाई धर्म अपनाने के लिए प्रलोभन एवं भय दिखाकर धर्म परिवर्तन हेतु प्रेरित करने वालों के विरुद्ध अभियोग पंजीबद्ध कर पांच आरोपियों बहला एमआईए अलवर निवासी प्रशांत जाटव, मुरादाबाद निवासी रोहित जाटव, मालाखेड़ा अलवर निवासी रामनारायण, महेश मेघवाल और जगतपुरा जयपुर निवासी केशव वैदादा को गिरफ्तार किया गया।

एसपी सुधीर चौधरी ने बताया कि परिवादी द्वारा पुलिस थाना उपस्थित होकर एक रिपोर्ट प्रस्तुत कि की ग्राम नैनापुर में हिन्दू धर्म की गरीब महिलाओं एवं पुरुषों को ईसाई धर्म अपनाने के लिए प्रलोभन एवं भय दिखाकर धर्म परिवर्तन हेतु अवैध धर्मान्तरण कराया जा रहा है। जिस पर विजयपाल सिंह उ.नि. थानाधिकारी मय जाब्ता के उक्त जगह पर पहुंचे। वहां पर मौजूद लोगों से इस बारे में जानकारी की गई व रिकॉर्ड को देखा गया, जिस पर यह तथ्य सामने आए कि हिन्दू धर्म के विरुद्ध गलत बातें सिखाई जाती हैं। जिस पर थाना बड़ौदामेव पर प्रकरण पंजीबद्ध किया गया। प्रकरण में गवाह बयानात व जब्तशुदा पेन ड्राइव व धर्म प्रचार-प्रसार सामग्री एवं उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर जुर्म प्रमाणित पाया जाने पर पांच व्यक्तियों को हिरासत में लेने के बाद पूछताछ कर गिरफ्तार किया गया।

गुलकंद फैक्टरी में जहरीली गैस रिसाव से तीन मजदूर अचेत

पुष्कर, (निसं)। ग्राम चावंडिया में रोशन फूड गुलकंद फैक्टरी में मंगलवार को पानी से टंकी की सफाई के दौरान गैस रिसाव से बड़ा हादसा टल गया। फैक्टरी में गुलकंद निकालने के बाद टंकी की सफाई कर रहे तीन मजदूर जहरीली गैस की चपेट में आने से अचेत हो गए।

प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि मजदूर सोनू टंकी की सफाई के लिए नीचे उतरा था, लेकिन कुछ ही देर जहरीली गैस की चपेट में आने से वे बेहोश हो गया। उसे निकलने के लिए धनराज और दीपू भी टंकी में उतरे तो वो भी गैस की चपेट में आ गए और अचेत हो गए। मौके पर मौजूद अन्य श्रमिकों ने तुरंत शोर मचाया और साथियों की मदद से तीनों मजदूरों को बाहर निकाल कर तत्काल पुष्कर राजकीय चिकित्सालय लाया गया, जहां उनकी हालत गंभीर देख डॉक्टरों ने अजमेर रैफर कर दिया। घटना के बाद गांव में हड़कंप मच गया।

सुरक्षा मानकों की अनदेखी :- स्थानीय लोगों का कहना रहा कि गुलकंद फैक्टरी में सुरक्षा मानकों की अनदेखी की जा रही है। किसी भी टंकी की सफाई से पहले गैस स्तर जांचने के उपकरण, ऑक्सीजन मास्क या वेंटिलेशन सिस्टम मौजूद नहीं हैं। यह लापरवाही मजदूरों की जान पर भारी पड़ी। मीडिया के मौके पर पहुंचने से पहले ही फैक्टरी प्रबंधन ने गेट पर ताला जड़ दिया। ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि हादसे के बाद भी फैक्टरी संचालक घटना को छिपाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीणों ने बताया कि यह फैक्टरी लंबे समय से बदबू, केमिकल प्रदूषण और गंदे पानी के बहाव से ग्रामीण जीवन को प्रभावित कर रही है। कई बार प्रशासन से शिकायतें की गईं, लेकिन अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई। ग्रामीणों ने चेताया कि अगर अब भी कार्रवाई नहीं की गई तो कभी भी बड़ा हादसा हो सकता है। ग्रामीणों की मांग है कि फैक्टरी संचालक के खिलाफ औद्योगिक सुरक्षा कानूनों के तहत सख्त कार्रवाई की जाए और ऐसी इकाइयों को आबादी से बाहर स्थानांतरित किया जाए। पुष्कर थाना पुलिस मामले की जांच कर रही है।

- पानी से टंकी की सफाई के दौरान गैस रिसाव हो गया था

अलवर जिले में मिलावट की आशंका पर खाद्य पदार्थों के नमूने लिए

''शुद्ध आहार मिलावट पर वार'' अभियान के तहत जिले के विभिन्न स्थानों पर कार्रवाई

अलवर, (निसं)। जिला कलेक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला के निर्देशन में दीपावली के त्यौहार पर खाद्य पदार्थों में मिलावट की आशंका को दृष्टिगत रखते हुए जिले में चलाए जा रहे 'शुद्ध आहार मिलावट पर वार' अभियान के तहत के जिले के विभिन्न स्थानों पर जांच हेतु खाद्य पदार्थों के नमूने लेने एवं मिलावटी खाद्य पदार्थों को जब्त करने व नष्ट करने की कार्रवाई की गई।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी अलवर डॉ. योगेंद्र शर्मा ने बताया कि खाद्य सुरक्षा अधिकारियों द्वारा राजगढ़ क्षेत्र के रामसाला मोतीवाड़ा स्थित कलाकंद निर्माण एवं विक्रय इकाई भोले बाबा मिल्क प्रोडक्ट से कलाकंद का नमूना जांच हेतु लिया गया एवं करीब 110 लीटर दूषित दूध एवं 80 किलो दूषित कलाकंद एवं अन्य मिठाई को मौके पर ही नष्ट कराया गया। साथ ही मौके पर रखे करीब 25 किलो स्कीम मिल्क पाउडर एवं करीब 30 किलो रिफाइंड सोयाबीन ऑयल को जब्त किया गया। इसी प्रकार राजगढ़ क्षेत्र में ही स्थित कलाकंद निर्माण एवं विक्रय इकाई एस. वी. फूड से कलाकंद का नमूना जांच हेतु लिया गया एवं करीब 90 लीटर दूषित दूध एवं 50 किलो दूषित कलाकंद एवं अन्य मिठाई को मौके पर ही नष्ट कराया गया तथा मौके पर रखे करीब 25 किलो स्कीम मिल्क पाउडर एवं करीब 45 किलो रिफाइंड सोयाबीन ऑयल को जब्त किया गया। साथ ही दोनों खाद्य कारोबारकर्ताओं को साफ-सफाई नहीं पाए जाने पर नोटिस दिया गया।

उन्होंने बताया कि राजगढ़ कस्बे में मांदरी मोहल्ला स्थित रसगुल्ला निर्माण एवं विक्रय इकाई श्री हरि रसगुल्ला भंडार से रसगुल्ले एवं घी का नमूना जांच हेतु लिया गया एवं करीब 30 किलो दूषित चासनी को मौके पर ही नष्ट कराया गया एवं मिलावट की आशंका होने पर 10 किलो घी को जप्त किया गया। इसी प्रकार गोल मार्केट राजगढ़ स्थित लल्लू राम डेरी से घी का नमूना जांच हेतु लिया गया एवं करीब 14 किलो घी को मिलावट की शंका होने पर जप्त किया गया। खंडेलवाल मिष्ठान भंडार, राजगढ़ से कलाकंद एवं मावे का नमूना जांच हेतु लिया गया। सैनी मिष्ठान भंडार गोल मार्केट राजगढ़ के बाहरला वास स्थित मिठाई निर्माण के कारखाने से मावा एवं दही का नमूना जांच हेतु लिया गया एवं उक्त कारखाने पर रखे करीब 60 किलो एक्सपायर रसगुल्ला एवं करीब 20 किलोग्राम पुरानी सूखी मिठाई को नष्ट कराया गया।

वहीं अलवर शहर में भी विभिन्न स्थानों पर कार्रवाई की गई जिनमें कमल डेयरी 60 फीट रोड अलवर से घी का नमूना जांच हेतु लिया गया, बहरोड रोड, स्कीम नंबर 10, अलवर स्थित बर्गर सिंह (एमजी एसोसिएट) से यूज्ड रिफाइंड पामोलिन तेल का नमूना जांच हेतु लिया गया। उन्होंने बताया कि दीपावली के त्योहार के अवसर पर जिले में मिलावटखोरी पर लगाम लगाने हेतु यह अभियान 19 अक्टूबर तक निरन्तर जारी रहेगा।

- मिलावटी खाद्य पदार्थ होने पर दूषित खाद्य पदार्थों को मौके पर ही नष्ट कराया
- मिलावटखोरी पर लगाम लगाने हेतु अभियान 19 अक्टूबर तक जारी रहेगा

आठ आरोपियों को पकड़ा

गंगापुर सिटी, (निसं)। पुलिस ने एक दिवसीय एरिया डोमिनेशन अभियान चलाकर एटीएम चोरी, अपहरण और आर्मस एक्ट सहित विभिन्न मामलों में वांछित कुल आठ आरोपियों को गिरफ्तार किया है। थानाधिकारी राजवीर सिंह के नेतृत्व में गठित दो टीमों ने अलग-अलग स्थानों पर दबिश देकर आरोपियों को पकड़ा।

एटीएम काटकर नकदी चोरी के मामले में तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। गत दिनों आदर्श नगर स्थित एक्सिस बैंक के एटीएम को गैस कटर से काटकर 3.95 लाख रुपए चोरी किए गए थे। इस मामले में तिजारा, जिला खैरथल निवासी साहुन, आरिफ और अलीजान को दौसा जिला कारागृह से प्रोडक्शन वारंट पर गिरफ्तार किया गया है। आरोपियों से बरामदगी की कार्रवाई जारी है।

अपहरण के एक अन्य मामले में बालोती निवासी रजनेश कुमार और धांधूरेत निवासी सुरेश उर्फ सुस्या को गिरफ्तार किया गया। रिपोर्ट के अनुसार, 20 अगस्त को एक युवक का सालोदा मोड से अपहरण कर बालोती ले जाकर मारपीट की गई थी। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से वारदात में प्रयुक्त बोलेरो वाहन भी जब्त किया है। इसके अतिरिक्त, पूर्व में आर्म्स एक्ट व आबकारी अधिनियम में चालानशुदा चार आरोपियों आजाद खान, उत्तम सिंह, धान सिंह और सलमान खान को भी पकड़ा गया है। ये सभी उदेईमोड व गंगापुर सिटी क्षेत्र के रहने वाले हैं।

नायक सुनील कुमार मीणा का सैनिक सम्मान के साथ अंतिम संस्कार

हजारों महिला-पुरुषों की मौजूदगी में कोठी नारायणपुर से अंतिम यात्रा तिरंगे से सजी बाइकों के साथ पैतृक ग्राम तक निकाली गई

राजगढ़, (निसं)। राजगढ़ क्षेत्र के ग्राम दुब्बी ग्राम निवासी दिल्ली हेडक्वार्टर 5 एसआईजी जीपी सेना में कार्यरत नायक सुनील कुमार मीणा (35) का हजारों लोगों की मौजूदगी में सैनिक सम्मान के साथ मंगलवार को अंतिम संस्कार किया गया। इस दौरान अंतिम संस्कार के समय भारी संख्या में महिलाएं उपस्थित रही। अलवर से जाट रेजीमेंट की टुकड़ी ने दिवंगत सुनील कुमार के सम्मान में सशस्त्र सलामी दी। इससे पूर्व सेना के विशेष वाहन से सुनील कुमार मीणा की पार्थिव देह कोठी नारायणपुर पहुंची। हजारों महिला-पुरुषों की मौजूदगी में कोठी नारायणपुर से अंतिम यात्रा तिरंगे से सजी बाइकों के साथ पैतृक ग्राम तक निकाली गई। इस दौरान थानागाजी विधायक कांतिलाल मीणा, भाजपा नेता बन्नाराम मीणा, राजगढ़ लक्ष्मणगढ़ विधायक मांगेलाल मीणा, आदिवासी सेवा संघ के प्रदेश अध्यक्ष अमरचंद फौजी, उपखंड अधिकारी सीमा मीणा, उपअधीक्षक पुलिस मनीषा मीणा, थानाप्रभारी राजेश मीणा, धारासिंह सहित प्रमुख लोगों ने पुष्पांजलि अर्पित कर वीर शहीद को श्रद्धांजलि दी। नायक सुनील कुमार की अंतिम यात्रा निवास पर पहुंचने के बाद गांव में भारत माता की जय, सुनील कुमार मीणा की जयकारे से माहौल देशभक्ति पूर्ण रहा। विधि विधान के साथ घर से सेना के जवानो ने कंधा देकर स्कूल के समीप पहुंचे। नायक सुनील कुमार के परिवार में पिता माता, बड़ा भाई, बहिन पत्नी एवं 3 वर्षीय पुत्र तनवीर, प्रमुख है। नायक सुनील कुमार अलवर क ईटा राणा के समीप मंगलम रेजिडेंसी में रहते थे। चार दिन पूर्व ही अलवर से दिल्ली गए थे। रविवार रात्रि को सेवा की ओर से 10:30 बजे परिजनों को सुनील कुमार की मृत्यु की सूचना दी। इसके बाद परिजन पहुंचे एवं पार्थिव देह सोमवार रात्रि को अलवर पहुंची। मंगलवार को पैतृक ग्राम में सैनिक सम्मान के साथ हजारों महिला-पुरुषों की मौजूदगी में अंतिम संस्कार किया गया।

अलवर से जाट रेजीमेंट की टुकड़ी ने दिवंगत सुनील कुमार के सम्मान में सशस्त्र सलामी दी।

जिला स्तरीय नार्को कोर्डिनेशन सेंटर की बैठक में अवैध बिक्री, जागरूकता, मॉनिटरिंग पर हुई चर्चा

अधिकारियों की बैठक लेते जिला कलक्टर प्रियंका गोस्वामी ।

■ कलक्टर ने ड्रग इंस्पेक्टर व सीएमएचओ को अनाधिकृत चिकित्सक एवं औषधि विक्रेताओं के विरूद्ध कार्यवाही करने, मेडिकल दुकानों का निरीक्षण करने को कहा

कोटपूतली। नार्को कोर्डिनेशन सेंटर (एन-कोर्ड) की जिला स्तरीय कमेटी की बैठक मंगलवार को कलेक्ट्रेट सभागार में जिला कलक्टर प्रियंका गोस्वामी की अध्यक्षता में हुई।इस दौरान जिला पुलिस अधीक्षक देवेन्द्र कुमार बिश्नोई भी मौजूद रहे। जिला कलक्टर ने जिले में ड्रग इंस्पेक्टर और सीएमएचओ को अनाधिकृत चिकित्सक एवं औषधि विक्रेताओं (झोलाछाप) के विरूद्ध कार्यवाही करने, मेडिकल दुकानों का औचक निरीक्षण करने को कहा. उन्होंने कहा कि मेडिकल स्टोर्स पर प्रतिबंधित घटक दवाओं की बिक्री न हो यह सुनिश्चित करें। अनियमितता पाये जाने पर मेडिकल स्टोर्स के लाईसेंस निरस्त कर कार्यवाही की रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा। उन्होंने शराब बिक्री के लिए सरकार के निर्देशों की पालना नहीं करने वालो, हथकड़ शराब कारोबार में लिप्त लोगों पर कार्यवाही करने एवं फील्ड में जाकर नियमित मॉनिटरिंग के निर्देश एक्साइज विभाग को दिए।

उन्होंने जिले में नशा मुक्ति के लिये समुचित रूप से प्रभावी कार्यवाही करने और नशा मुक्त अभियान में आमजन की सहभागिता और जागरूकता बढ़ाने के लिए चलाए जा रहे अभियान को और प्रभावी करने और शैक्षणिक संस्थाओं में विद्यार्थियों को विभिन्न माध्यमों से नशे के दुष्प्रभावों व रोकथाम के बारे में जागरूक करने हेतु निर्देशित किया।

उन्होंने समाज कल्याण विभाग, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग व पुलिस विभाग के अधिकारी को जिले में नियम विरूद्ध संचालित नशा मुक्ति केंद्रों की जांच कर आवश्यक कार्यवाही कर रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा। बैठक में जिला पुलिस अधीक्षक ने नियम विरूद्ध शराब बिक्री पर जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाते हुए हथकड़ शराब बनाने वालों, हुक्काबार चलाने वालों एवं ई सिगरेट, वीड, ड्रग्स, गांजा एवं नशे की टेबलेट का व्यापार करने वालों पर सख्त कार्यवाही करने को कहा।

उन्होंने सीमावर्ती क्षेत्रों में मादक पदार्थों की तस्करी पर नियंत्रण के लिये अब तक हुई कार्यवाहियों की समीक्षा करते हुए कहा कि समस्त एजेंसियां आपसी तालमेल से तस्करी पर रोक लगायें। नशीले दवाओं के व्यापार में संलिप्त मेडिकल स्टोर व अन्य दुकानदारों व व्यक्ति पर नियमानुसार सख्त कार्यवाही की जाये ताकि इनकी बिक्री और उपयोग पर रोक लगाई जा सके। इस अवसर पर अतिरिक्त जिला कलेक्टर ओमप्रकाश सहारण, एसडीएम बृजेश चौधरी, एएसपी वैभव शर्मा, सहायक आबकारी अधिकारी कुलभूषण, समाज कल्याण अधिकारी विपिन सहित संबंधित शिक्षा एवं पुलिस विभाग के अधिकारी उपस्थित रहें।

छात्रों ने थानाधिकारी के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया

भरतपुर। भुसावर में निजी विद्यालयों के छात्रों ने खेड़ली मोड़ थानाधिकारी के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। छात्रों ने रैली निकालकर थानाधिकारी पर एक निजी विद्यालय के प्राचार्य के साथ कथित बदसलूकी और मारपीट का आरोप लगाते हुए कार्रवाई की मांग की। उन्होंने पुलिस उपाधीक्षक (सीओ) धर्मेंद्र शर्मा को ज्ञापन भी सौंपा। यह मामला बाछरैन गांव के एक निजी विद्यालय के प्राचार्य लवकुश शर्मा के साथ खेड़ली मोड़ थानाधिकारी बलराम यादव द्वारा कथित अमानवीय व्यवहार और मारपीट कर धारा 151 में बंद करने से जुड़ा है। इस घटना के बाद से निजी विद्यालय संचालकों में रोष व्याप्त है, और अब सैकड़ों छात्र भी इस विरोध में शामिल हो गए हैं।

ज्ञापन में बताया गया है कि 26 सितंबर 2025 को थानाधिकारी बलराम यादव ने एक सिपाही को स्कूल की छुट्टी के बाद कुछ बच्चों की टी.सी. लेने भेजा था।

दिव्यांगजन कल्याण दिवस पर हुए कई सांस्कृतिक कार्यक्रम

■ धन्य है सभी गुरूजन जो इन दिव्यांग बालकों को तरास रहे हैं - दिलीप इसरानी

निवाई। योगेश विशेष विद्यालय में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग टोंक एवं योगेश शैक्षिक पुनर्वास एवं शोध संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में दिव्यांगजन कल्याण दिवस एवं समाज कल्याण सप्ताह समारोह का शुभारंभ मुख्य अतिथि नगरपालिका दिलीप इसरानी, अध्यक्षता कर रहे ज्ञानचन्द सोगाणी व संस्था सचिव सीताराम स्वामी ने मां सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित एवं माल्यार्पण करके किया। समारोह में दिव्यांग बालकों द्वारा स्वागत गीत, पिरामिड योगा, सूर्य नमस्कार सहित विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से राष्ट्रभक्ति के भावों के साथ नाटक अभिव्यक्ति के माध्यम से युवा पीढी के सामाजिक संस्कारों में आ रही गिरावट व पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। इसी प्रकार पर्यावरण क्षमता के नुकसान एवं दुष्प्रभाव को व्यक्त कर पेड़ पौधों एवं प्राकृतिक संपदा को बचाने का संदेश दिया। मुख्य अतिथि पालिका अध्यक्ष दिलीप इसरानी ने विद्यालय की गतिविधियों की प्रशंसा करते हुए कहा कि योगेश विशेष विद्यालय ने संपूर्ण राजस्थान में निवाई की अलग पहचान बनाई है। इस प्रकार के विद्यालय की क्षेत्र में महत आवश्यकता थी, जो योगेश विशेष विद्यालय ने पूरी की है। यह विद्यालय दिव्यांग बालकों को ही नहीं सभी दिव्यांगों की समस्याओं का समाधान कर उनका संपूर्ण सहयोग करता रहा है।

उन्होंने कहा कि धन्य है सभी गुरूजन जो इन बालकों को तरास रहे हैं। संस्था सचिव सीताराम स्वामी ने बताया कि विद्यालय में प्रात: खेलकूद प्रतियोगिताएं आयोजित हुई जिसमें बूची, लंबी कूद गोला फेक, कुर्सी दौड़, केरम, निशाना लगाना व गुब्बारा फोड़ प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। जिसमें बालकों ने उत्साह के साथ भाग लिया। विजेताओं और सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले बालकों का स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मान किया गया। समारोह में विशिष्ट अतिथि सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के प्रशासनिक अधिकारी मुकेशकुमार प्रजापत, वरिष्ठ सहायक चाँदमल सैनी, राजस्थान विकलांग मंच निवाई के अध्यक्ष भैरुलाल सेन ने भी विचार व्यक्त किया। संस्था सचिव डॉ सीताराम स्वामी ने संस्था द्वारा दिव्यांग बालकों की शिक्षण प्रशिक्षण सामग्री की प्रदर्शनी का अवलोकन करवाते हुए उनका उपयोग करने की विधि की जानकारी दी तथा संस्थान की गतिविधियों की जानकारी प्रदान की।

इस अवसर पर 08 दिव्यांग बालकों को विभाग द्वारा श्रवण यन्त्र दिए गए। शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र के कोऑर्डिनेटर मनोज स्वामी ने आभार व्यक्त किया। मंच संचालन अरविंदकुमार टेलर ने किया।

अतिक्रमण और अवैध पार्किंग पर की कार्यवाही

अलवर। आने वाले त्योहारों को देखते हुए बाजारों में अवैध तरीके से वाहनों को खड़ा करने और दुकानदारो द्वारा सडक पर अतिक्रमण हटाने के लिए अलवर पुलिस और यातायात पुलिस ने कार्यवाही की है।

एसपी अलवर सुधीर चौधरीने जानकारी देते हुए बताया कि कांबले शरण गोपीनाथ (आईपीएस) अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) जिला अलवर व मुकेश चौधरी सीओं यातायात जिला अलवर के निकटतम सुपरविजन में प्रभारी यातायात शाखा अलवर ने जाब्ता सहित त्यौहार के सीजन को मध्यनजर रखते हुए चर्च रोड, नगर निगम के सामने से लेकर घंटाघर, होपसर्कस से लेकर त्रिपोलिया तक, पंसारी बाजार एवं आस पास की आम सडक़ पर मार्गो के बीच में अवैध पार्किंग में खडे हुए वाहनों के खिलाफ एमवी. एक्ट में कार्यवाही की गई तथा दुकानदारों द्वारा किये जा रहे अतिक्रमण को नगर निगम के सहयोग से हटाया गया। दुकानदारो को आगामी त्योहारों के मध्यनजर अतिक्रमण नही करने की समझाइश की गई।

आम सूचना

मैं अक्षय चावला पिता चंदालाल मैंने कमला देवी पत्नी लालचंद नारोलिया चाकसू से आसोलाई विहार प्लॉट नंबर 14-ए, खरीदा था जिसके कागजात सोसाइटी दलपतपुरा गृह निर्माण समिति द्वारा जारी है उक्त प्लाट के मूल कागजात कहीं खो गए है मिलने पर संपर्क करें मो.नं. 9001728714

आम सूचना मैं मो. अतीक पुत्र मो. सद्दीक, निवासी मं. 709, चीनी की बुर्ज, गणगौरी बाजार जयपुर त्रिपोलिया बाजार जयपुर राजस्थान 302002, ने अपने पुत्र सोहेल खान को उसके गलत चाल चलन एवं व्यवहार के कारण हमेशा के लिये अपनी सम्पूर्ण चल व अचल सम्पत्तियों से बेदखल कर दिया है। मेरा पुत्र सोहेल खान से अब कोई सम्बन्ध व नाता नहीं रहा है तथा मेरी किसी भी चल व अचल सम्पत्तियों में किसी प्रकार का सोहेल खान का कोई हक व अधिकार नहीं होगा। जो भी व्यक्ति उससे किसी भी प्रकार का लेन देन करेगा वह व्यक्ति स्वयं ही जिम्मेदार होगा। अतः मेरे पुत्र सोहेल खान द्वारा किये गए किसी भी कृत्य व लेन देन का जिम्मेदार मै नहीं हूँ।

आदिल अहमद कुरैशी, एडवोकेट
मो.नं. 7742939786

NOTICE

Kapil Saraf Passport No. 51231825 S/o Shri Sitaram Beswal and Smt. Sudha Devi R/o Near Pani ki tanki, ward no.22, Mukundgarh, Dist. Jhunjhunu, Rajasthan/Thalku Bhunkhel, Ward 18, Kathmandu, Nepal. Tamnna Agrawal Passport No. 06027303279 D/o Sudhir Goyal Agrawal and Smt. Madhuri Agrawal R/o 1/39, Purano Bazar, Sunsari, Dharan, Nepal Address in Nepal have got married at Hotel Anand, Pashupati Airport Road, Kathmandu Date of Marriage Friday, 04 July 2025 as per Indian Traditions. Since, then we have been Living as Husband and Wife. We have published this notice for Registration of our Marriage at Embassy of India, Kathmandu. If anyone has any objection to the marriage, He/she can contact +977-9851107021 and Embassy of India, Kathmandu on cons.kathmandu@mea.gov.in

20 महीने से फरार चल रहा मादक पदार्थ सप्लायर गिरफ्तार

नारायणपुर पुलिस ने फरार चल रहे मादक पदार्थ सप्लायर को गिरफ्तार किया।

नारायणपुर। नारायणपुर पुलिस ने नशे के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए मंगलवार को लंबे समय से फरार चल रहे मादक पदार्थ सप्लायर को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान मुरारी लाल (35) पुत्र चिरंजी लाल सैनी निवासी बास बैरिसाल तन नारायणपुर के रूप में हुई है, जो करीब 20 महीने से पुलिस को चकमा देकर फरार चल रहा था। थानाधिकारी रोहिताश कुमार ने बताया कि पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली थी कि आरोपी ट्रेलर में बैठकर जा रहा है।

इस पर पुलिस ने तत्परता दिखाते हुए प्रागपुरा से आरोपी को ट्रेलर से पकड़ लिया। गौरतलब है कि 15 जनवरी 2024 को राजपुरा मोहल्ले में एक लावारिस पिकअप संदिग्ध हालात में खड़ी मिली थी। जब पुलिस ने वाहन की तलाशी ली तो उसमें आंवला से भरे 30 कट्टों के नीचे छिपाकर रखे गए 6 काले प्लास्टिक कट्टों में करीब 1 क्विंटल 19 किलो डोडा पोस्त चूरा बरामद किया गया था।

इस मामले में एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर वाहन जब्त कर लिया गया था, जबकि पिकअप चालक व मादक पदार्थ सप्लायर मौके से फरार हो गए थे। पुलिस की विशेष टीम ने मामले में लगातार निगरानी रखते हुए आरोपी की तलाश जारी रखी और आखिरकार मंगलवार को मुख्य सप्लायर मुरारी लाल सैनी को गिरफ्तार कर लिया।

बॉलीवुड म्यूजिकल नाइट में उमड़े लोग

निवाई। प्रताप स्टेडियम में नगरपालिका मण्डल के तत्वावधान में बॉलीवुड म्यूजिकल नाइट कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें पन्या सेपट व योगेश रजवाड़ा, बॉलीवुड डांस ग्रुप, पिहू जैन एंड डांस ग्रुप द्वारा कई सांस्कृतिक व राजस्थानी कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दी गई। इसी प्रकार बॉलीवुड प्लेबैक द्वारा नए-पुराने नगमों की प्रस्तुतियां सहित कई रंगारंग कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दी गई जिसको देखने के लिए शहर सहित ग्रामीण क्षेत्र से महिला व पुरूषों की भीड़ उमड़ पड़ी। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि विधायक रामसहाय वर्मा, नगरपालिका अध्यक्ष दिलीप इसरानी, शहर मंडल अध्यक्ष नितिन छाबड़ा व अधिशाषी अधिकारी मनोहरलाल जाट ने सरस्वती माता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित करके किया। बॉलीवुड म्यूजिकल नाइट कार्यक्रम में मानसिंह गौरा सिंह के सानिध्य में बोम्बे की डांसर पीहू जैन द्वारा बॉलीवुड म्यूजिकल डांस सहित कई रंगारंग कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दी।

कार्यालय उप तहसीलदार उप तहसील बगरू तह. सांगानेर

क्रमांक/भू.अ./2025/1724 दिनांक-06.10.2025

आम सूचना

जरिये प्रार्थना पत्र प्रार्थी श्री सन्दीप सिंह पुत्र मदनलाल जाति धानक निवासी ए-699 विद्युत नगर जयपुर द्वारा मृतक खातेदार सरती देवी पत्नि रामजीलाल जाति धानक के नाम ग्राम पृथ्वीसिंहपुरा उर्फ नाईवाला के ख.नं. 340, 345, 386, 388/553 किता-4 रकबा 0.59 हैक्ट. हिस्सा सम्पूर्ण की विरासत का नामान्तरण मृतक खातेदार के बजाय मुताबिक वसीयतनामा के सन्दीपसिंह पुत्र मदनलाल जाति धानक निवासी ए-699, विद्युत नगर जयपुर के पक्ष में खोलने की कार्यवाही कार्यालय हाजा में प्रकरण संख्या 17/2025 अन्तर्गत धारा 135(2) राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 के तहत विचाराधीन है।
खातेदार सरतीदेवी पत्नि रामजीलाल जाति धानक निवासी ग्राम थसेडा तह. बुहाना जिला झुंझुनू की दिनांक 08.03.2015 को मृत्यु हो चुकी है। वसीयत दिनांक 14.09.2013 के आधार पर मृतक खातेदार के बजाय सन्दीपसिंह पुत्र मदनलाल जाति धानक निवासी ए-699 विद्युत नगर जयपुर के पक्ष में विरासत का नामान्तरकरण खोले जाने पर किसी व्यक्ति/संस्था को कोई आपत्ति/दावा/हक अथवा अन्य कोई वसीयत हो तो इस आम सूचना के प्रकाशन के 07 दिवस में स्वयं अथवा प्लीडर के माध्यम से अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष प्रस्तुत करें। कोई दावा/आपत्ति प्राप्त नही होने पर प्रकरण का निस्तारण नियमानुसार कर दिया जायेगा। सूचित रहें।

उप तहसीलदार, बगरू, जिला जयपुर

नम्बर मिलाइए
9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

जिला कलक्टर ने ली जिला निष्पादन समिति की समीक्षा बैठक

■ मिड-डे मील योजना की समीक्षा कर शिक्षा विभाग के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए

कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला ने कलक्ट्रेट सभागार में जिला निष्पादन समिति की बैठक ली।

अलवर। जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला ने आज कलक्ट्रेट सभागार में जिला निष्पादन समिति की बैठक लेकर प्रोजेक्ट ई-विद्या, बोर्ड परीक्षा परिणाम उन्नयन कार्ययोजना एवं मिड-डे मील योजना की समीक्षा कर शिक्षा विभाग के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। बैठक में जिला कलक्टर ने शिक्षा विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया उच्च शैक्षिणक गुणवत्ता पर विशेष फोकस करते हुए विद्यार्थियों का लर्निंग आउटकम बढ़ाने का प्रयास करें। इसके लिए उन्होंने निर्देश दिए कि विशेष अभियान के माध्यम से बोर्ड परीक्षा कक्षा दसवीं व बारहवीं के विद्यार्थियों की श्रेणी निर्धारित की गई ए, बी व सी श्रेणी में अपग्रेडेशन किया जावे। इसके लिए उन्होंने प्रथम टेस्ट में 40 प्रतिशत तथा अद्र्ध वार्षिक परीक्षा में शत प्रतिशत चिन्हित विद्यार्थी अपनी श्रेणी से अपग्रेड होवे। राज्य सरकार से प्राप्त राशि 61.5 लाख रूपये से 90 स्कूलों में स्मार्ट टीवी लगेंगे, 20 स्कूलों में जहां छात्राओं की संख्या अधिक है एवं टॉयलेट ठीक स्थिति में नहीं है वहां टॉलेट्स का अपग्रेडेशन, 2 स्कूलों में लर्निंग एक्टिविटिज तथा एक स्कूल में डिजिटल लैब बनेगी। उन्होंने निर्देश दिये कि इस राशि का सदुपयोग इस प्रकार से किया जावे कि जिससे विद्यालय के विकास के साथ विद्यार्थियों के शैक्षिणक स्तर में उच्च स्तरीय सुधार होवे जिला कलक्टर ने निर्देशित किया कि प्रोजेक्ट ई-विद्या के तहत जिले में पीईईओ स्तर के 210 क्रियाशील ई-लाइब्रेरी एवं 33 प्रगतिरत ई-लाइब्रेरी वाले विद्यालयों के अतिरिक्त शेष में यथाशीघ्र लाइब्रेरी की स्थापना सुनिश्चित करें। उन्होंने निर्देश दिए कि डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विद्यार्थियों की सहभागिता से प्रत्येक विद्यालय की ई - मैगज़ीन एवं ब्लॉग क्रिएशन कर बच्चों से रचनात्मक लेखन करवाएं।

जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर
सार्वजनिक सूचनाः

क्रमांक: जविप्रा/उपा./जोन-12/2025/डी- दिनांक: 07.10.2025

जोन-12 में निम्न आवेदक द्वारा नाम हस्तांतरण पत्र हेतु आवेदन किया गया है जिनका विवरण निम्नानुसार है:-

क्र. सं.	आवेदक का नाम	मूल आवंटी/ लीजडीड धारक का नाम	भूखण्ड संख्या एवं भूखण्ड का क्षेत्रफल वर्गगज	गृ.नि.स. सं. निजी खातेदारी योजना/ जविप्रा योजना	योजना का नाम	सेवा जिस के लिए आवेदन किया गया	कार्यवाही हेतु प्रस्तुत दस्तावेज
1.	श्री आकाश टांक पुत्र श्री वासुदेव टांक	श्रीमती अल्का खण्डेलवाल पत्नि श्री दिनेश कुमार खण्डेलवाल	ई-132 एवं 45.00 वर्गमीटर	जयपुर विकास प्राधिकरण	रघुनाथ विहार	नाम हस्तांतरण हेतु	एक से अधिक बार विक्रय पत्र होने से।

उपरोक्त का नाम हस्तांतरण पत्र जारी करने में किसी भी व्यक्ति/ हितधारी/ संस्था को कोई आपत्ति हो तो 7 दिवस में जोन-12 कार्यालय में आपत्ति दर्ज करवायें, अन्यथा नियमानुसार उक्त भूखण्ड का नाम हस्तांतरण/ प्रतिस्थापन की कार्यवाही आवेदक के पक्ष में कर दिया जावेगा। उपायुक्तः जोन-12, जविप्रा, जयपुर।

कार्यालय नगर पालिका दूदू, जिला जयपुर

क्रमांक- न.पा.दु./2025-26/459 दिनांक-06.10.2025

आपत्ति सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि नगर पालिका में निम्नानुसार आवेदकों ने अपने स्वामित्व दस्तावेजों के साथ आबादी भूमि नियमन हेतु आवेदन किया है।

क्र.सं.1-01, आवेदक का नाम- दूदू ग्राम सेवा सहकारी समिति लिमिटेड, दूदू, पता- सरकारी अस्पताल के पास, दूदू, नाप (वर्गमीटर में)- 334.45, 02-श्रीमति कोशल्या पत्नी श्री रोडमल शर्मा, मालपुरा रोड दूदू, 264.21, 03-श्री भंवर लाल शर्मा पुत्र श्री मुल चन्द शर्मा, मालपुरा रोड दूदू, 486.71

अतः उपयुक्त आवेदकों के पक्ष में आबादी भूमि नियम (पट्टा) जारी करने बाबत किसी भी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो वह अपनी आपत्ति लिखित में मय दस्तावेज इस सूचना के जारी होने से 07 दिवस में इस कार्यालय में प्रस्तुत कर दें बाद मियाद प्रस्तुत आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जायेगा। सूचना में अंकित अवधि पश्चात पत्रावलियों के निस्तारण की कार्यवाही की जावेगी।
यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधिन आज दिनांक....को जारी की गयी।

अधिशाषी अधिकारी, नगर पालिका दूदू जिला जयपुर

विवाद्यकों के स्थिरीकरण के लिए सम्मन
(आदेश 5 के नियम 1 और 5)
न्यायालय श्रीमान न्यायाधिकारी ग्राम न्यायालय बस्सी जिला जयपुर राज.
महेश अग्रवाल बनाम नवनीत सैनी व अन्य
वाद पत्र बाबत स्थाई निषेधाज्ञा बाबत
वाद संख्या 19सन् 2025

1. प्रेम प्रकाश अरोडा पुत्र श्री प्रभूदयाल अरोडा, 2. गगन गोल्डी पुत्र श्री प्रेम प्रकाश अरोडा, 3. बीना मनचन्दा पत्नी स्व. श्री वेदप्रकाश मनचन्दा, पुत्री प्रभूदयाल अरोडा समस्त जातियान पंजाबी, निवासी 277, गुरूनानकपुरा, राजापार्क जयपुर राज. हाल निवासी 2/606 जवाहर नगर, जयपुर पूर्व
वादी ने आपके विरूद्ध उपरोक्त के लिए वाद संस्थित किया है। आपको इस न्यायालय में दिनांक 10 माह 10 सन् 2025 को दिन में 10.00 बजे दावे का उत्तर देने के लिये उपसंजात (हाजिर) होने के लिये सम्मन किया जाता है। आप न्यायालय में स्वयं या किसी प्लीडर द्वारा उपसंजात हो सकते हैं जिसे सम्यक अनुदेश दिए गये हों और जो इस वाद से सम्बन्धित सभी सारवान प्रश्नों का उत्तर दे सके या जिसके साथ ऐसा कोई व्यक्ति हो जो ऐसे सब प्रश्नों का उत्तर दे सके। आपको यह निर्देश दिया जाता है कि आप उस दिन अपनी प्रतिरक्षा का लिखित कथन दाखिल करें और उस दिन ऐसे सब दस्तावेज जो आपके कब्जे या शक्ति में है पेश करें जिन पर आपकी प्रतिरक्षा या मुजराई का दावा या प्रतिदावा आधारित है। और यदि आप किसी अन्य दस्तावेज पर, चाहे वह आपके कब्जे व शक्ति में हो या ना हो, अपना प्रतिरक्षा या मुजरा के दावे या प्रतिदावे के समर्थन मे साक्ष्य के रूप में निर्भर करते हैं तो आप ऐसी दस्तावेजों को लिखित कथन के साथ उपाबद्ध की जाने वाली सूची में प्रविष्ट करें।
आपको सूचित किया जाता है कि यदि आप ऊपर बताई गई तारीख को इस न्यायालय में उपसंजात नहीं होंगे तो वाद की सुनवाई और उसका निपटारा आपकी अनुपस्थिति में किया जायेगा।
यह आज दिनांक 18 माह 09 सन् 2025 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगाकर दिया गया है।

मोहर अदालत

न्यायाधिकारी
ग्राम न्यायालय, बस्सी
जयपुर महानगर प्रथम

स्वच्छ फुलेरा-स्वस्थ फुलेरा
प्ररूप-10 (नियम 6 (7) देखिए)
प्राधिकृत अधिकारी का कार्यालय, नगर पालिका मण्डल, फुलेरा

क्रमांक/न.पा.फु./2025-26/1820 दिनांक-07.10.2025

लोक सूचना

श्रीमती सुरज्ञान देवी पत्नि श्री मानाराम निवासी ग्राम पोस्ट श्रीरामपुरा वाया नरायना, तहसील फुलेरा जिला जयपुर (राज.) ने इस कार्यालय में नीचे उल्लिखित भूमि का गैर-कृषिक प्रयोजन के उपयोग (भू-रूपान्तरण) हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिधृति अधिकारों के निर्वापन के लए आवेदन प्रस्तुत किया है, अर्थात-

जिले सहित तहसील का नाम-जिला जयपुर तहसील फुलेरा, ग्राम का नाम-फुलेरा, खसरा नं. खसरा नम्बर 341/2 रकबा 2.0232 हैक्टेयर, किस्म बारानी 2 कुल खसरा 01 कुल रकबा 2.0232 हैक्टेयर भूमि में से 2 हैक्टेयर अर्थात 20000 वर्गमीटर भूमि, क्षेत्र-2.0232 हैक्टेयर भूमि में से 2 हैक्टेयर अर्थात 20000 वर्गमीटर भूमि

इसलिए इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्ति को राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम, 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोगार्थ हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिन के भीतर-भीतर किसी कार्य दिवस पर कार्यालय समय के दौरान अधोहस्ताक्षर के समक्ष समर्थक दस्तावेजों के साथ आक्षेप प्रस्तुत कर सकेगा। उपर्युक्त नियत समय के भीतर-भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जायेगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तदनुसार मामले का निपटारा किया जायेगा।
यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज ..... को जारी की गयी।

(सूर्यकान्त शर्मा) प्राधिकृत अधिकारी
नगर पालिका मण्डल फुलेरा

नाम संशोधन

मैं कप्तान सिंह पुत्र श्री उमराव सिंह आयु 38 साल जाति गुर्जर निवासी नौरंगाबाद तहसील श्रीमहावीरजी जिला करौली राजस्थान शपथपूर्वक बयान करता हूं कि राहुल पंवार मेरा सगा पुत्र है। मेरे पुत्र के स्कूल प्रवेश के समय गलती से मेरे पुत्र का नाम RAHUL व मेरे पुत्र की मां का नाम SANTOSH व मेरे पुत्र की जन्म दिनांक 20.12.2012 करवा दी गई थी जो कि गलत है। जबकि सही नाम RAHUL PANWAR व मेरे पुत्र की मां का सही नाम SANTOSH DEVI व मेरे पुत्र की सही जन्म दिनांक 25.10.2012 है जो मेरे पुत्र के जन्म प्रमाण पत्र में भी दर्ज है यही सही है। भविष्य में इन्हे सही नाम जन्म तिथि से जाना जावें। - हस्ताक्षर

नोटिस हरखास व आम
न्यायालय अपर जिला वम सैंशन न्यायाधीश क्रम सं. 1 हिण्डौन सिटी जिला करौली
पीठासीन अधिकारी:- मु.नं. 30/2024
बिट्टू बनाम शाखा प्रबन्धक एसबी आई बैंक शाखा निम्बाहेडा आदि
प्रार्थना पत्र अंतर्गत धारा 372 भारतीय उत्तराधिकार अधिनियम बाबत उत्तराधिकार प्रमाण पत्र. जारी करने
नोटिस बनाम हर खास आम

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक प्रार्थी बिट्टू पुत्र स्व. जसवन्त सिंह गुर्जर उम्र 11 साल नि. मोडान का पुरा (लाहुरी) तहसील टोडाभीम हाल टोडाभीम हाल तहसील हिण्डौन जरिये संरक्षक विनोद सिंह पुत्र रामनिवास जाति गुर्जर नि. मोडान का पुरा (लाहुरी) तहसील टोडाभीम हाल तह. हिण्डौन ने इस न्यायालय में अपने पिता स्व. जसवन्त सिंह गुर्जर फौज से सन 2012 में सेवानिवृति के बाद एस बी आई बैंक आदि विपधीगण सं. 1 व 2 के यहां सुरक्षा कर्मी के पद पर नियुक्त होने के बाद कोराना काल में दि. 18.5.2021 को प्रार्थी के पिता जसवन्त सिंह की दि. 18.5.2021 को मृत्यु हो गयी जिस मृतक पिता जसवन्त सिंह के नौकरी करने के दौरान मरणोपरान्त सेवा परिलाभों का भुगतान प्राप्त करने हेतु उत्तराधिकार प्रमाण पत्र बाबत प्रार्थना पत्र पेश किया है। लिहाजा जिस किसी व्यक्ति को कोई उज्र या आपत्ति हो तो वह स्वयं असालतन या अपने प्लीडर सहित दि. 17.10.2025 को समय 10:30 बजे उपस्थित होकर अपना उज्र पेश करे। अन्यथा एक पक्षीय सुना जाकर निर्णित कर दिया जावेगा। अत: यह नोटिस आज दि. 4.10.2025 को मेरे हस्ताक्षर व न्यायालय की मुद्रा से जारी किया गया।

रीडर- न्यायालय अपर जिला एवम् न्यायाधीश क्रम सं. 1 हिण्डौन सिटी जिला करौली राज.।

जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर

क्रमांक: ज.वि.प्रा./उपा./जोन-8/2025/डी- **विज्ञप्ति** दिनांक: 04.10.2025

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि इन्द्रा गृह निर्माण सहकारी समिति की योजना श्रीकुशल नगर के भूखण्ड संख्या 104 क्षेत्रफल 177.95 वर्ग गज का पट्टा 05.06.2008 श्री बाला प्रसाद सैनी पुत्र श्री राधेश्याम सैनी के नाम से जारी किया गया था। श्री बाला प्रसाद सैनी की मृत्यु दिनांक 10.05.17 को हो जाने के पश्चात इनके विधिक वारिसानों द्वारा श्रीमती सरोज सैनी पत्नी स्व. श्री बाला प्रसाद सैनी के पक्ष में रजिस्टर्ड हकत्याग निष्पादित किया गया। वर्तमान में इनके द्वारा उक्त भूखण्ड का नाम हस्तान्तरण किये जाने हेतु निवेदन किया गया है। इस संबध में यदि किसी व्यक्ति/संस्था/हितधारी को कोई आपत्ति हो, तो विज्ञप्ति प्रकाशन दिनांक से 07 दिवस में अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष आपत्ति प्रस्तुत कर दें, अन्यथा बाद-मियाद आवेदक के पक्ष में लीजडीड/नाम हस्तान्तरण पत्र जारी कर दिया जावेगा। बाद मियाद पश्चात कोई आपत्ति स्वीकार नहीं होगी। उपायुक्त जोन-8 जविप्रा, जयपुर

कार्यालय उप आवासन आयुक्त राजस्थान आवासन मण्डल वृत अलवर
आवश्यक सूचना

आवास संख्या 1 घ 6, सी.ई.बी. योजना, अलवर जो कि मूलतः श्री रामप्रकाश सतीजा पुत्र श्री भगवानदास को आवंटन पत्रांक 15356 दिनांक 11.12.1975 के द्वारा आवंटित किया गया था। मण्डल द्वारा श्री रामप्रकाश सतीजा को आवास का कब्जा दिनांक 24.02.1976 को संभलवाया जा चुका था। मण्डल द्वारा आवास का अदेय प्रमाणपत्र क्रमांक 373 दिनांक 30.04.2001 को श्री रामप्रकाश सतीजा के पक्ष में जारी कर दिया गया था। श्री रामप्रकाश सतीजा की मृत्यु दिनांक 09.05.2009 को हो जाने के उपरान्त उनकी उत्तराधिकारिणी पत्नी द्वारा मण्डल नियमानुसार प्रस्तुत शपथपत्रों एवं अन्य आवश्यक दस्तावेजों के आधार पर मण्डल के कार्यालय आदेश क्रमांक 2111 दिनांक 07.10.2009 को आवास का मृत्यु उपरान्त नाम हस्तांतरण श्रीमती सत्यावन्ती के पक्ष में जारी कर दिया गया। श्रीमती सत्यावन्ती की मृत्यु दिनांक 20.08.2016 को हो जाने के उपरांत उनके उत्तराधिकारी पुत्रों श्री गुलशन अरोड़ा व श्री हंसराज अरोड़ा द्वारा प्रस्तुत पंजीकृत वसीयतनामा दिनांक 23.06.2011 व मण्डल नियमानुसार प्रस्तुत आवश्यक शपथपत्रों एवं अन्य प्रपत्रों के आधार पर उक्त आवास का संयुक्त रूप से मृत्यु उपरान्त नाम हस्तांतरण किये जाने हेतु शुल्क जमा करा कर आवेदन किया गया है। अतः जरिये इस विज्ञप्ति यह आगाह किया जाता है कि उक्त आवास संख्या 1 घ 6, सी.ई.बी. योजना, अलवर के सम्बन्ध में पिता, पुत्र, पुत्री, भाई, अन्य किसी रिश्तेदार व्यक्ति विशेष या हितकारी को एवं आम व्यक्ति विशेष को उज़र एतराज हो तो वह इस विज्ञप्ति के प्रकाशित होने के 10 दिवस में, राजस्थान आवासन मण्डल वृत अलवर में अपना एतराज लिखित में प्रस्तुत करें अन्यथा श्री गुलशन अरोड़ा व श्री हंसराज अरोड़ा पुत्रान स्व. श्री रामप्रकाश सतीजा के पक्ष में आवास का संयुक्त रूप से मृत्यु उपरान्त नाम हस्तांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

उप आवासन आयुक्त, राजस्थान आवासन मण्डल, वृत अलवर

प्रपत्र संख्या 7
(देखिये नियम 21)
कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम) देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18 (2) के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को

मुकदमा नम्बर DEV/JAIPUR-I/TRUST/2025/760
चूंकि प्रार्थी श्री SHREE BHUPENDRA SINGH DUDU TEHSIL DUDU JILA JAIPUR ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17(1) के अन्तर्गत प्रन्यास SHREE SHYAM MANDIR SEVA COMMITTEE DUDU JILA JAIPUR, SHREE SHYAM MANDIR SEVA COMMITTE TRUST FARM HOUSE KRISHI MANDI ROAD MUKAM POST DUDU JILA JAIPUR के सम्बन्ध में अग्रिम जांच किये जाने के लिए आवेदन पत्र दिया है।
अतएवं धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करें।
और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां नहीं की गई तो उक्त आवेदन पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा।
आज दिनांक 01.10.2025 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया।
आइदा तारीख पेशी 11.12.2025

मोहर अदालत

सहायक आयुक्त
देवस्थान विभाग, जयपुर-प्रथम

नाम परिवर्तन

मैं गुडिया रानी पत्नी श्री विजय सिंह पुत्री श्री चन्द्र शेखर चोधरी उम्र 33 वर्ष निवासी प्लाट नं. 94 एस-ब्लॉक, नारायण विहार, कास्टल क्लाउड स्कूल के पास, मानसरोवर जयपुर (राज.) अपना नाम बदलकर गरिमा सिंह रख लिया है। भविष्य में गरिमा सिंह नाम से जाना पहचाना जाए।

मैं मुकेश वर्मा पुत्र श्री साधु राम कालावत, 48 शिव विहार मीनावाला पांच्यावाला जयपुर राज. पासपोर्ट में मेरा नाम मुकेश कुमार वर्मा दर्ज है, अन्य दस्तावेजों आधार कार्ड, पेनकार्ड आदी में मेरा नाम मुकेश वर्मा है, दोनों नाम मेरे ही है, भविष्य में मुझे मुकेश वर्मा के नाम से जाना जावें।

मैंने अपना नाम हेमन्त कुमार जोशी से बदलकर हेमन्त जोशी रख लिया है। भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना जाए। निवासी-4415 पुरानी कोतवाली का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

I Mohta Kamna Ramesh Kumar R/o Address: 507 altura 2, plot number 5, Mamta residency, sumer Nagar, Mansarovar, Jaipur as changed my Name from Mohta Kamna Rameshkumar to Kamna Mundhra for all future purposes.

Manish Kumar & Nisha Dhir R/o 67 G.P. Colony New Sanganer Road Mansarovar Jaipur 302029 Changing our Son Name from Yuvraj Kumar to Yuviaj Talwaniya for all future purposes.

आम सूचना सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे मुवक्किल श्री शाहबुद्दीन पुत्र श्री शमसुर रहमान निवासी मकान नम्बर 2457, मौहल्ला पहाडगंज सूरजपोल जयपुर ने मकान सर्वे नम्बर 24707 मकान नम्बर 3493 मीठी कोठी का रास्ता, मोहम्मदी हॉस्पिटल के पास, सूरजपोल गेट जयपुर बून्दू खान के वारिसान जमीला बानो, ताहिर खान, जाहिद खॉ, साजिद खान, सादिका, शकीला बेगम, सायरा बानो, साजिदा बेगम, अकबर खान, फरजाना बानो, निलोफर बानो, आजम खान, शाहबाज खान, जावेद से खरीद करने का इकरारनामा कर रखा है कोई भी व्यक्ति उक्त मकान के सम्बन्ध में कोई आपत्ति रखता है तो वह मेरे कार्यालय में 7 दिवस में सूचित करें व उक्त सम्पत्ति को खरीदने की चेष्ठा ना करें क्योंकि उक्त सम्पत्ति मेरे मुवक्किल ने खरीद कर रखी है।
दिनांक-7.10.2025 शमी अली, एडवोकेट, मो.-9828075086

राजस्थान आवासन मण्डल, वृत्त-प्रथम, प्रताप नगर, जयपुर

क्रमांक-7400 दिनांक-26.09.2025

जाहिर आम-सूचना

राजस्थान आवासन मण्डल की प्रताप नगर, सांगानेर योजना में आवास संख्या 76/291 (MIG-A), (एरिया 72.000 वर्गमीटर) प्रताप नगर, सांगानेर का आवंटन श्री प्रभु मोर्या पुत्र श्री गंगा राम मोर्या को किया जाकर आवंटन पत्र क्रमांक 1683 दिनांक 14.05.2013 एवं संशोधित आवंटन पत्र क्रमांक 7632 दिनांक 14.06.2013 को जारी किया गया। श्री प्रभु मोर्या द्वारा श्री भरत बदलानी पुत्र स्व. श्री कीमत राय बदलानी को दिनांक 20.07.2012 को मुख्त्यारनामा आम धारक नियुक्त किया गया। श्री भरत बदलानी के द्वारा मुख्त्यारनामा आम की हैसियत से श्री प्रभु मोर्या के पक्ष में पंजीयन प्रपत्र उप पंजीयक, सांगानेर-प्रथम, जयपुर के यहां दिनांक 11.09.2013 को पंजीकृत करवाये गये।
श्री भरत बदलानी द्वारा मुख्त्यारनामा आम की हैसियत से उक्त आवास को दिनांक 13.09.2013 के द्वारा श्रीमती लता बदलानी पत्नी श्री भरत बदलानी को विक्रय कर उप पंजीयक सांगानेर-प्रथम, जयपुर के यहां विक्रय पत्र पंजीकृत करवाया गया। श्रीमती लता बदलानी द्वारा उक्त आवास को दिनांक 08.03.2014 के द्वारा श्री पारस चन्द जैन पुत्र श्री नेमी चन्द जैन को विक्रय कर उप पंजीयक सांगानेर द्वितीय जयपुर के यहां विक्रय पत्र का पंजीकृत करवाया गया। श्री पारस चन्द जैन की मृत्यु दिनांक 22.01.2023 को हो जाने के कारण इनके उत्तराधिकारी श्री अभय जैन एवं श्री प्रवीण जैन पुत्रान श्री पारस चन्द जैन द्वारा उक्त आवास को स्वयं के नाम हस्तान्तरण करने हेतु आवेदन किया गया है।
अतः उक्त आवास के हस्तान्तरण बाबत किसी व्यक्ति/पक्षकार को कोई आपत्ती हो तो अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में 7 दिवस में अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें अन्यथा यह मानते हुए की मण्डल रिकार्ड में नाम दर्ज करने में किसी को कोई आपत्ति नहीं है श्री अभय जैन एवं श्री प्रवीण जैन पुत्रान श्री पारस चन्द जैन का नाम मण्डल रिकार्ड में दर्ज कर दिया जावेगा।

सम्पदा प्रबन्धक, वृत्त-प्रथम, राज.आवा. मण्डल, जयपुर

न्यायालय तहसीलदार (भू.अ.) दूदू जिला जयपुर

क्रमांक-भू.अ./2025/2663 दिनांक-03.10.2025

आम सूचना

जरिये प्रार्थना पत्र प्रार्थी श्री नारायण पुत्र मंगल जाति गुर्जर निवासी चरासडा द्वारा मृतक खातेदार मंगला पुत्र भैरू जाति गुर्जर निवासी चरासडा के नाम ग्राम चरासडा में दर्ज खाता सं. 102 कुल किता 01 रकबा 3.39 हैक्ट. में हिस्सा 1/4 खाता संख्या 100 कुल किता 01 रकबा 10.67 हिस्सा 1/12 खाता संख्या 101 कुल किता 09 रकबा 9.76 हिस्सा 1/4 खाता संख्या 103 कुल किता 01 रकबा 2.64 हिस्सा 1/4, खाता संख्या 76 कुल किता 01 रकबा 0.03 हिस्सा 1/8, खाता संख्या 80 कुल किता 01 रकबा 1.66 हिस्सा 1/5 की विरासत का नामान्तरण मृतक खातेदार के बजाय नारायण पुत्र मंगल जाति गुर्जर निवासी चरासडा के पक्ष में खोलने की कार्यवाही कार्यालय हाजा में प्रकरण संख्या 11/2025 अन्तर्गत धारा 135(2) राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम-1956 विचाराधीन है।
खातेदार मंगला पुत्र भैरू जाति गुर्जर निवासी चरासडा की दिनांक 25.12.2024 को ही मृत्यु हो चुकी है। रजिस्टर्ड वसीयत दिनांक 06.12.1995 के आधार पर मृतक खातेदार के बजाय नारायण पुत्र मंगल जाति गुर्जर निवासी चरासडा के पक्ष में विरासत का नामान्तरण खोले जाने पर किसी व्यक्ति/संस्था को कोई आपत्ति/दावा/हक अथवा अन्य कोई वसीयत हो तो इस आम सूचना के प्रकाशन के 07 दिवस में स्वयं अथवा प्लीडर के माध्यम से अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष प्रस्तुत करें। कोई दावा/आपत्ति प्राप्त नहीं होने पर प्रकरण का निस्तारण नियमानुसार कर दिया जायेगा। सूचित रहे।

तहसीलदार (भू.अ.) दूदू, जयपुर

खोया पाया

प्लॉट नं. 5 पवनपुत्र-डी विस्तार पाच्यावाला सिरसी रोड (मीनावाला गृह निर्माण सहकारी समिति लि. जयपुर) का मूल पट्टा रसीद साइट प्लॉन खो गया है मिलने पर सूचित करें- भगवान सिंह-9114883952

मैं नवीन चन्द थापलियाल पुत्र स्व. श्री गोपाल बल्व प्लाट नं. एफ-66 सुन्दर मार्ग सी-स्कीम जयपुर का असल पट्टा मय साइड प्लान जो कि नगर विकास न्यास जयपुर द्वारा जारी किया गया था। उक्त दस्तावेज बगडिया भवन से प्लाट नं. एफ-66 के बीच में कहीं भी गुम हो गये। जिस किसी मिले वो उक्त पते पर सूचित करें। नवीन चन्द थापलियाल मो. 9214593491

मेरा मकान सं. 29-5-6 घरोंदा प्रताप नगर सांगानेर जयपुर का मूल आवंटन पत्र, कब्जा पत्र भौतिक कब्जा पत्र, जमा रसीदें, कहीं गुम हो गयी है। मिलने पर सम्पर्क करें। विजय लता जैन - 8619746748

मेरा मकान सं. 7/GH4/B-309, Indra Gandhi Nagar, Jagat Pura, Jaipur का मूल आवंटन पत्र कहीं गुम हो गया है। मिलने पर सम्पर्क करें- 9351385331

प्लॉट संख्या ए-1-सी, योजना जे.पी. कॉलोनी, जयपुर की समिति माधव नगर गृ.नि.स.स. द्वारा जारी रसीद गुम हो गई है। मिलने पर सम्पर्क करें। लक्ष्मी देवी-8739950008

प्लॉट संख्या 41, योजना गणेश नगर, सोडाला की समिति श्री गणेश हाउसिंग को-ऑपरटिव सोसायटी लि. द्वारा जारी साईड प्लान गुम हो गया है। मिलने पर सम्पर्क करें। राजेश कुमार धेड़ु-9460411494

मेरे भूखण्ड संख्या ई-193 श्याम नगर विस्तार रामपथ सोडाला, जयपुर का सोसायटी रसीद एवं साईट प्लान कहीं गुम हो गये है सूचित करें। सुलोचना राजगोपाल-9414051273

कार्यालय नगर पालिका मण्डल, फुलेरा जिला जयपुर

क्रमांक-न.पा.फु./2025-26/1572 **आपत्ति सूचना** दिनांक-18.09.2025

एतद द्वारा हितबद्ध, व्यक्ति विशेष, आम खास को सूचित किया जाता है कि निम्न व्यक्तियों ने 90क आवासीय हेतु इस कार्यालय में आवेदन किया है।

क्र.सं.	प्रार्थी का नाम	आवंटी का नाम	स्थान	प्रयोजनार्थ	क्षेत्रफल
1.	श्रीमती शारदा देवी पत्नि श्रीराम कृष्ण माली	महावीर कुमार अजमेरा पुत्र स्व. श्री मूलचन्द अजमेरा	आवासीय भूखण्ड नं. 35 श्री बालाजी विहार नरैना रोड फुलेरा	90 के अन्तर्गत आवासीय पट्टा	172.2 वर्गगज
2.	श्री इन्दू जैन पत्नि श्री सुरेश जैन	कुमारी समता अजमेरा पुत्री श्री महावीर कुमार अजमेरा	आवासीय भूखण्ड नं. 94 विनायक नगर नरैना बाईपास रोड फुलेरा	लीज फ्री होल्ड के अन्तर्गत आवासीय पट्टा	225 वर्गगज

किसी भी व्यक्ति को उपरोक्तानुसार 90क के अन्तर्गत आवासीय पट्टा/ईजाजत बाबत आपत्ति हो तो आपत्ति आमंत्रण सूचना जारी होने की तिथि से 7 दिवस के अन्दर मियाद विधिमान्य दस्तावेजों हित लिखित में आपत्ति कार्य दिवस के दौरान कार्यालय समय में अधोहस्ताक्षरकर्ता को प्रस्तुत करावें। बाद मयाद गुजरने आपत्ति मान्य नहीं होगी।

अधिशाषी अधिकारी, नगर पालिका, फुलेरा

कार्यालय नगर पालिका मण्डल सांभर लेक (जयपुर)

क्रमांक/न.पा.सा./2025–26/1591 दिनांक 01.10.2025

आपत्ति सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि शहरी सेवा शिविर–2025 अन्तर्गत आवेदकों द्वारा पंजीकृत दस्तावेज/कब्जे के सबूत पेश कर स्टेट ग्रांट पट्टे हेतु आवेदन किया हैं :–

क्र. सं.	आवेदक का नाम	भूखण्ड का विवरण	क्षेत्रफल
1	श्री सोहनलाल शर्मा पुत्र श्री चौथमल शर्मा, चौबदारों का मौहल्ला, छोटा बाजार, सांभर लेक	चौबदारों का मौहल्ला, छोटा बाजार, सांभर लेक	263.82 वर्गगज
2	श्रीमति मंजू देवी पत्नि श्री सोहन लाल शर्मा, चौबदारों का मौहल्ला, छोटा बाजार, सांभर लेक	चौबदारों का मौहल्ला, छोटा बाजार, सांभर लेक	65.60 वर्गगज
3	श्रीमति सोहनी देवी गोयल पत्नि श्री ओमप्रकाश अग्रवाल, सांभर लेक	स्टेशन रोड, सांभर लेक	176.75 वर्गगज
4	श्री सुवा पुत्र श्री इन्दा रैगर, सांभर लेक	वार्ड नंबर 05, पोस्ट ऑफिस के पीछे, सांभर लेक	88.86 वर्गगज
5	श्रीमति सुशीला कुमावत पत्नि श्री दूर्गा लाल कुमावत, तेली दरवाजा, नेहरू पार्क के पास, सांभर लेक	तेली दरवाजा, नेहरू पार्क के पास, सांभर लेक	365.68 वर्गगज

अत: उपर्युक्त आवेदकों के पक्ष में स्टेट ग्रांट पट्टा जारी करने बाबत किसी भी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो वह अपनी आपत्ति लिखित में मय दस्तावेज इस सूचना के जारी होने से 7 दिवस में इस कार्यालय में प्रस्तुत कर दे। बाद मियाद प्रस्तुत आपत्ति पर कोई विचार नही किया जायेगा। सूचना में अंकित अवधि पश्चात पत्रावलियों के निस्तारण की कार्यवाही की जावेगी। दस्तावेज/साक्ष्य के प्रस्तुतीकरण के अभाव में नियमन/पट्टा जारी नही होने के लिये आवेदनकर्ता स्वयं जिम्मेदार होंगे।

राज.संवाद/सी/25/11504 अधिशाषी अधिकारी

संक्षिप्त

प्राण प्रतिष्ठा से पहले यज्ञ के लिए ध्वज स्थापना

सांभरझील। चिड़ी चोंच भर ले गई, नदी न घटिया नीर, दान करे से धर्म बढ़े कह गए दास कबीर। इसी को दृष्टिगत रखते हुए भामाशाहों ने जिस उन्मुक्त हाथों से अपना योगदान दिया, उसी की बदौलत है कि सांभर में एक विशाल और भव्य श्याम मंदिर का निर्माण हो सका जो कि फुलेरा विधानसभा क्षेत्र के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण बन गया है। मंदिर में विभिन्न देवी देवताओं की मूर्ति भी विधिवत प्राण प्रतिष्ठा के साथ स्थापित की जाएगी। मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा से पूर्व करीब एक माह पहले से यज्ञ शाला हेतु पूजा अर्चना के साथ ध्वज स्थापना भी कर ली गई है। श्री श्याम रंगीला परिवार के पंकज सिंघानिया व पराग पोद्दार ने बताया कि ध्वज स्थापना का कार्यक्रम महेश जी व्यास, आचार्य हेमंत व्यास, राम सुटवाल , हर्षनाथ, अनिल के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। इस मौके पर मंडल के सम्मानित सदस्य जितेन्द्र जोपत, सुनील टाटी, राहुल गट्टाणी, महेश अग्रवाल, प्रतीक जोपट, अनिल आहूजा, मनीष पोद्दार, प्रकाश सोनी, मिथलेश जांगिड़, श्याम सोनी, मंदिर के शिल्पकार ठेकेदार गजानंद कुमावत, ओमप्रकाश भी उपस्थित रहे।

महाविद्यालय में महर्षि वाल्मीकि जयंती मनाई

बौंली- बामनवास। सोगानी महाविद्यालय रवासा बौंली के सभागार में मंगलवार को महर्षि वाल्मीकि जयंती मनाई गई जयंती समारोह में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉक्टर रामगोपाल सिंह ने महर्षि वाल्मीकि जी के जीवन सामाजिक एवं साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उनकी रचयिता रामायण से प्रत्येक व्यक्ति के लिए आदर्श पर चलने का आग्रह किया कार्यक्रम संयोजक महेंद्र खाती ने महाविद्यालय के विद्यार्थियों से आग्रह किया कि उन्होंने कैसी विशम विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं के जीवन को बदलकर समाज को अपने समृद्ध विचारों में बदला जा सकता है यह सिद्ध किया विद्यार्थियों कार्यक्रम में सहभागिता निभाई और महर्षि वाल्मीकि जयंती पर कविता पठन किया कार्यक्रम में संकाय की सभी सदस्यों की उपस्थित थे।

प्रतिभा सम्मान समारोह पोस्टर का विमोचन किया

शाहपुरा। सैनी माली समाज तहसील विराटनगर का दिनांक 16 अक्टूबर 2025 गुरुवार को होने वाले प्रतिभा सम्मान समारोह का विराटनगर स्थित प्राचीन श्री गणेश जी मंदिर में पूजा-अर्चना कर पोस्टर का विमोचन गुड्डू सैनी जिला माली (सैनी) महासभा पंचायत संस्था रज़ि.जयपुर के सानिध्य में किया गया। इस दौरान सैनी समाज विराटनगर तहसील के पदाधिकारी व सभी संगठनों के अध्यक्ष मौजूद रहे। तहसील अध्यक्ष मैनेजर संतोष कुमार सैनी, तहसील सचिव डॉ संतोष कुमार सैनी, जिला उपाध्यक्ष सत्यनारायण सैनी, जिला प्रवक्ता प्रेम कुमार सैनी, जिला महामंत्री राजू सैनी (सरपंच) विराटनगर अध्यक्ष रोहिताश सैनी, गुड्डू सैनी विराटनगर व सैनी समाज के अन्य प्रबुद्ध जनों की उपस्थिति में किया गया। समाज के विकास के लिए समाज के हर व्यक्ति को शिक्षित होना आवश्यक है।

रक्तदान शिविर का पोस्टर विमोचन

पावटा। सेवा ही संकल्प की धारणा को लेकर उड़ान टीम एवं जनसेवा समिति द्वारा आयोजि रक्तदान शिविर के पोस्टर का विमोचन परम पूज्य संत मंगलदास महाराज (टोरडा,गुजरान) के कर-कमलों द्वारा किया गया। इस दौरान शिक्षाविद जी एल यादव एवं डॉ. केशव स्वामी ने रक्तदान को सबसे बड़ा दान बताया। उड़ान टीम के संयोजक एवं पूर्व पंचायत समिति सदस्य भाई हरिद्वारी लाल स्वामी ने बताया कि उड़ान टीम के द्वारा समय-समय पर अनेक प्रकार के सेवा के कार्य किए जाते हैं जिसके तहत रविवार 12 अक्टूबर को एक स्वैच्छिक रक्तदान शिविर आयोजित किया जा रहा है, जिसमें रक्तदाता अपने रक्त का दान कर सकता है। पोस्टर विमोचन में अनेक ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

वार्षिक उर्स सम्पन

मनोहरपूर। बिशनगढ़ रॉड पर स्तिथ मुस्लिम कब्रस्तान में स्तिथ हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रतीक हजरत छतरी वाले बाबा का एक दिवसीय वार्षिक उर्स 7 अक्टूबर मंगलवार को सम्पन होगया। सुबह 10 बजे बाद में बाबा को गुस्ल दिया गया इसके बाद में चद्दर पेश की गई।

अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के 9 वें राष्ट्रीय अधिवेशन का समापन

जयपुर। आज अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के राष्ट्रीय अधिवेशन के समापन कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एवं वक्ता राज्यसभा सांसद डॉक्टर सुधांशु त्रिवेदी ने राष्ट्रीय सुरक्षा सीमा से समाज तक विषय पर अपना उद्बोधन देते हुए कहां कि जहां कुछ वर्षों पूर्व हमें शक्तिशाली एवं बड़े देश होने के बाद भी पडौसी छोटे देश का डर सताता था, लेकिन आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में सीमा पर ऑपरेशन सिंदूर में हमारी सेना ने अप्रतिम एवं अद्वितीय शौर्य का प्रदर्शन कर पड़ौसी देश की सीमाओं में 150 से 300 किलोमीटर अंदर जाकर उनके एयर डिफेंस पर मिसाइलें गिराई उसे तबाह कर दिया और आतंकी केंद्रो को नष्ट कर आतंकियों को बेबस कर उन्हें घुटनों पर ला दिया। पिछले माह ही हमने 250 गीगावॉट

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एवं वक्ता राज्यसभा सांसद डॉक्टर सुधांशु त्रिवेदी का स्वागत किया।

अक्षय ऊर्जा बनाने की क्षमता अर्जित की। एक करोड़ घरों पर सोलर रूफटॉप ,रेलवे का लगभग शत प्रतिशत विद्युतीकरण , जल थल नभ तीनों में आणविक शक्ति संपन्न, भारत में बने विमान वाहक युद्धपोत ,नाभिकीय सबमरीन, एयरक्राफ्ट, यूरोपीय देशों का भारत में आकर रक्षा उद्योग स्थापित करना आदि सभी कार्य रक्षा क्षेत्र में हमारे प्रधानमंत्री की मजबूत इच्छा शक्ति का प्रकटीकरण है।

उन्होंने युवा वर्ग को सरकारी सेवा के पीछे दौड़ने की बजाय एंटरप्रेन्योरशिप स्टार्टअप पर बल दिया। भारत के इस अमृत कल के समय में शिक्षकों का यह महत्वपूर्ण दायित्व है कि जिस प्रकार भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं ज्ञान को गलत ढंग से प्रस्तुत किया गया उसके

- मैकाले और मार्क्स के प्रभाव से मुक्त होकर भारतीय शिक्षा एवं जीवन पद्धित को अपनाने का समय : सुधांशु त्रिवेदी

सही स्वरूप को बालको एवं समाज तक पहुंचाना है हमें गुलामी की मानसिकता से मुक्त होकर हमारी विरासत का संरक्षण , देश के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की ओर अग्रसर करना है। कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य एवं पूर्व सहसरकार्यवाह सुरेश सोनी ने शिक्षा की भारतीय अवधारणा विषय पर अपने विचार रखे।

पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन

निवाई। आरएनटी मेमोरियल महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के अंतर्गत स्वच्छता ही सेवा पखवाड़े में स्वच्छता से संबंधित गांधीजी की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने के दृष्टिकोण से पोस्टर बनाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें छात्राओं ने बढ़-चढक़र भाग लिया। महाविद्यालय निदेशक डॉ. राजीवकुमार तिलोटिया ने छात्राओं को जल-वायु प्रदूषण से बचाओ, सबकों स्वस्थ जीवन दिलाओं, पेड़ लगाकर, कचरा हटाकर, पर्यावरण को हरा-भरा बनाओं व स्वच्छता को अपने जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित किया। महाविद्यालय प्राचार्य निष्ठा शर्मा ने प्रतियोगिता में भाग लेने वाली छात्राओं का परिणाम जारी जारी करते हुए बताया कि पोस्टर प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर मोना स्वामी, द्वितीय स्थान पर कविता सांसी व तृतीय स्थान पर तनु शर्मा रही। कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम प्रभारी अंकिता पारीक द्वारा किया गया।

त्यौहारी सीजन को देखते हुए मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने निरीक्षण किया

कोटपूतली। आयुक्त खाद्य सुरक्षा एवं औषधि नियंत्रक डॉ. टी.शुभमंगला, जिला कलेक्टर प्रियंका गोस्वामी, अतिरिक्त जिला कलेक्टर ओमप्रकाश सहारण के निर्देशन में आगामी त्यौहारी सीजन को देखते हुए कोटपुतली के मेन मार्केट में स्थित गोवर्धन स्वीट्स के गोदाम का निरीक्षण किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कोटपुतली बहरोड़ डॉ आशीष सिंह शेखावत ने बताया कि उक्त गोदाम से मावा मिठाई एवं काजू कतली का सैंपल लिया गया।साथ ही कोटपुतली में स्थित रेवाड़ी मिष्ठान भंडार के गोदाम एवं दुकान का निरीक्षण किया गया एवं मावा मिठाई एवं पनीर का सैंपल लिया गया। साथ ही रेवाड़ी मिष्ठान भंडार के गोदाम पर 30 किलो दूषित मिठाई एवं 15 बॉटल्स फूड कलर जो कि केक एवं विभिन्न प्रकार के बेकरी प्रोडक्ट्स में

मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने गोदाम से मावा मिठाई एवं काजू कतली का सैंपल लेकर निरीक्षण किया ।

काम में लिया जा रहा था सभी को मौके पर नष्ट करवाया गया एवं परिसर में साफ सफाई नहीं पाए जाने के कारण इम्प्रूवमेंट नोटिस दिया गया।

उक्त सैंपलों को प्रयोगशाला जयपुर में भिजवाया गया एवं जांच रिपोर्ट आने पर ों के तहत नियमानुसार कार्यवाही की जाएगी। निरीक्षण के दौरान सभी खाद्य कारोबारकर्ताओं एवं विक्रेताओं को खाद्य लाइसेंस एवं खाद्य पंजीयन को डिस्प्ले करने के लिए पाबंद किया गया एवं अधिकारियों ने निर्देश दिया कि अगर कोई भी विक्रेता बिना लाइसेंस व्यापार करता पाया गया तो

- रेवाड़ी मिष्ठान भंडार के गोदाम पर 30 किलो दूषित मिठाई एवं 15 बॉटल्स फूड कलर को मौके पर करवाया नष्ट

उसके विरुद्ध कार्यवाही की जायेगी। अधिकारियों द्वारा खाद्य पदार्थों के रख रखाव के बारे में जानकारी दी गई एवं खाद्य सुरक्षा का पालन करना एवं नागरिकों को स्वच्छ खाद्य सामग्री उपलब्ध करवाना खाद्य व्यापारी की जिम्मेदारी है ताकि आमजन को सुरक्षित एवं पौष्टिक आहार की उपलब्धता सुनिश्चित हो सके। कार्यवाही के दौरान खाद्य सुरक्षा अधिकारी शशिकांत शर्मा, खाद्य सुरक्षा अधिकारी नेहा शर्मा मौजूद रहे।

नगर पालिका कर्मचारियों ने महर्षि वाल्मीकि जयंती मनाई

निवाई। नगर पालिका के सफाई कर्मचारियों द्वारा गांधी पार्क में आदि कवि महर्षि वाल्मीकि जयंती श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाई गई। कार्यक्रम की शुरुआत महर्षि वाल्मीकि, डॉ. भीमराव अंबेडकर व संत नवल साहेब के चित्रों पर पुष्प अर्पित कर की गई। उपस्थित कर्मचारियों ने समाज सुधारकों को नमन करते हुए उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। कर्मचारियों ने

- कार्यक्रम की शुरुआत महर्षि वाल्मीकि, डॉ. भीमराव अंबेडकर व संत नवल साहेब के चित्रों पर पुष्प अर्पित कर की

कहा कि वाल्मीकि हमारी आस्था हैं और डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर हमारा रास्ता हैं। संगठन के पदाधिकारी धनराज नकवाल ने महर्षि वाल्मीकि के जीवन, कृतित्व और वर्तमान समय में वाल्मीकि समाज की दशा व दिशा पर विस्तार जानकारी दी।

राष्ट्रीय वंचित लोक के अध्यक्ष किशन संगत ने कहा कि वाल्मीकि

गांधी पार्क में महर्षि वाल्मीकि को श्रद्धांजली देते हुए पालिका के कर्मचारी।

समुदाय ने देश को कई महापुरुष दिए हैं। उन्होंने बाबा जीवन सिंह, शहीद भूरा सिंह, शहीद गंगू मेहतर, सेना नायक सिघनाथ मातादीन वाल्मीकि, दिनाभना वाल्मीकि, संत नवल साहेब और डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर जैसे महापुरुषों के योगदान को याद किया और कहा कि समाज को उनके आदर्शों को अपनाकर एकता व शिक्षा की दिशा में आगे बढऩा चाहिए।

इस अवसर पर लालचंद नकवाल, रामबाबू नकवाल, राहुल पाटन, विनोद चांवरिया, हरिमोहन नकवाल, विमल नकवाल, बनवारी नकवाल, जगदीश नकवाल, रामलाल नकवाल, दारासिंह संगत, निहाल संगत, सूर्य नकवाल, नवल नकवाल, पदम नकवाल, सामाजिक विचारक कन्हैयालाल संगत व जॉन्टी नकवाल सहित कर्मचारी मौजूद थे।

'गोरक्षक पुलिस को सूचना दें, कानून अपने हाथ में न लें'

अलवर। रेंज आईजी राहुल प्रकाश मंगलवार को अलवर जिले के दौरे पर रहे। इस दौरान उन्होंने गोरक्षकों से अपील की कि वे केवल पुलिस को सूचना दें, खुद कानून अपने हाथ में न लें। उन्होंने कहा- पुलिस प्रशासन हर सूचना पर त्वरित कार्रवाई करेगा, लेकिन किसी भी व्यक्ति को खुद न्याय करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

उन्होंने बताया- आज अलवर जिले में स्थित पुलिस ट्रेनिंग स्कूल में गैलेंट्री प्रमोशन के तहत परीक्षाएं आयोजित की गई थीं। इनमें कॉन्स्टेबल से हेड कांस्टेबल और हेड कांस्टेबल से एएसआई पद पर पदोन्नित परीक्षाएं शामिल थीं। आईजी राहुल प्रकाश ने बतौर चेयरमैन इन परीक्षाओं का निरीक्षण किया।

इसके बाद उन्होंने कोतवाली थाने का भी दौरा किया। दीपावली से पहले सुरक्षा व्यवस्था को लेकर निरीक्षण किया। साथ ही उन्होंने थाने में जनसुनवाई आयोजित की। ताकि जो लोग जयपुर नहीं जा सकते, उनके कार्य अलवर में ही निपटाए जा सकें।

आईजी राहुल प्रकाश ने कहा- अलवर में साइबर अपराधों पर अच्छी कार्रवाई की जा रही है। जयपुर और

- रेंज आईजी राहुल प्रकाश ने कोतवाली थाने का भी दौरा किया, दीपावली से पहले सुरक्षा व्यवस्था को लेकर निरीक्षण किया

राज्य स्तर पर भी साइबर अपराधों को लेकर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। डीजीपी स्तर पर भी इस विषय को प्राथमिकता दी जा रही है। उन्होंने कहा- हमारा उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि किसी भी स्तर पर साइबर क्राइम न हो। यदि होता है तो तुरंत कार्रवाई की जाए।

उन्होंने बताया कि म्यूल अकाउंट पर प्रभावी कार्रवाई की गई है। इसके साथ ही बिटकॉइन और क्रिप्टो ट्रांजैक्शन से जुड़े मामलों में भी ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। बिटकॉइन को सीज करने के लिए वॉलेट्स को की सहायता से चिन्हित किया गया है।

पुलिस के पास अब इन ट्रांजेक्शनों को सीज करने की सुविधा भी उपलब्ध है। आईजी ने कहा- अपराधी कितनी भी चालाकी कर लें। पुलिस और राष्ट्रीय एजेंसियां उन पर हमेशा नजर बनाए रखेगी।

श्री मैढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार समाज ने अजमीढ़ महाराज की जयंती मनाई

पावटा। श्री मैढ क्षित्रय स्वर्णकार समाज पावटा तहसील द्वारा सोनी मंदिर में महाराजा अजमीढ़ जी महाराज की जयंती धूमधाम के साथ मनाई। इस अवसर पर मैढ क्षित्रय स्वर्णकार समाज पावटा तहसील संरक्षक सुरेंद्र सोनी, अध्यक्ष संतोष सोनी, उपाध्यक्ष मोहन सोनी, महामंत्री जुगल सोनी, कोषाध्यक्ष नन्द

- शोभायात्रा गाजे बाजे के साथ नगर के मुख्य मार्गो से भ्रमण करती हुई सोनी मंदिर पहुंची

किशोर सोनी सहित समस्त स्वर्णकार समाज के लोगों द्वारा महाराजा अजमीढ़ जी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। शुभारंभ के बाद पावटा मोदी मंदिर से अजमीढ़ महाराज की शोभायात्रा गाजे बाजे के साथ निकाली गई। इसमें विधायक कुलदीप धनकड सहित बड़ी संख्या में समाज के महिला पुरुषों ने शिरकत की। विधायक

शोभायात्रा में विधायक कुलदीप धनकड सहित बड़ी संख्या में समाज के महिला पुरुषों ने शिरकत की।

धनकड ने स्वर्णकार समाज को अजमीढ़ महाराज जयंती की शुभकामनाएं दी। वही उन्होंने समाज के विकास में आगे बढ़कर योगदान देने का आ ान किया। इस दौरान मैढ क्षित्रय स्वर्णकार समाज पावटा तहसील के अध्यक्ष संतोष सोनी ने कहा कि अजमीढ़ महाराज किसी एक जाति या धर्म के गुरु नहीं, बल्कि समाजवाद के सच्चे धोतक थे। उन्होंने समाज में एकरूपता लाने का काम किया। वहीं उन्होंने स्वर्ण आभूषणों को बनाने का कार्य किया और आने वाली पीढ़ियों को यह हुनर विरासत में दिया। वही स्वर्णकार समाज के वक्ताओ ने महाराजा अजमीढ़ जी के जीवन पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अंत में मैढ क्षित्रय स्वर्णकार समाज पावटा तहसील समाज के पदाधिकारियो ने सभी आगंतुक लोगों का आभार जताया। इस दौरान संरक्षक सुरेंद्र सोनी, अध्यक्ष संतोष सोनी, महेश सोनी, गुलज़ारी लाल सोनी, जितेंद्र सोनी, नवल सोनी, राजकुमार सोनी, महेश सोनी, सुरेश सोनी, धर्मेंद्र सोनी सहित समाज के लोग मौजूद रहे।

टीएचसीबीएस टावर लगाने का कार्य प्रारंभ

जयपुर । राज्य की एकमात्र विशिष्ट केंद्रीय कारागृह श्यालावास (दौसा) में मंगलवार से टीएचसीबीएस टावर लगाने का कार्य प्रारंभ हो गया। इस अत्याधुनिक तकनीकी प्रणाली का उद्देश्य जेल के अंदर से अवैध मोबाइल कॉलिंग, इंटरनेट कॉलिंग और बाहरी आपराधिक नेटवर्क से संपर्क को पूर्णत: रोकना है।

जेल अधीक्षक पारस जांगिड ने बताया कि इस परियोजना के तहत पहले सिविल वर्क का कार्य किया जाएगा। जिसमें टावर की नींव और आवश्यक ढाँचा तैयार किया जाएगा। इसके बाद टॉवर पर मोबाइल नेटवर्क सेवा प्रदाताओं के सिग्नल-ब्लॉकिंग सिस्टम स्थापित किए जाएँगे। यह प्रणाली विभिन्न मोबाइल कंपनियों के नेटवर्क फ्रीक्वेंसी को नियंत्रित कर जेल परिसर के भीतर कॉल और डेटा ट्रांसमिशन को प्रभावी रूप से ब्लॉक करेगी। इससे जेल के अंदर मोबाइल फोन का कोई भी दुरुपयोग या नेटवर्क सिग्नल प्राप्त करना संभव नहीं रहेगा। इस कार्यवाही लगभग 3 से 4 माह का समय लगेगा।

सार-समाचार

श्री श्याम कीर्तन महोत्सव का आयोजन

पावटा। श्री श्याम शक्ति मण्डल भैंसलाना के तत्वाधान में शुक्रवार को 35वाँ श्री श्याम कीर्तन महोत्सव का आयोजन बड़े ही धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ किया गया। इस मौके पर श्री श्याम प्रभु का भव्य दरबार लगाकर विशाल जागरण का आयोजन किया गया। श्री श्री 108 श्री गोकुलदास महाराज आसपुरा बावड़ी द्वारा पूजा अर्चना कर एवं अखंड ज्योत जलाकर जागरण का शुभारम्भ किया। श्री श्याम शक्ति मंडल कोटपुतली ट्रस्ट (गुरु मंडल) ने गणेश वन्दना कर जागरण शुरू किया गया। वहीं अमित म्यूजिकल ग्रप व सुप्रसिद्ध कलाकार सरदार सुरजीत सिंह राजगढ़,रमेश जिंदल कोटपुतली,पूनम राजपूत चौमू ,हरिकिशन शर्मा कुजोता,दाताराम यादव गुरुजी,ओमप्रकाश जांगिड नारेहड़ा,घनश्याम शर्मा व सियाराम शर्मा द्वारा एक से बढ़कर एक भजनों की प्रस्तुतियां देकर पूरे दिन श्रद्धालुओं को नाचने पर मजबूर कर दिया। इस मौके पर बाहर से सभी मंडलों और अतिथियों व पत्रकारों का माल्यार्पण व दुपट्टा ओढकऱ एवं स्मृति चिन्ह भेंटकर स्वागत किया गया। क्षेत्र के सुप्रसिद्ध एंकर हम्मीर सिंह मंढा द्वारा मंच संचालन किया गया। मंडल के सदस्यों द्वारा आरती कर प्रसाद का वितरण किया गया। इस मौके पर रामसिंह शेखावत,धर्मसिंह भैंसलाना, सोहन यादव,अमर सिंह यादव,दिलीप सिंह डीलर,राजवीर सिंह,महेंद्र सोनी,शिंभू सांपला,गिरधारी यादव,महेंद्र सिंह,विक्रम सिंह,सुभाष योगी,सांवर सिंह,घम्मन यादव,हेमराज सिंह,माल सिंह समेत हजारों की संख्या में श्रद्धालू मौजूद रहे।

देवली मे छात्राओं को बस स्टैंड भेजकर चाय मंगवाने का मामला

देवली । यहाँ सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को स्कूल परिसर से बाहर भेज कर काम करवाने का मामला प्रकाश में आया है। इस पर यहां यह कहना मुश्किल नहीं होगा कि शिक्षा विभाग के नियमों की अनदेखी करते हुए यह सरकारी स्कूल प्रबंधन की बड़ी लापरवाही सामने आई है। यहां शहर के बीचों-बीच आदर्श उच्च प्राथमिक विद्यालय मै पढ़ने वाली करीब 10 से 12 साल की दो छात्राओं को स्कूल कर्मचारी ने बस स्टैंड परिसर में चाय लेने के लिए भेज दिया । ऐसे हालातो को बस स्टैंड परिसर में मौजूद मीडिया कर्मी ने अपने कमरे में कैद कर लिया। इसके बाद यह मामला पोर्टल मीडिया के जरिए खबर के रूप में लोगों तक पहुंच गया। इस संबंध में जब सीबीईओ को जानकारी दी गई तो ब्लॉक शिक्षा अधिकारी हरिनारायण ने इसे गलत बताया । और कहा कि स्कूल कि छात्राओं को बाहर भेज कर चाय लेने के लिए नहीं भेजना चाहिए था। यह कार्य स्कूल के चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी से करवाया जाता है । ऐसे में ब्लॉक शिक्षा अधिकारी ने अपने आप को उक्त दौरान मीटिंग मै होना बताया और कहा कि मीटिंग से लौटने के बाद इस संबंध में स्कूल प्रशासन से जानकारी ली जाएगी । गौरतलब है कि देवली शहर के केंद्रीय बस स्टैंड मै दिन और रात सैकड़ो रोडवेज एवं प्राइवेट बसों की आवाजाही बनी रहती है साथ ही हजारों की तादाद में यहां यात्रियों का आना जाना लगा रहता है। ऐसे मे उक्त भीड़भाड़ वाले बस स्टैंड परिसर मे स्कूली छात्राओं को भेज कर चाय खरीद के लाने के लिए स्कूल से बाहर भेज ने का यह मामला गंभीर माना जा रहा है।

पाँच दिवसीय कैलीग्राफी आर्ट फेस्टिवल व प्रदर्शनी का उद्घाटन

टोंक। मौलाना अबुल कलाम आजाद अरबी फारसी शोध संस्थान में 7 से 11 अक्टूबर तक चलने वाले पांच दिवसीय अखिल भारतीय कैलीग्राफी आर्ट फेस्टिवल, वर्कशॉप एवं प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह का आयोजन मंगलवार को मुख्य अतिथि जिला पुलिस अधीक्षक राजेश कुमार मीना द्वारा किया गया। इस मौके पर उन्होंने प्रदर्शनी एवं डिस्पले हॉल के अवलोकन के पश्चात अपने संबोधन में कहा कि संस्थान में पुरातत्व एवं कला के नमूने देखकर उन्हें अपने सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी के दिन याद आ गये, जिसमें इतिहास एवं कला की पाठ्यपुस्तकों में प्राचीन भारत की विभिन्न कलाओं का उल्लेख था।संस्थान की निदेशक ने कैलीग्राफी आर्ट फेस्टिवल, वर्कशॉप एवं प्रदर्शनी एवं संस्थान की प्रगति के बारे में विस्तार से विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम की अध्यक्षता संगीता राठौड़, वित्तीय सलाहकार एवं कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कैलीग्राफिस्ट मुख्तार अहमद ने बताया कि कैलीग्राफी की कला व्यक्ति को अनुशासन में रहना सिखाती है एवं इसमें वह सभी तत्व मौजूद हैं जो एक सफल जीवन जीने के लिए आवश्यक हैं। इस अखिल भारतीय फेस्टिवल में दिल्ली से आये कैलीग्राफिस्ट अब्दुर्रहमान, मुहम्मद जुबैर, हैदर अनस, मुश्ताक अहमद, अजीमुद्दीन, हरिशंकर बालोठिया एवं स्थानीय कैलीग्राफिस्ट वर्कशॉप में पांच दिन तक अपनी कला के नमूने प्रस्तुत करेंगे।

सफाई अभियान चलाया

फुलेरा । उत्तर पश्चिम रेलवे जयपुर मंडल पर स्वच्छ भारत अभियान के तहत भारतीय रेल द्वारा मनाए जा रहे स्वच्छता पखवाड़ा-2025 (1 से 15 अक्टूबर) के छठवें दिन आज स्वच्छ रेलगाड़ी दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर जयपुर मंडल के अधीन आने वाली प्रमुख रेलगाड़ियों में गहन सफाई अभियान चलाया गया। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक जयपुर पूजा मित्तल ने बताया कि इस जयपुर से चलने वाली ट्रेनों के कोचों में सफाई कर्मियों द्वारा विशेष सफाई कार्य किया गया। प्रत्येक कोच के अंदर सीटों, फर्श, खिड़कियों, शौचालयों, वॉश बेसिन, दरवाज़ों और पंखों की अच्छी तरह से सफाई की गई। फर्श की मशीनों द्वारा धुलाई की गई तथा डिब्बों के अंदर सुगंधित फिनाइल एवं डिसइंफेक्टेंट से सफाई कर वातावरण को स्वच्छ और सुगंधित बनाया गया। प्रत्येक कोच में रखे डस्टबिन खाली किए गए तथा शौचालयों में हैंडवॉश, टिश्यू और पानी की उपलब्धता की जांच सुनिश्चित की गई। इस अवसर पर अधिकारियों द्वारा ट्रेनों का निरीक्षण कर सफाई व्यवस्था का मूल्यांकन किया गया। सफाई कर्मियों को उनके कार्य के लिए प्रोत्साहित किया गया तथा यात्रियों को भी जागरूक किया गया कि वे रेल को अपनी संपत्ति समझें और स्वच्छता बनाए रखें।

शरद पूर्णिमा पर खीर वितरण की

मनोहरपूर । श्री परमार्थी जी का मंदिर महंत राजेन्द्र कुमार शर्मा ने कहा कि शरद पूर्णिमा एक महत्वपूर्ण हिंदू त्योहार है, जो आश्विन मास की पूर्णिमा तिथि को मनाया जाता है। इस दिन चंद्रमा अपनी पूर्ण कलाओं के साथ आकाश में चमकता है ! शर्मा ने शरद पूर्णिमा के महत्व के बारे में बताया कि इस दिन चंद्रमा की पूजा की जाती है, जो ज्ञान, शीतलता और शांति का प्रतीक है। उन्होंने खीर के महत्व के बारे बताया कि इस दिन खीर बनाकर चंद्रमा को भोग लगाने की परंपरा है, जो स्वास्थ्य और समृद्धि का प्रतीक है। उन्होंने बताया कि चंद्रमा की पूजा करके उन्हें अर्घ्य दिया गया। खीर बनाकर भगवान को भोग लगाया और उसे प्रसाद के रूप में बांटा गया। उन्होंने शरद पूर्णिमा के महत्व और लाभ के बारे बताया कि इससे स्वास्थ्य लाभ होता है शरद पूर्णिमा के दिन चंद्रमा की किरणों में औषधीय गुण होते हैं, जो स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होते हैं।इस दिन की गई पूजा और अनुष्ठान से आध्यात्मिक लाभ मिलता है और मन शांत होता है। इस अवसर पर श्री परमार्थी जी का मंदिर महंत कैलाश चंद, शर्मा राजेंद्र कुमार शर्मा पवन शर्मा कृतिका शर्मा आदि उपस्तीथ थे।

हत्या मामले में दो नाबालिग निरूद्ध

टोंक। वृत्ताधिकारी उनियारा देवेन्द्र के सुपरविजन मे थानाधिकारी नगरफोर्ट के नेतृत्व में गठित विशेष टीमों द्वारा थाना क्षेत्र के ग्राम खेडली में हुई रामकेश मीणा की हत्या मामले में दो नाबालिक लड़कों को निरुद्ध किया गया है। नगरफोर्ट थानाधिकारी ने बताया कि 4 अक्टूबर को ग्राम खेडली के देवरी रोड पर स्थित पानी की टंकी के पास चारागाह जमीन में धारदार हथियार से मारकर हत्या कर मृतक युवक रामकेश पुत्र श्योराज मीणा उम्र 26 साल निवासी खेडली के गले से चाँदी की चैन व कुछ पैसें व अन्य सामान लूटकर आरोपी ले गये तथा शव को छोडकर भाग गये। मामले की गम्भीरता को लेते हुए थाना पुलिस ने कार्यवाही करते हुए हत्या के आरोपी दो बालक को निशादेही के बाद निरुद्ध कर उनके कब्जे से मृतक से लूटा गया मोबाईल फोन को एसडीआरएफ की मदद से 80 फिट गहरे कुएे के पानी को खाली कराकर बरामद किया गया ।

"वहां तीरंदाजी वैसी है जैसे भारत में क्रिकेट या अमेरिका में फुटबॉल। बच्चे काफी कम उम्र से ही पेशेवर तीरंदाज बनने का सपना देखते हैं। उनके 50वें रैंक के खिलाड़ी की आमदनी शायद मुझसे ज्यादा है।" – ब्रैडी एलिसन

अमेरिकी तीरंदाज, कोरिया में तीरंदाजी की लोकप्रियता पर बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी **सुनील जोशी**

पूर्व भारतीय ऑफ स्पिनर सुनील जोशी पंजाब किंग्स का दामन छोड़ दिया है। उन्होंने पंजाब किंग्स के स्पिन गेंदबाजी कोच का पद छोड़ दिया है।55 वर्षीय सुनील जोशी आईपीएल 2023 से पहले पंजाब किंग्स की टीम से गेंदबाजी कोच के रूप में जुड़े थे। वह इस साल की शुरुआत में फाइनल में जगह बनाने वाली टीम का भी हिस्सा रहे। आईपीएल सूत्र ने बताया कि वह पंजाब की टीम छोड़ रहे हैं क्योंकि वह बेंगलुरु में अपने परिवार के साथ ज्यादा समय बिताना चाहते हैं। वह पिछले कार्यकाल में भी पंजाब किंग्स के कोचिंग स्टाफ का हिस्सा थे। जब अनिल कुंबले मुख्य कोच थे।

क्या आप जानते हैं ?... भारत एशिया कप की सबसे सफल टीम है। टीम इंडिया ने अब तक खेले गए 16 सीजन में 8 बार खिताब पर कब्जा जमाया है। अब भारत की नजर 9वें खिताब पर है।

जयपुर स्पोर्ट्स अकादमी में बैडमिंटन प्रतियोगिता सम्पन्न

जयपुर, 7 अक्टूबर। जयपुर स्पोर्ट्स अकैडमी वैशाली नगर में दीपावली स्पेशल बैडमिंटन टूर्नामेंट का समापन हुआ इसमें मुख्य अतिथि राजस्थान बैडमिंटन एसोसिएशन के हेडकोच अतुल गुप्ता ने

परितोषित वितरण किया विवेक कुमार, ऋषभ जैन व मुकेश कुमार ने दोहरे खिताब जीते आज संपन्न हुई प्रतियोगिता में पुरुष एकल का खिताब विवेक कुमार तथा रनर अप ब्रजराज रहे वहीं पुरुष युगलपीठ में विवेक कुमार व ऋषभ जैन विजेता तथा वत्सल व सूरज पण्ड्या उप विजेता रहे मिक्स्ड डबल्स में आयुष कानूनगो, हर्षिता यादव ने फाइनल में मोहित शर्मा व मैत्री कंवर को हरा खिताब जीता पुरुष युगल टोटल आयु 120 वर्ष में नवीन चौधरी व सुरेश मालू विजेता मुकेश पंडित व सुबोध उप विजेता मेंस डबल्स 105 मुकेश कुमार व दिलीप विजेता रोहित शर्मा व भवानी सिंह उपविजेता पुरुष युगल 90 मुकेश कुमार तरुण विजेता विकास सुनील उप विजेता पुरुष युगल 75 प्लस राहुल मेहता घनश्याम विजेता आदित्य राजेश उपविजेता पुरुष युगल 60 ऋषभ जैन आदित्य विजेता पीयूष कौशल उपविजेता रहे कार्यक्रम के अंत में ऑर्गेनाइजिंग सेक्रेट्री रोहित शर्मा ने सभी खिलाड़ियों का धन्यवाद दिया तथा सभी विजेता वह विजेता खिलाड़ी में ऑफिशियल स्टाफ को मुख्य अतिथि अतुल गुप्ता नेट्रॉफी व मोमेंटो को भेंट किया

जयपुर राजस्थान की बेटी पिंकी का वर्ल्ड ग्रैपलिंग चैम्पियनशिप के लिए चयन, सर्बिया में लहराएंगी तिरंगा

जयपुर, 7 अक्टूबर। राजस्थान की प्रतिभाशाली पिंकी शर्मा ने एक बार फिर प्रदेश का मान बढ़ाया है। उनका चयन वर्ल्ड ग्रैपलिंग चैंपियनशिप के लिए हुआ है, जो आगामी 14 से 16 अक्टूबर तक बेलग्रेड (सर्बिया) में आयोजित होगी। ग्रेपलिंग एसोसिएशन ऑफ राजस्थान के अध्यक्ष संजय सिंह शेखावत ने बताया कि पिंकी शर्मा 8 अक्टूबर से हरियाणा में आयोजित राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर में भाग लेंगी, जिसके पश्चात राष्ट्रीय टीम 13 अक्टूबर को दिल्ली से सर्बिया के लिए रवाना होगी। इस अवसर पर पीएचईडी स्पोर्ट्स क्लब जयपुर में आयोजित एक भव्य सम्मान समारोह में पिंकी शर्मा का सम्मान किया जाएगा। इस मौके पर ग्रैपलिंग फेडरेशन ऑफ़ इंडिया के वरिष्ठ उपाध्यक्ष महेश कायथ, राजस्थान अध्यक्ष संजय सिंह शेखावत, संरक्षक जगदीश शर्मा, सचिव प्रदीप वर्मा, कोशल शर्मा और सुरेंद्र सिंह ने पिंकी शर्मा को हार्दिक बधाई देते हुए कहा पिंकी शर्मा जैसी बेटियाँ ही राजस्थान का गौरव हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि वे सर्बिया में तिरंगा लहराकर भारत का नाम रोशन करेंगी।

कानोता पोलो ने ट्रोजंस पोलो टीम को हराया

जयपुर, 7 अक्टूबर। कैवेलरी पोलो ग्राउंड पर ट्रोजंस पोलो ओर कानोता पोलो टीम के बीच मैच खेला गया जिसमें कानोता पोलो ने ट्रोजंस पोलो

टीम को 3 के मुकाबले 4 गोलों से हराया। ट्रोजंस पोलो टीम की ओर से हुर्र अली ने 1 गोल ओर कुलदीप सिंह ने 2 गोल किये। जबकि कानोता पोलो टीम की ओर से प्रताप सिंह ओर डीनो धनखड़ ने 2- 2 गोल किए।

पंत के फैंस के लिए अच्छी खबर

द. अफ्रीका के खिलाफ सीरीज से पहले कर सकती है वापसी

नई दिल्ली, 7 अक्टूबर। टीम इंडिया के विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत के फैंस के लिए गुड न्यूज है। दरअसल, पंत फिट होने की राह पर है और वह 14 नवंबर से साउथ अफ्रीका के खिलाफ दो मैचों की सीरीज से पहले मैदान र दिख सकते हैं। पंत 25 अक्टूबर से शुरू होने वाले 2025-26 रणजी ट्रॉफी के दूसरे दौर में खेलते दिख सकते हैं।

भारतीय टीम के मुख्य चयनकर्ता अजीत अगरकर ने पिछले महीने दुबई में वेस्टइंडीज के खिलाफ टेस्ट सीरीज के लिए टीम की घोषणा करते समय कहा कि साउथ अफ्रीका के खिलाफ सीरीज में खेलते दिख सकते हैं। जुलाई के आखिर में इंग्लैंड दौरे के दौरान ओल्ड ट्रैफर्ड में खेले गए टेस्ट मैच के दौरान पंत के दाहिने पैर में फ्रैक्चर हो गया था। क्रिकइंफो की रिपोर्ट के अनुसार है कि वह रिहैब के अंतिम चरण में हैं और इस हफ्ते के अंत में बेंगलुरु स्थित सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में उनकी फिटनेस का आकलन किया जाएगा। तीन हफ्ते से भी ज्यादा समय पहले उनके पैर की प्लास्टर हटा दी गई थी और अब वह बिना किसी परेशानी के चल फिर रहे हैं।

वहीं अगर मंजूरी मिल जाती है तो पंत के उनके दिल्ली टीम से जुड़ने की उम्मीद है। जो 15 अक्तूबर से हैदराबाद के खिलाफ रणजी ट्रॉफी के पहले दौर में खेलेगी। डीडीसीए को पंत के पहले राउंड में खेलने पर संदेह है। भारत-इंग्लैंड के चौथे टेस्ट मैच में क्रिस वोक्स की गेंद पर रिवर्स स्वीप करने के प्रयास में चोटिल होने से पंत मैदान से बाहर हैं। उन्हें चोट के कारण रिटायर्ड हर्ट होना पड़ा और स्कैन में फ्रैक्चर की पुष्टि हुई।

आईसीसी टूर्नामेंट में भारत-पाकिस्तान मैच पर लगेगी रोक : माइकल एथरटन

नई दिल्ली, 7 अक्टूबर। ऑपरेशन सिंदूर के बादभारत और पाकिस्तान के बीच रिश्ते और ज्यादाखराब हो गए हैं। जिसका असर क्रिकेट के ग्राउंड पर भी दिखा जब एशिया कप में पहले हाथ नहीं मिलाने पर बवाल हुआ। उसके बाद एशिया कप की ट्रॉफी भारत को नहीं मिलने पर बड़ी कंट्रोवर्सी सामने आई। अब इन सभी पहलुओं को देखते हुए इंग्लैंड, के पूर्व दिग्गज क्रिकेटर माइकल एथरटन ने बड़ा बयान दिया है। दरअसल, एथरटन के मुताबिक आईसीसी, ब्रॉडकास्टर और स्पॉन्सर्स को भारत-पाकिस्तान के बीच आईसीसी टूर्नामेंट के लीग राउंड में मैच रखना ही नहीं चाहिए।

उनके इस बयान से पूरे क्रिकेट जगत में हड़कंप मच गया है। वहीं मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक बीसीसीआई के भी एक अधिकारी ने इस प अपनी प्रतिक्रिया दी है।

इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल एथरटन ने एशिया कप में हुए विवाद के बाद क्रिकेट की गरिमा को ठेस पहुंचने का हवाला देते हुए ये बयान दिया है। उनके मुताबिक क्रिकेट के सहारे कूटनीतियों का पहिया आगे बढ़ाया जा रहा है। इसलिए उन्होंने साफतौर पर कहा कि, अब सही समय आ गया है कि अब इस पूर्व निर्धारित चीजों को खत्म कर दिया जाए कि आईसीसी टूर्नामेंट में कम से कम एक बार भारत और पाकिस्तान का भिड़ना जरूरी है। अगर क्रिकेट पहले डिप्लोमेसी को आगे बढ़ाने का साधन था तो अब साफतौर पर तनाव र प्रपोगंडा बनाने का मंच बन गया है।

उन्होंने अपने बयान में आगे आईसीसी से गुहार लगाते हुए कहा कि अगले आईसीसी टूर्नामेंट के कार्यक्रम को निष्पक्षता से बनाना चाहिए। कोई जरूरी नहीं है हर बार भारत और पाकिस्तान की टीमें आपस में खेल पाएं। अगर दोनों टीमें नहीं खेल पाती हैं तो कार्यक्रम को बदलना नहीं चाहिए। दोनों टीमें के मुकाबले को जानबूझकर रखा जाता है ताकि स्पॉन्सर्स और ब्रॉडकास्टर्स को फायदा हो। लेकिन ये तरीका पूरी तरह निष्पक्ष नहीं है। दोनों देशों के बीच तनाव के कारण वह आईसीसी टूर्नामेंट के अलावा आपस में नहीं खेलते हैं। एक समय क्रिकेट दो देशों के बीच बातचीत का जरिया था। लेकिन आज सब बदल चुका है। हाल ही में चैंपियंस ट्रॉफी में भी बड़ी मुश्किल से बात नहीं थी जब भारत ने सभी मैच दुबई में खेले थे।

दूसरे टेस्ट में मिल सकती है बल्लेबाजी के लिए अनुकूल पिच

नई दिल्ली, 7 अक्टूबर। दिल्ली में 10 अक्टूबर से शुरू होने वाले दूसरे और अंतिम भारत-वेस्टइंडीज टेस्ट मैच की पिच पर कुछ हिस्सों में घास होगी और कुछ हिस्सों में सपाट सतह होगी, जबकि पहले टेस्ट मैच की अहमदाबाद की पिच पर घास की समतल परत थी। दिल्ली की पिच काली मिट्टी की होगी और बल्लेबाजों के अनुकूल होगी, तथा सतह धीरे-धीरे सूखने के कारण स्पिन की भूमिका भी महत्वपूर्ण होगी।

2019 में विश्व टेस्ट चैंपियनशिप शुरू होने के बाद से भारत की सबसे हरी पिचों में से एक पर पहले टेस्ट में पहले बल्लेबाजी करने के बाद वेस्टइंडीज तीन दिन के अंदर ही हार गया। लाल मिट्टी वाली पिच पर चार मिलीमीटर तक घास बिछी होने और अच्छी उछाल के साथ, जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद सिराज ने पहले दिन शानदार प्रदर्शन किया और वेस्टइंडीज 44.1 ओवर में ऑल आउट हो गया। मेहमान टीम अपनी दूसरी पारी में सिर्फ़ 45.1 ओवर ही खेल पाई और एक पारी और 140 रनों से करारी हार का सामना करना पड़ा।

हालांकि, अरुण जेटली स्टेडियम की पिच बल्लेबाजों के लिए ज़्यादा अनुकूल मानी जाती है, क्योंकि आउटफ़ील्ड तेज है और बाउंड्रीज़ थोड़ी छोटी हैं। यहां खेला गया आख़िरी टेस्ट 2023 में बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफ़ी का दूसरा टेस्ट था। उस मैच में, धीमी टर्निंग वाली पिच पर पहले बल्लेबाजी करने का फ़ैसला करने वाली ऑस्ट्रेलिया की टीम तीन दिन के अंदर छह विकेट से हार गई थी।

विशाखापट्टनम स्टेडियम में मितालीराज के नाम पर स्टैंड, 12 अक्टूबर को उद्घाटन

नई दिल्ली, 7 अक्टूबर। विशाखापट्नम स्टेडियम में पूर्व भारतीय कप्तान मिताली राज के नाम पर स्टैंड होगा। वहीं विकेटकीपर रवि कल्पना के नाम पर गेट का नाम रखा जाएगा। इनका उद्घाटन विमेंस वर्ल्ड कप में 12 अक्टूबर को भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच होने वाले मैच से पहले किया जाएगा।

आंध्रप्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन ने एक बयान में कहा, महिलाओं के क्रिकेट में योगदान का सम्मान करने के तहत, आंध्रप्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन स्टैंड का नाम मिताली राज के नाम पर और एक गेट का नाम रवि कल्पना के नाम पर रखा जाएगा।

मिताली और कल्पना ने कई प्लेयर्स को इंस्पायर किया

आंध्रप्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन ने कहा, मिताली राज और रवि कल्पना ने भारत में महिला क्रिकेट को एक नई पहचान दी। दोनों ने अगली पीढ़ी को बड़े सपने देखने के लिए प्रेरित किया है।

मिताली भारतीय टीम की पूर्व कप्तान हैं और महिला क्रिकेट के इतिहास में सबसे महान बल्लेबाजों में से एक हैं। कल्पना, आंध्र प्रदेश में जन्मीं विकेटकीपर-बल्लेबाज हैं, जिनका राज्य स्तर से भारतीय टीम तक का सफर रहा।

मिताली के नाम सबसे ज्यादा वनडे रन मिताली राज के नाम महिला वनडे में सबसे अधिक रन बनाने का रिकॉर्ड है। उन्होंने 232 वनडे में 50.68 की औसत से 7 शतकों के साथ 7805 रन बनाए। 89 टी-20 इंटरनेशनल में, उन्होंने 17 अर्धशतकों के साथ 37.52 की औसत से 2364 रन बनाए। वहीं, 12 टेस्ट मैचों में, उन्होंने 43.68 की औसत से 699 रन बनाए, जिसमें 214 का उनका बेस्ट स्कोर रहा। उन्होंने 23 साल के करियर के बाद 2022 में खेल के सभी फॉर्मेट से संन्यास ले लिया।

रजत पाटीदार मध्यप्रदेश टीम की कमान संभालेंगे

नई दिल्ली, 7 अक्टूबर। आईपीएल 2025 में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु को चैंपियन बनाने वाले रजत पाटीदार के अच्छे दिन चल रहे हैं। दलीप ट्रॉफी में सेंट्रल जोन को खिताब दिलाने वाले रजत को अब इस टीम ने कप्तानी का जिम्मा सौंपा है। दरअसल, रजत पाटीदार को मध्यप्रदेश टीम के सभी फॉर्मेट की कप्तानी सौंपी गई है। उन्हें रणजी ट्रॉफी के साथ शुरू होने वाले 2025-26 के घरेलू सत्र से पहले ये जिम्मा सौंपा गया जिसकी शुरुआत 15 अक्तूबर से होने जा रही है। 32 वर्षीय रजत पाटीदार ने शुभमन शर्मा को बतौर कप्तान रिप्लेस किया है। रजत को ये जिम्मेदारी मध्य प्रदेश के क्रिकेट निदेशक चंद्रकांत पंडित ने सौंपी है। रजत पिछले सीजन सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी के दौरान कप्तान के रूप में पहली बार आजमाया गया था। पाटीदार ने अपनी कप्तानी में आरसीबी को पहली बार 17 साल के लंबे इंतजार के बाद आईपीएल चैंपियन बनाया।

आईसीसी रैंकिंग में स्मृति मंधाना टॉप पर कायम, दीप्ति शर्मा को हुआ नुकसान

नई दिल्ली, 7 अक्टूबर। आईसीसी ने अपनी ताजा रैंकिंग जारी की है। जहां, भारत की स्टार क्रिकेटर स्मृति मंधाना वनडे बल्लेबाजी रैंकिंग में टॉप पर बनी हुई हैं। हालांकि, इस करिश्माई बल्लेबाज की बढ़त कम हो गई है। स्मृति मंधाना 791 रेटिंग अंकों के साथ इंग्लैंड की नैट साइवर-ब्रंट से अब सिर्फ 60 अंक आगे हैं। वैसे ये तब है जब भारत और श्रीलंका में चल रहे आईसीसी महिला वनडे वर्ल्ड कप 2025 में दो मैच में सिर्फ 31 रन ही बना पाई हैं।

स्मृति मंधाना ने महिला वर्ल्ड कप 2025 में श्रीलंका के खिलाफ 8 और पाकिस्तान के खिलाफ 23 रन बनाए हैं। हालांकि, वर्ल्ड कप से ठीक पहले ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन मैचों की वनडे सीरीज में उन्होंने लगातार शतक लगाए थे। खास ये है कि महिला वर्ल्ड कप 2025 में अब तक सबसे ज्यादा विकेट लेने विकेट लेने वाली भारतीय ऑलराउंडर दीप्ति शर्मा को वनडे गेंदबाजी रैंकिंग नुकसान हुआ है। दीप्ति शर्मा महिला वनडे गेंदबाजी रैंकिंग में टॉप-5 से बाहर हो गईं हैं। अब वह एक स्थान के नुकसान के बाद छठे नंबर पर खिसक गई हैं। उनके 640 रेटिंग अंक हैं। दीप्ति शर्मा शीर्ष 10 में शामिल एकमात्र भारतीय हैं। इंग्लैंड की सोफी एक्लेस्टोन 792 रेटिंग अंकों के साथ नवीनतम गेंदबाजी सूची में शीर्ष पर हैं।

पृथ्वी शॉ ने पहले ठोका शतक... फिर भिड़ गए मुंबई के खिलाड़ी मुशीर खान से, बीच मैदान पर हाई वोल्टेज ड्रॉमा

नई दिल्ली, 7 अक्टूबर। पृथ्वी शॉ ने महाराष्ट्र के खिलाफ प्रैक्टिस मैच में कमाल का शतक जमाया लेकिन उनके आउट होते ही मैदान पर हाई वोल्टेज ड्रामा देखने को मिला। दरअसल, पृथ्वी शॉ मुंबई के खिलाड़ी मुशीर खान से भिड़ गए। पृथ्वी ने वो कर दिखाया है जिसके लिए वो जाने जाते हैं।

रणजी ट्रॉफी से पहले महाराष्ट्र के लिए प्रैक्टिस मैच खेल रहे पृथ्वी शॉ ने तूफानी शतक लगाया है। बड़ी बात ये है कि उन्होंने ये शतक अपनी पुरानी टीम मुंबई के खिलाफ जड़ा। एमसीए में खेले जा रहे इस मैच में पृथ्वी ने मुंबई के गेंदबाजों की जमकर धुनाई की। शॉ ने तूफानी बैटिंग करते हुए 219 गेंदों में 181 रन ठोके।

पृथ्वी शॉ की लड़ाई

वहीं पृथ्वी शॉ ने मुंबई के गेंदबाजों के फीते खोल दिए वो 73.2 ओवर तक क्रीज पर रहे और इस दौरान उन्होंने 219 गेंदों में 181 रन बनाए।

शॉ के शतक की मदद से महाराष्ट्र टीम 430 रनों तक पहुंच चुकी थी लेकिन जैसे ही ये खिलाड़ी आउट हुआ बीच मैदान पर बड़ा बवाल हो गया। पृथ्वी शॉ को मुशीर खान ने आउट किया और इसके बाद मुंबई के खिलाड़ियों ने उनके खिलाफ स्लेजिंग की। स्लेजिंग सुनते ही पृथ्वी शॉ ने आपा खो दिया और वो मुंबई के खिलाड़ियों पर चिल्लाते दिखे। जब मामला बढ़ा तो अंपायर को बीच बचाव के लिए आना पड़ा।

पृथ्वी शॉ ने अपनी पारी में कमाल बैटिंग की। इस खिलाड़ी ने ऑलराउंडर अर्शीन कुलकर्णी के साथ मिलकर पहले विकेट के लिए 305 रन जोड़े। बड़ी बात ये है कि पृथ्वी शॉ ने इस मैच में अपने अंदाज से हटकर बल्लेबाजी की।

सेना के मुक्केबाजों का दबदबा, विश्वनाथ, हुसामुद्दीन, वंशज और अन्य ने जीते स्वर्ण

चेन्नई, 7 अक्टूबर। मंगलवार को चेन्नई में संपन्न हुए पहले बीएफआई कप 2025 के पुरुष वर्ग के मुकाबलों में सेना के मुक्केबाजों ने राष्ट्रीय सर्किट पर अपना दबदबा कायम रखा। विश्वनाथ, हुसामुद्दीन, वंशज, सचिन और अंकुश जैसे जाने-माने मुक्केबाजों ने स्वर्ण पदक जीते।

एशियाई अंडर-22 चैंपियन एस. विश्वनाथ (सर्विसेज) ने (47-50 किग्रा) वर्ग में आशीष (हरियाणा) पर 5:0 की शानदार जीत के साथ दिन की शुरुआत की, जबकि आशीष (सर्विसेज) ने एक रोमांचक (50-55 किग्रा) फाइनल में नवराज (एआईपी) को 3:2 से हराया।

विश्व चैंपियनशिप के कांस्य पदक विजेता मोहम्मद हुसामुद्दीन (सर्विसेज) ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए (55-60 किग्रा) मुकाबले में सागर जाखड़ (साई) को 5:0 से हराया। (60-65 किग्रा) वर्ग में, वंशज (सर्विसेज) ने अपने ही साथी प्रीत मलिक (सर्विसेज) को 3:2 के कड़े मुकाबले में हराया, जबकि सुमित कुमार (साई) ने (65-70 किग्रा) के फाइनल में रजत (सर्विसेज) को 5:0 से हराकर पूरी तरह से नियंत्रण बनाए रखा।

सचिन (सर्विसेज) ने (70-75 किग्रा) मुकाबले में नीरज (हरियाणा) को 5:0 से हराकर टीम का दबदबा कायम रखा, जिसके बाद अंकुश (सर्विसेज) ने (75-80 किग्रा) फाइनल में अमन (चंडीगढ़) को 5:0 से एकतरफा अंदाज में हराया।

भारी भार वर्गों में, नवीन बूरा (सर्विसेज) ने (80-85 किग्रा) वर्ग में विनीत (रेलवे) को 3:0 से हराया, जबकि दक्ष (साई) ने विशाल गुप्ता (सर्विसेज) को 3:2 से हराकर (85-90 किग्रा) का खिताब जीता। प्रतियोगिता का समापन सावन गिल (चंडीगढ़) द्वारा लक्ष्य राठी (साई) को (90-90 किग्रा) सुपर हैवीवेट फाइनल में 3:2 से हराने के साथ हुआ। सात स्वर्ण पदकों के साथ, सर्विसेज शीर्ष प्रदर्शन करने वाली टीम के रूप में उभरी, उसके बाद हरियाणा और रेलवे का स्थान रहा।

राजस्थान-उत्तराखंड अंडर-19 वीमेन अभ्यास मैच (राजस्थान जीती)

राजस्थान सीनियर वीमेन टीम का बीसीसीआई सीनियर वीमेन टी-20 ट्रॉफी में नागपुर में पांडिचेरी से मुकाबला

जयपुर, 7 अक्टूबर। आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक डी डी कुमावत के अनुसार बीसीसीआई के आगामी घरेलू क्रिकेट सत्र 2025 – 26 की अंडर 23, अंडर 19 वीमेन, अंडर 16 प्रतियोगिता की पूर्व तैयारियों के लिए जयपुर में खेले जा रही प्रतियोगिताओं व अभ्यास मैच का परिणाम व स्कोर :-

आरसीए अकादमी - राजस्थान - उत्तराखंड अंडर 19 वीमेन अभ्यास मैच (राजस्थान जीती), राजस्थान पारी 155 /3 (20 ओवर), राजस्थान के लिए प्रतीक्षा सिंह ने 51 (46 गेंद, 4 चौके, 3 छक्के), धृति माथुर 48 (46 गेंद, 6 चोक्के, 1 छक्का), तनिका शर्मा नाबाद 42 (23 गेंद , 4 चोक्के, 3 छक्के) । उत्तराखंड के गेंदबाज तन्वीतोमर 16 /2 व रुद्राशर्मा 22 /1 विकेट उत्तराखंड पारी 135/8, टीम के लिए भूमि 39 व धृति आनंद 35 रन राजस्थान के गेंदबाज मैना सियोल 20/4, तनिका शर्मा, प्रियांशीव निष्ठा प्रत्येक 1-1 विकेट।

राजस्थान - पंजाब अंडर 23 अभ्यास मैच के अंतिम दिन मैच बिना किसी नतीजे के समाप्त, पहले दिन का खेल :-राजस्थान पहली पारी 322 आल आउट, पंजाब पारी 138/4, अंडर 16 प्रतियोगिता (आज खेल गए मैच)

जीआरग्राउंड बूंदी - टोंक (टोंक 3 विकेट से जीती)

बूंदी पारी 77 आल आउट (भव्य 12 रन), टोंक के गेंदबाज सयैदअज़ीन 42 /5, अभिमन्यु 9/2 विकेट, टोंक पारी 78/7, टीम के लिए अभिनव शर्मा 16 , यश शर्मा 15 रन, बूंदी के गेंदबाज समीर 19/3 व भव्य 14/2 विकेट

अरावली ग्राउंड राजसमंद - सिरोही (बारिश का कारण स्थगित), अंडर 23 चैलेंजरट्रॉफी मल्टी डेज :- अनंतं ग्राउंड, टीम सी – टीम बी (ड्रा) (टीम बी को पहली पारी में बढ़त)

टीम सी पारी 331 /5 घोषित, टीम बी पारी 381 आल आउट, टीम के लिए आव्यांशसिंह 109, शुभम सिंह 73, डेविड सिंह 67 व अनिरुद्ध 43 रन, टीम सी के गेंदबाज मो साद 80/4, राजवंश सिंह 53/3 विकेट

पी एस ग्राउंड टीम ऐ – टीम डी (बिना किसी नतीजे के समाप्त), टीम ऐ पारी 342/7 घोषित, टीम डी पारी 95/4 (सचिन लखेसर 48 रन)।

अभिषेक और कुलदीप आईसीसी प्लेयर ऑफ द मंथ के लिए नामांकित

दुबई, 7 अक्टूबर। भारत के अभिषेक शर्मा और कुलदीप यादव, ज़िम्बाब्वे के ब्रायन बेनेट के साथ, सितंबर के लिए आईसीसी पुरुष प्लेयर ऑफ द मंथ पुरस्कार की दौड़ में हैं, जबकि भारत की स्मृति मंधाना, पाकिस्तान की सिदरा अमीन और दक्षिण अफ्रीका की तेजमिन ब्रिट्स महिला प्लेयर ऑफ द मंथ पुरस्कार की दौड़ में हैं। संयुक्त अरब अमीरात में एशिया कप में अभिषेक के प्लेयर ऑफ द सीरीज प्रदर्शन और टूर्नामेंट के दौरान स्पिनर यादव के महत्वपूर्ण प्रदर्शन ने उन्हें इस दौड़ में ला खड़ा किया है, जबकि बेनेट विभिन्न श्रृंखलाओं में कुछ बेहतरीन टी20 प्रदर्शनों के आधार पर इस दौड़ में शामिल हैं।

ऑस्ट्रेलिया का सामना संघर्षरत पाकिस्तानी महिलाओं से

कोलंबो, 7 अक्टूबर। जब आप महिला क्रिकेट में प्रभुत्व की बात करते हैं, तो बहुत कम टीमें ऑस्ट्रेलियाई महिलाओं की निरंतरता की बराबरी कर पाती हैं, और कल आर प्रेमदासा अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में पाकिस्तान महिलाओं के साथ होने वाला आईसीसी विश्व कप मुकाबला एकतरफा उत्कृष्टता का एक और उदाहरण है।

ऑस्ट्रेलिया इस मुकाबले से पहले पाकिस्तान से 16 वनडे मैचों में कभी नहीं हारा है, यह रिकॉर्ड न केवल कौशल बल्कि मानसिक दृढ़ता, तैयारी और दबाव में अच्छा प्रदर्शन करने की क्षमता का प्रमाण है। इस टूर्नामेंट में, उन्होंने अपनी इसी फॉर्म को जारी रखा है, अपने पिछले छह वनडे मैचों में से पांच जीते हैं और न्यूजीलैंड महिलाओं पर 89 रनों की शानदार जीत के साथ अपने अभियान की शुरुआत की है।

भारत ने श्रीलंका को हराकर दूसरी जीत दर्ज की

गुवाहाटी, 7 अक्टूबर। मेजबान भारत ने मिश्रित टीम चैंपियनशिप के नॉक-आउट चरणों में अपनी बढ़त जारी रखते हुए ग्रुप एच में श्रीलंका के खिलाफ एक और शानदार प्रदर्शन किया, जबकि फिलीपींस ने मंगलवार को नेशनल सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में सुहांदिनाता कप के लिए योनेक्स सनराइज बीडब्ल्यूएफ विश्व जूनियर बैडमिंटन चैंपियनशिप के दूसरे दिन ग्रुप एफ के एक रोमांचक मुकाबले में हांगकांग को हराया। भारत नॉक-आउट चरण में आगे बढ़ने का प्रबल दावेदार है क्योंकि ग्रुप में शीर्ष पर रहने वाली और दूसरी वरीयता प्राप्त टीम ने उम्मीदों पर खरा उतरते हुए श्रीलंका पर 45-27, 45-21 से जीत दर्ज की, जिसने सोमवार को एक रोमांचक मुकाबले में संयुक्त अरब अमीरात को हराया था।

प्रदेश में एकता मार्च अभियान के साथ होगा भव्य आयोजन : नीरज के. पवन

जयपुर, 7 अक्टूबर। भारत सरकार के युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय के निर्देशानुसार, सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में 6 अक्टूबर से 6 दिसंबर 2025 तक "एकता मार्च अभियान" चलाया जा रहा है। इस अभियान का उद्देश्य राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना और सरदार पटेल के दृष्टिकोण को श्रद्धांजलि देना है।

शासन सचिव, युवा मामले एवं खेल विभाग तथा अध्यक्ष-राजस्थान युवा बोर्ड डा. नीरज के. पवन ने पत्रकार वार्ता में इस अभियान की दृष्टि, कार्यक्रम की रूपरेखा और जनभागीदारी के अवसरों के बारे में विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि सरदार150 यूनिटी मार्च अभियान सरदार पटेल की जयंती को समर्पित है और पूरे राज्य में आयोजित किया जाएगा। सबसे पहले जिला स्तर पर पदयात्रा का आयोजन 31 अक्टूबर से 15 नवम्बर 2025 तक

होगा तथा राष्ट्रीय स्तर पर पदयात्रा 26 नवम्बर से 06 दिसम्बर 2025 तक होगी, जो सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्म स्थली करमसाद से एकता नगर (स्टेच्यू ऑफ यूनिटी) तक जाएगी। 152 किलोमीट की पदयात्रा में प्रदेश के सभी जिलों से दो-दो प्रतिनिधि जायेंगे।

उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा एकता मार्च अभियान के रूप में शुरू की गई पहल विकसित और आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण को प्रतिनिधितत्व करती है। युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार माय भारत पोर्टल पर राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है, जो युवाओं को देशभक्ति की भावनाओं और एकता के सन्देशों को व्यक्त करने के लिए के लिए एक रचनात्मक मंच प्रदान करेगा।

डा. नीरज के. पवन ने बताया कि इस दौरान निबन्ध प्रतियोगिता भी आयोजित की जाएगी, जिसमें चार विषयों विविधता में एकता भारत की एकता को बनाए रखने में युवाओं की भूमिका, सरदार वल्लभ भाई पटेल से सीखने वाले पाठ एक विकसित भारत के लिए व्यावहारिक नेतृत्व, भारत के भविष्य को आकार देने हेतु एक सामूहिक युवा कारेवाई तथा सरदार पटेल के जीवन मूल्य जीने का एक तरीका में से एक विषय पर 250 शब्द में लिखना है। 15 वर्ष से 29 वर्ष के मध्य के युवा भाग ले सकते है। उन्होंने बताया कि इसके अलावा पॉडकास्ट, प्रश्नोत्तरी एवं राष्ट्रीय रील प्रतियोगिता भी होगी। सभी पंजीकरण और गतिविधियां माय भारत पोर्टल पर हो रही है। सभी युवाओं से आग्रह है कि वे ऐतिहासिक पहल में जुड़े और सक्रिय भागीदारी करे। इस अवसर पर राजस्थान युवा बोर्ड के सचिव कैलाश पहाडिया और माई भारत के निदेशक कृष्ण कुमार के अलावा एनएसएस के अधिकारी भी उपस्थित थे।

धोनी ने ड्रोन पायलट प्रशिक्षण पूरा किया

चेन्नई, 7 अक्टूबर। भारत के अग्रणी ड्रोन निर्माता, गरुड़ एयरोस्पेस ने घोषणा की है कि उसके ब्रांड एंबेसडर और निवेशक, महेंद्र सिंह धोनी ने चेन्नई स्थित कंपनी के डीजीसीए-अनुमोदित रिमोट पायलट ट्रेनिंग ऑर्गनाइजेशन (आरपीटीओ) में अपना ड्रोन पायलट प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है। यह उपलब्धि न केवल कंपनी के साथ धोनी के जुड़ाव को मजबूत करती है, बल्कि भारत के सबसे प्रसिद्ध खेल दिग्गजों में से एक के विमानन प्रौद्योगिकी के भविष्य में कदम रखने के एक महत्वपूर्ण क्षण को भी चिह्नित करती है। यह निवेश और ब्रांड एंबेसडरशिप से परे गरुड़ एयरोस्पेस के साथ उनके जुड़ाव को और मजबूत करता है। कठोर प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा करने के बाद, धोनी अब ड्रोन उड़ाने के लिए प्रमाणित हो गए हैं, जो भारत की विकास गाथा को बदलने की उनकी क्षमता को उजागर करता है। यह प्रशिक्षण प्रमाणित और सुरक्षित ड्रोन संचालन को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जिसमें सैद्धांतिक ग्राउंड कक्षाओं के साथ-साथ सिमुलेटर और वास्तविक ड्रोन पर गहन व्यावहारिक उड़ान सत्र भी शामिल हैं। गरुड़ एयरोस्पेस अपने प्रशिक्षण केंद्रों के बढ़ते नेटवर्क और अग्रणी शैक्षिणक संस्थानों के सहयोग से स्थापित 300 से अधिक "उत्कृष्टता केंद्रों" के माध्यम से इस प्रयास में अग्रणी है। ये पहल यह सुनिश्चित करती हैं कि पायलट औपचारिक रूप से प्रमाणित हों, जिससे कंपनी की गुणवत्ता और विश्वसनीयता के प्रति प्रतिबद्धता और भी मजबूत होती है। धोनी की उपलब्धि के बारे में बात करते हुए, गरुड़ एयरोस्पेस के संस्थापक और सीईओ अग्निश्वर जयप्रकाश ने कहा, "हमारे ब्रांड एंबेसडर और निवेशक, एमएस धोनी का व्यक्तिगत रूप से प्रशिक्षण लेना और पायलट के रूप में प्रमाणित होना हमारे लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

भजनलाल आज सूरत में प्रवासी राजस्थान मीट में भाग लेंगे

कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री सूरत के फार्मास्यूटिकल्स, टैक्सटाइल्स, सिरेमिक्स व पैट्रोकैमिकल्स के उद्यमियों से मिलेंगे

जयपुर, 7 अक्टूबर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा बुधवार को गुजरात के सूरत शहर में 'प्रवासी राजस्थानी मीट' में हिस्सा लेंगे। इस अवसर पर वे वहां रह रहे प्रवासी राजस्थानी समुदाय से संवाद करेंगे और उन्हें राजस्थान में निवेश के लिए आमंत्रित करेंगे। मुख्यमंत्री के साथ संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल एवं संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारी भी सम्मेलन में मौजूद रहेंगे।

इस सम्मेलन का आयोजन कन्फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री के सहयोग से किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य प्रवासी राजस्थानियों और उद्योग जगत के साथ राज्य के संबंधों को प्रगाढ़ बनाना है। कार्यक्रम के दौरान, मुख्यमंत्री शर्मा सूरत के फार्मास्यूटिकल्स, टेक्सटाइल्स, सिरेमिक्स और पेट्रोकेमिकल्स क्षेत्रों के उद्यमियों से भी मुलाकात करेंगे। इसके अतिरिक्त वे सूरत के डायमंड बूअर्स का भी अवलोकन करेंगे।

यह कार्यक्रम आगामी 10 दिसंबर को जयपुर में आयोजित होने वाले 'प्रवासी राजस्थानी दिवस' के तहत आयोजित हो रहा है। इस श्रृंखला की पहली कडी दो सप्ताह पूर्व हैदराबाद में आयोजित की गई थी। इस पहल का उद्देश्य है, 'कनेक्ट, कोलेबोरेट एंड कॉन्ट्रिब्यूट' के सिद्धांत पर चलते हुए

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

प्रवासी राजस्थानियों को राज्य की विकास यात्रा में भागीदार बनाना। राजस्थान सरकार ने निर्णय लिया है कि हर वर्ष 10 दिसंबर को प्रवासी राजस्थानी दिवस के रूप में मनाया जाएगा। उद्योग विभाग और राजस्थान फाउंडेशन के नेतृत्व में आयोजित होने वाले इस विशेष कार्यक्रम का उद्देश्य है, प्रवासी राजस्थानी समुदाय से सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक रिश्तों को सुदृढ़ करना तथा उन्हें राज्य के सतत विकास में सहभागी बनाना।

■ सूरत का आयोजन 10 दिसम्बर को जयपुर में आयोजित ''प्रवासी राजस्थानी दिवस'' के तहत किया जा रहा है। इसका उद्देश्य ''कनैक्ट, कोलैबोरेट एंड कॉन्ट्रिब्यूट'' के सिद्वांत पर चलते हुए प्रवासी राजस्थानियों को राज्य की विकास यात्रा में भागीदार बनाना है।

कर्नाटक में बांध का गेट खुलने से 6 लोग बहे

बंगलूरू, 07 अक्टूबर। कर्नाटक के तुमकुरु जिले में मंगलवार दोपहर मरकोनाहल्ली बांध का गेट अचानक खुल जाने से पानी के तेज बहाव के कारण कई लोग बह गए। इस हादसे में छह लोगों की मौत हो गई है। दो लोगों के शवों को बरामद किया गया है और चार लोग अभी भी लापता बताए जा रहे हैं। पुलिस के अनुसार, सभी मृतक

■ पंद्रह लोग पिकनिक पर गये थे, बांध का गेट अचानक खुलने से वे बह गए, चार लोग अभी भी लापता हैं।

तुमकुरु शहर के बीजी पल्या इलाके के रहने वाले थे। ये लोग पिकनिक मनाने बांध के पास पहुंचे थे, तभी हादसा हो गया।

तुमकुरु के पुलिस अधीक्षक अशोक केवी ने बताया, मंगलवार को सार्वजनिक अवकाश होने के कारण 15 लोग बीजी पाल्या से मडिपल्या गए थे और बांध देखने का फैसला किया था। जल स्तर कम होने के कारण सात लोग बांध के निचले हिस्से में पहुंच गए। अचानक पानी का प्रवाह बढ़ गया और वे बह गए। पुलिस ने बताया कि अब तक दो शव बरामद किए गए हैं, जबकि चार अन्य लापता हैं।

पूर्व मंत्री भरत सिंह का पैतृक गांव में दाह संस्कार हुआ

उनकी स्पष्टवादिता व ईमानदारी की उनके विरोधी भी प्रशंसा करते थे

कोटा, 7 अक्टूबर (निसं)। पूर्व मंत्री भरत सिंह के निधन के बाद मंगलवार को उनके पैतृक गांव कुंदनपुर में उनका अंतिम संस्कार किया गया। उनके पुत्र भगवती सिंह और गंगा सिंह ने मुखाग्नि दी। इस दौरान लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा था। खुद प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत सहित तमाम नेता इस दौरान मौजूद थे। भरत सिंह के पिता जुझार सिंह लंबे समय तक राजनीति में सक्रिय रहे थे। झालावाड़ लोकसभा सीट से सांसद के रूप में उन्होंने प्रतिनिधित्व भी किया था।

इसके बाद, भरत सिंह राजनीति में सक्रिय हो गए। वे सरपंच, प्रधान और चार बार विधायक रहे हैं। हालांकि उन्होंने अपने बेटों को राजनीति में एंट्री नहीं करवाई। उनके बड़े बेटे भगवती सिंह जयपुर में कॉ-ऑपरेटिव सेक्टर की एक निजी कंपनी में जनरल मैनेजर हैं। छोटे बेटे गंगा सिंह आर्टिस्ट हैं। वे कोटा में ही खेती के साथ यह कार्य करते हैं। दोनों बेटों के एक-एक बेटी है। भरत सिंह की पत्नी मीना देवी सरपंच रही हैं। अंतिम संस्कार से पहले भरत सिंह के पार्थिव शरीर को मंगलवार को कोटा गुमानपुरा स्थित उनके घर भी लाया गया, जहां पर श्रद्धांजलि दी गई। इसके बाद शव को जिला कांग्रेस कमेटी के दफ्तर कोटड़ी रोड़ पर ले जाया गया, जहां पर जिले के सभी वरिष्ठ नेताओं ने उन्हें नम आंखों से श्रद्धांजलि दी। इसके बाद शरीर को

भरत सिंह

पैतृक गांव कुंदनपुर ले जाया गया, जहां पर अंतिम संस्कार किया गया है।

भरत सिंह के बारे में जानकारी देते हुए उनके पूर्व निजी सहायक जगदीश गुप्ता ने बताया कि वे चुनाव में कोई ज्यादा राशि खर्च नहीं करते थे। बिना लवाजमे के ही चुनाव लड़ लेते थे। उनके चुनाव में कुछ लाख रुपए ही खर्च होते थे। ज्यादा बड़ी सभाएं और बैनर-पोस्टर लगाना भी उन्हें पसंद नहीं था। पूरे जीवन में गांधी विचारधारा को ही उतार कर वे राजनीति करते रहे।

जगदीश गुप्ता का कहना है कि भरत

■ भरत सिंह सरपंच, प्रधान तथा चार बार विधायक रहे। उनके पिता जुझार सिंह कांग्रेस के वरिष्ठ व प्रतिष्ठित नेता थे।

सिंह खुद ही उनके कार्यकर्ताओं को फोन कर जुट जाने के लिए कहते थे और वह अपने आप ही काम में जुट जाते थे। भरत सिंह का विरोध करने का तरीका अनूठा था। वे अपने ही पार्टी के नेताओं का कई बार विरोध कर चुके थे, जिनमें मुख्यमंत्री से लेकर छोटे-बड़े नेता शामिल हैं।

उनके अंतिम संस्कार के समय कांग्रेस तथा भाजपा के अनेक नेता, स्थानीय अधिकारी तथा आमजन भारी संख्या में मौजूद थे। पूर्व मंत्री भरत सिंह कुंदनपुर के निधन पर लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने गहरा शोक प्रकट करते हुए कहा कि भरत सिंह कुंदनपुर का संपूर्ण जीवन जनसेवा को समर्पित रहा। वे सिद्धातनिष्ठ सरल और जनहित के प्रति समर्पित नेता थे। उनका निधन हाड़ौती और राजस्थान की राजनीति के लिए बड़ी क्षति है।

ब्लूचिस्तान व ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आर्थिक पक्ष के साथ-साथ संप्रभुता का सवाल भी जुड़ा है। खबरें हैं कि अमेरिकी कंपनियां बंदरगाहों और रसद नेटवर्क पर विशेष अधिकार की मांग कर सकती हैं, हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। पर यह एक खतरे की घंटी ज़रुर है। ग्वादर जैसे अस्पष्ट समझौतों के अनुभव को देखते हुए, विशेषज्ञ संसद की निगरानी और स्वतंत्र ऑडिट की मांग कर रहे हैं, ताकि देश की रणनीतिक स्वायत्तता (स्ट्रैटेजिक ऑटोनोमी) पर कोई आंच न आए।

इस समझौते में बलूचिस्तान जैसे प्रांतों को भी बराबर की हिस्सेदारी मिलनी चाहिए। इतिहास गवाह है कि जब धन केन्द्रीकृत (सैन्ट्रलाइज्ड) होता है तो संसाधन-समृद्ध क्षेत्र अक्सर गरीब रह जाते हैं। इसलिए राजस्व का न्यायसंगत बंटवारा और स्थानीय समुदायों में निवेश अनिवार्य है, ताकि राजनीतिक असंतोष न पनपे। पर्यावरणीय सुरक्षा भी बड़ी चुनौती है। रेयर अर्थ खनन अत्यंत प्रदूषणकारी और पानी-खपत वाला होता है। यदि सख्त पर्यावरणीय नियम लागू नहीं हुए, तो पाकिस्तान म्यांमार जैसी गलतियां दोहरा सकता है, जहां बेतहाशा खनन से गंभीर पर्यावरणीय नुकसान हुआ है।

आखिरकार, यह सिर्फ एक समझौता नहीं, बल्कि दूरदर्शिता की परीक्षा है। पाकिस्तान के सामने दो रास्ते हैं, या तो वह इस अवसर का उपयोग करते हुए अपनी औद्योगिक क्षमता, रिफाइनिंग और अनुसंधान केन्द्र विकसित करे और रोजगार पैदा करे, या फिर वह सस्ते खनिजों का आपूर्तिकर्ता बनकर रह जाए, तथा असली मुनाफा दूसरे देश उठाएं। अगर यह समझौता सोच-समझकर, पारदर्शी और संतुलित ढंग से किया गया, तो यह पाकिस्तान के औद्योगिक इतिहास में नया मोड़ साबित हो सकता है, जो उसे स्वच्छ ऊर्जा और एडवान्स्ड मैनुफैकचरिंग के वैश्विक नेटवर्क में मजबूत स्थान दिलाएगा। लेकिन अगर इसे जल्दबाजी, गोपनीयता या एकतरफा शर्तों के साथ लागू किया गया, तो यह निर्भरता को और गहरा कर देगा, और संसाधन तो जाएंगे ही, पर अवसर खो जाएंगे।

हिमाचल में बस पर पहाड़ का मलबा गिरा, 18 की मौत

मलबे में पूरी बस दब गई, दो बच्चियों व एक बच्चे को सुरक्षित बचा लिया गया

शिमला, 7 अक्टूबर। हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर में एक भयानक बस हादसा हुआ है। यहां एक प्राइवेट बस भूस्खलन (लैंडस्लाइड) की चपेट में आई गई। मलबे के नीचे दबने से बस में सवार 18 लोगों की मौत हो गई। यह हादसा मंगलवार शाम करीब साढ़े छह बजे बालूघाट (भल्ला पुल) के पास हुआ, जब मरोतन से घुमारवीं जा रही बस पर पहाड़ी से भूस्खलन का मलबा गिर गया।

मलबे के गिरने से पूरी बस उसकी चपेट में आ गई। इस हादसे में दो बच्चियों और एक बच्चे को सुरक्षित बचा लिया गया है। इनमें से एक बच्ची की मां की दुर्घटना में मौत हो गई। उधर, मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने हादसे पर गहरा दुख व्यक्त किया है और

■ बस में 30 से 35 यात्री सवार थे। बचाव दल मलबा हटाकर लोगों को निकालने का प्रयास कर रहा है। अभी तक किसी मृतक की पहचान नहीं हो पाई है।

प्रभावित परिवारों को हर संभव मदद का आश्वासन दिया है।

जानकारी के मुताबिक, बिलासपुर जिले के झंडूता विधानसभा क्षेत्र में बालूघाट (भल्ला पुल) के पास मंगलवार शाम साढ़े छह बजे के करीब यह दर्दनाक हादसा हुआ। पहाड़ी से अचानक गिरे भूस्खलन के मलबे ने बस को अपनी चपेट में ले लिया। मलबे के भारी दबाव से बस पूरी दब गई और खड्ड के किनारे जा गिरी। बस के अंदर सवार सभी यात्री मलबे के नीचे दब गए। खबर लिखे जाने तक बस के अंदर से 18 शव निकाले जा चुके थे। राहत और बचाव कार्य तेजी से जारी है।

रिपोर्ट के मुताबिक, बस में 30 से 35 यात्री सवार थे, जो मरोतन, बरठीं, घुमारवीं और बीच के स्टेशनों के रहने वाले थे। बस चालक और परिचालक की भी इस हादसे में मौत हो गई है। अभी तक किसी भी मृतक की पहचान नहीं हो पाई है। बचाव दल मलबे को हटाकर फंसे हुए लोगों को निकालने का प्रयास कर रहे हैं। उधर, मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने इस बस दुर्घटना पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

कफ सिरप मामले में सुप्रीम कोर्ट में याचिका

नयी दिल्ली, 07 अक्टूबर। मध्य प्रदेश और राजस्थान में कथित तौर पर 'दूषित कफ सिरप' सेवन से कई बच्चों की मौत के मामले की अदालत की निगरानी में स्वतंत्र जांच और देश के दवा सुरक्षा ढांचे में व्यापक बदलाव की मांग को लेकर उच्चतम न्यायालय में एक जनहित याचिका दायर की गयी है।

अधिवक्ता विशाल तिवारी द्वारा दायर याचिका में जांच के लिए शीर्ष अदालत के सेवानिवृत्त न्यायाधीश की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय न्यायिक आयोग या विशेषज्ञ समिति गठित करने का आग्रह किया गया है। याचिका में कहा गया है कि यदि शीर्ष अदालत यह आयोग या समिति गठित करती है तो वह डायथिलीन ग्लाइकॉल (डीईजी) और एथिलीन ग्लाइकॉल (ईजी) युक्त 'दूषित कफ सिरप' के निर्माण, परीक्षण और वितरण की गहन स्वतंत्र जांच करने

■ याचिका में सेवानिवृत न्यायाधीश की अध्यक्षता में न्यायिक आयोग या विशेषज्ञ समिति गठिन करने की मांग की है।

में सक्षम होगी। याचिका के अनुसार, शिवपुरी (मध्य प्रदेश) और बाड़मेर (राजस्थान) में हाल ही में हुई घटनाओं ने गंभीर चिंता पैदा कर दी है, क्योंकि कथित तौर पर तमिलनाडु की दवा कंपनी मेसर्स श्रीसन फार्मा प्राइवेट लिमिटेड द्वारा निर्मित कोल्ड्रिफ कफ सिरप के सेवन से कई बच्चों की कथित तौर पर मौत हो गई।

पूर्व प्रधानमंत्री देवगौड़ा अस्पताल में भर्ती

नई दिल्ली, 07 अक्टूबर। पूर्व प्रधानमंत्री और जेडीएस पार्टी के अध्यक्ष एचडी देवगौड़ा को तबीयत खराब होने के बाद अस्पताल में भर्ती कराया गया है। स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के चलते एचडी देवगौड़ा

■ उम्र संबंधी बीमारियों से जूझ रहे 93 वर्षीय देवगौड़ा को संक्रमण के कारण मणिपाल अस्पताल में भर्ती कराया गया।

को बेंगलुरु के मणिपाल अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

रिपोर्ट्स के मुताबिक उम्र संबंधी बीमारियों से जूझ रहे 92 वर्षीय देवगौड़ा की अचानक तबीयत बिगड़ गई। इसी सिलसिले में उन्हें बेंगलुरु के मणिपाल अस्पताल में भर्ती कराया गया। अस्पताल की ओर से एक बयान भी जारी किया गया, जिसमें कहा गया कि पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवगौड़ा को संक्रमण के कारण ओल्ड एयरपोर्ट रोड स्थित मणिपाल अस्पताल में भर्ती कराया गया है। वर्तमान में डॉक्टर्स की टीम उन पर निगरानी रख रही है।

एयर इंडिया के विमान से पक्षी टकराया

चेन्नई, 07 अक्टूबर। कोलंबो से चेन्नई के बीच उड़ान भरने वाले एअर इंडिया के एक विमान के इंजन से

■ हादसा टला, यात्री सुरक्षित, कोलम्बो की वापसी उड़ान रद्द।

मंगलवार को एक पक्षी टकरा गया और बड़ा हादसा बच गया। अधिकारियों ने बताया कि विमान के चेन्नई हवाईअड्डे पर उतरने के बाद दुर्घटना का पता चला और एयरलाइन ने अपनी वापसी यात्रा रद्द कर दी। घटना के वक्त विमान में 158 यात्री सवार थे। सभी पूरी तरह सुरक्षित हैं।

एअर इंडिया के एक प्रवक्ता ने कहा, चेन्नई से कोलंबो जा रहे विमान एआई 273 के चालक दल ने एक संदिग्ध पक्षी के टकराने की सूचना दी थी।

'मुझे न लोभ है ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सीजेआई और मेरा विरोध करने वालों से पूछता हूं- क्या उन लोगों के खिलाफ योगी की बुलडोजर कार्रवाई गलत थी, जो लोग सरकारी जमीन पर कब्जा किए बैठे थे। मैं आहत हूं और रहूंगा।''

किशोर उत्तर प्रदेश के बरेली जिले में हुए उन बुलडोजर अभियानों का जिक्र कर रहे थे, जिनमें योगी आदित्यनाथ सरकार ने दंगों के आरोपियों की कथित अवैध संपत्तियां तोड़ी थीं। दंगे उस समय भड़के थे, जब प्रशासन ने ''आई लव मुहम्मद'' लिखा बैनर हटाया था।

राकेश किशोर 2009 से दिल्ली बार काउंसिल में पंजीकृत वरिष्ठ वकील हैं और सुप्रीम कोर्ट बार एसोसिएशन तथा शाहदरा बार एसोसिएशन सहित, कई बार एसोसिएशंस के सदस्य हैं। वे दिल्ली के मयूर विहार में रहते हैं। पुलिस ने घटना के समय उनके पास से कई बार एसोसिएशन सदस्यता कार्ड बरामद किए।

संदर्भित घटना सोमवार सुबह करीब 11:35 बजे सुप्रीम कोर्ट के कोर्ट नंबर 1 में हुई, जब किशोर ने सुनवाई के दौरान कथित रुप से अपने स्पोर्ट्स शूज़ उतारकर सीजेआई गवई की ओर फेंकने की कोशिश की। सुरक्षा कर्मियों ने तुरंत उन्हें रोक लिया, जिससे कोई नुकसान नहीं हुआ। बाहर ले जाए जाने के दौरान किशोर ने नारे लगाए- ''सनातन का अपमान नहीं सहेंगे।''

सीजेआई गवई शांत बने रहे और वकीलों से कहा, ''ध्यान मत भटकाइए'', और कार्यवाही जारी रखी।

घटना के बाद, ऑल इंडिया लॉयर्स यूनियन ने सुप्रीम कोर्ट परिसर में प्रदर्शन किया। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए किशोर ने एक्स पर लिखा, ''मेरे खिलाफ प्रदर्शन करने सिर्फ 7 लोग आए। इसका मतलब है कि ज्यादातर वकील अप्रत्यक्ष रूप से एंटी -हिन्दू सुप्रीम कोर्ट के खिलाफ मेरे कदम का समर्थन कर रहे हैं।''

जयपुर- ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

दोनों ओर कई किलोमीटर लंबा जाम लग गया। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने हादसे पर दुख व्यक्त किया है और उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा व विधायक कैलाश वर्मा को मौके पर रवाना किया। साथ ही, जिला कलेक्टर और एसपी को सतर्कता बरतने व राहत कार्य तेज करने के निर्देश दिए गए हैं।

मोदी ने पुतिन को जन्म दिन की बधाई दी

नयी दिल्ली, 09 अक्टूबर। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ टेलीफोन पर बातचीत की और उन्हें जन्मदिन की बधाई दी।

प्रधानमंत्री कार्यालय ने बताया कि मोदी ने राष्ट्रपति पुतिन को टेलीफोन कर उनके 73वें जन्मदिन पर उन्हें हार्दिक बधाई दी और उनके अच्छे स्वास्थ्य एवं सभी प्रयासों में सफलता की कामना की।

दोनों नेताओं ने भारत और रूस के द्विपक्षीय एजेंडे में प्रगति की समीक्षा की और दोनों देशों के बीच विशेष एवं विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी को और प्रगाढ़ बनाने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की।

प्रधानमंत्री ने कहा कि वे 23वें भारत-रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन के लिए राष्ट्रपति पुतिन का भारत में स्वागत करने के लिए उत्सुक हैं।

सितम्बर की वर्षा के बाद सड़कों पर नई रिपोर्ट पेश करेगी सरकार

जयपुर, 7 अक्टूबर। शहर की खराब व टूटी-फूटी सडकों के हालात व इससे आमजन को हो रही परेशानी से जुड़े मामले में राज्य सरकार ने मंगलवार को हाईकोर्ट में कहा कि उन्होंने अगस्त महीने में तथ्यात्मक रिपोर्ट दे दी थी। इसके बाद कई सड़कों पर पैचवर्क कराया गया, लेकिन सितंबर महीने में भी बारिश हुई है। ऐसे में अब नए सिरे से सडकों के हालात की रिपोर्ट पेश कर दी जाएगी। वहीं, न्याय मित्र तनवीर अहमद ने कहा कि जब सरकार नई रिपोर्ट के लिए कह रही है तो हम भी उसका जवाब बाद में ही दे देगें। इस पर अदालत ने राज्य सरकार को चार सप्ताह में रिपोर्ट देने का निर्देश देते हुए मामले की सुनवाई छह सप्ताह बाद तय की है। जस्टिस इन्द्रजीत सिंह व शुभा मेहता की खंडपीठ ने यह आदेश शहर की

■ हाई कोर्ट ने राज्य सरकार को रिपोर्ट पेश करने के लिए चार सप्ताह का समय दिया है।

खराब व टूटी-फूटी सडकों के हालात पर लिए स्वप्रेरित प्रसंज्ञान मामले में दिए।

दरअसल हाईकोर्ट ने जुलाई महीने में शहर की खराब सड़कों व गड्डों पर प्रसंज्ञान लेते हुए जेडीए और निगम आयुक्तों को निर्देश दिया था कि वे शहर की सडकों का सर्वे कर दो सप्ताह में इस संबंध में तथ्यात्मक रिपोर्ट दें। अदालत ने अफसरों से पूछा था कि शहर की सड़कों के मौजूदा हालात और उन्हें सुधारने की स्थिति क्या है।

अलवर बालिका ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हाईकोर्ट जज को लेटर लिखवाया है। राज्य सरकार ने मौके पर जांच की है, लेकिन मौके पर किसी तरह की अव्यवस्था नहीं मिली। दूसरी ओर मामले में विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से रिपोर्ट पेश की गई। इस पर अदालत ने कहा कि दोनों रिपोर्ट अलग-अलग हैं। ऐसे में विभाग के निदेशक मामले में तथ्यात्मक रिपोर्ट दें। मामले के अनुसार, अलवर बालिका गृह में रहने वाली किशोरियों की ओर से गत दिनों हाईकोर्ट के एक न्यायाधीश को शिकायती पत्र भेजा गया था, जिसमें कहा गया था कि सरकारी अधिकारियों की निष्क्रियता के चलते उन्हें अनुदान मिलने में गंभीर समस्याएं आ रही हैं। इसके साथ ही अधिकारियों पर प्रताडऩा का भी आरोप लगाया गया था। पत्र पर कार्रवाई करते हुए हाईकोर्ट की एकलपीठ ने मामले में स्वप्रेरणा से प्रसंज्ञान लिया था। इसके साथ ही, एकलपीठ ने मामले को जनहित याचिका के तौर पर सुनवाई के लिए खंडपीठ के समक्ष सूचीबद्ध करने को कहा था।

'राजनीति में मेरा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कठोर रुख अपनाने वाले नेताओं को संतुष्ट करने के लिए है।

भाजपा सूत्रों के अनुसार, सीट-बंटवारे की बातचीत को चुनाव तिथियों की घोषणा तक टालना एक रणनीतिक कदम है, ताकि टिकट न मिलने पर नेताओं की आखिरी समय पर होने वाली दलबदल को रोका जा सके।

इस बीच, एलजेपी के सूत्रों ने उन रिपोर्टों को ख़ारिज किया, जिनमें कहा गया था कि भाजपा और जेडीयू ने आपस में 200 सीटों का बँटवारा कर लिया है और बाक़ी की सीटें सहयोगियों को दी जाएँगी।

सूत्रों ने पूछा, ''क्या किसी नेता ने आधिकारिक घोषणा की है?'' साथ ही यह भी स्पष्ट किया कि एलजेपी की बातचीत भाजपा से होगी, न कि जनता दल यूनाइटेड से, जो नीतीश कुमार की पार्टी के साथ जारी तनाव का एक और संकेत है।

लेकिन सीट बंटवारे से आगे भी पासवान-भाजपा रिश्ते में कई परतें हैं। एक प्रमुख मुद्दा है, चिराग पासवान की मुख्यमंत्री बनने की इच्छा, जिसे वे अब खुलकर जाहिर कर रहे हैं।

मंगलवार सुबह एलजेपी ने सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म एक्स पर एक पोस्टर साझा किया, ''अबकी बार, युवा बिहारी।''

पोस्टर में चिराग पासवान को मुख्यमंत्री पद के दावेदार के रूप में दिखाया गया था। यह संदेश सीधा और स्पष्ट था, एलजेपी ने चिराग को नीतीश कुमार का उत्तराधिकारी बताने की कोशिश की, साथ ही भाजपा के लोकसभा चुनाव वाले नारे की तर्ज़ पर अपने समर्थन का संकेत भी दिया।

एलजेपी सूत्रों ने बताया कि अब पार्टी का ध्यान ''चिराग पासवान के नेतृत्व को बिहार में मज़बूत करने'' पर है। राजनीति में जैसे वोट अहम होते हैं, वैसे ही छवि की लड़ाई भी होती है। एलजेपी अब चिराग पासवान को विपक्षी उम्मीदवार तेजस्वी यादव के सीधे प्रतिद्वंद्वी के रूप में पेश करने की तैयारी कर रही है।

मानवाधिकार...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

करें और आयोग इनसे अपेक्षा रखता है कि वे एसएमएस अस्पताल के मरीजों व उनके परिजनों की सुरक्षा सुनिश्चित करें। आयोग के अध्यक्ष जस्टिस जीआर मूलचंदानी ने यह आदेश मीडिया में प्रकाशित खबरों पर स्वप्रेरित प्रसंज्ञान लेते हुए दिया।

आयोग ने कहा कि पहले भी एसएमएस अस्पताल में प्लास्टर गिरने से मरीजों के घायल होने सहित, अन्य मुद्दों पर आयोग ने आदेश दिए थे, लेकिन फिर भी एसएमएस अस्पताल में इन घटनाओं की पुनरावृत्ति हो रही है।

मीडिया रिपोर्ट्स में बताया गया कि अस्पताल में अग्निशमन सेफ्टी सिस्टम ही सुचारू नहीं था और इस कारण ही अस्पताल में इतना बड़ा हादसा हुआ। ये सभी घटना दर्दनाक व मानवीय संवेदनाओं को झकझोर करने वाली हैं और बताती हैं कि अस्पताल प्रशासन मरीजों व उनके परिजनों के प्रति उदासीन है।

जीतन राम मांझी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बदलना नई बात नहीं है, लेकिन एनडीए और महागठबंधन, दोनों ही गठबंधनों के लिए खतरा यह है कि अगर जन सुराज जैसी नई पार्टी नेता तोड़ने में सफल होती है, तो मुकाबला त्रिकोणीय हो सकता है। उदाहरण के तौर पर, अब्दुल बारी सिद्दीकी उत्तर बिहार के सम्मानित अल्पसंख्यक नेता हैं। वे राज्य के वित्त मंत्री और सांसद रह चुके हैं, लेकिन आरजेडी में पीढ़ीगत बदलाव के बाद, उन्हें हाशिए पर कर दिया गया था। अगर वे जनसुराज पार्टी में शामिल हो जाते हैं, तो पार्टी को मुसलमान वोट बैंक में पैठ बनाने में मदद मिल सकती है, क्योंकि बिहार में मुस्लिम मतदाता कम से कम 18 प्रतिशत हैं।

इसी प्रकार हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा से हुए दल-बदल ने एनडीए में भी चिंता बढ़ा दी है। जैसे ही ये खबरें आईं, भाजपा के चुनाव प्रभारी धर्मेन्द्र प्रधान ने उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी और जीतन राम मांझी के साथ मीटिंग की। भाजपा को डर है कि हिन्दुस्तानी अवामी मोर्चा के नेताओं के पार्टी बदलने के बाद, खुद मांझी भी पाला बदल सकते हैं, किन्तु मांझी ने ऐसी किसी संभावना से इनकार किया है। एनडीए की दूसरी चिंता लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) के नेता चिराग पासवान के आगामी कदमों को लेकर है। खबरें हैं कि चिराग, उन्हें दी जा रही सीटों की संख्या को लेकर असंतुष्ट हैं और पिछले कुछ दिनों से एनडीए के बड़े नेताओं के फोन कॉल्स का जवाब नहीं दे रहे हैं। ऐसी अटकलें भी हैं कि वे प्रशांत किशोर के साथ हाथ मिला सकते हैं।

तीन ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मान्यता दी, जो मानवीय पैमाने पर क्वांटम परिघटनाओं को प्रदर्शित करने की खोज में एक सफलता का प्रतीक है। मालूम हो कि विजेताओं को 11 मिलियन स्वीडिश क्रोना (भारतीय रुपयों में 10.3 करोड़), सोने का मेडल और सर्टिफिकेट दिया जाएगा।

आईएसआई ने बलूचिस्तान में दो आतंकी संगठनों में गठबंधन कराया

यह पाकिस्तानी सेना के जम्मू-कश्मीर में उग्रवाद को भड़काने की मंशा दर्शाता है

नयी दिल्ली, 07 अक्टूबर। पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में कुख्यात जासूसी एजेंसी आईएसआई की मदद से दो घातक आतंकी संगठनों, लश्कर ए तैयबा (एलईटी) और इस्लामिक स्टेट खुरासान प्रांत (आईएसकेपी) के बीच एक नये गठबंधन को क्रियान्वित किया गया है।

यह गठजोड़ अफगानिस्तान और बलूचिस्तान के लोगों के लिए बढ़ रहे खतरे की ओर इशारा कर रहा है। इससे यह भी संकेत मिलता है कि पाकिस्तानी सेना जम्मू-कश्मीर में उग्रवाद को फिर से भड़काने का इरादा रखती है जिससे क्षेत्रीय शांति को भंग किया जा सके।

आईएसकेपी की प्रचार पत्रिका ''यलगार'' के हालिया अंक में इस बदलाव का संकेत दिया गया है। इससे पता चलता है कि उनकी भारत के राज्य जम्मू- कश्मीर में अपनी गतिविधियों का विस्तार करने की मंशा है। इस गठजोड़ की आईएसआई पूरी तरह से

■ लश्कर ए तैयबा (एलईटी) तथा इस्लामिक स्टेट खुरासान प्रांत (आईएसकेपी) का गठबंधन अफगानिस्तान व बलूचिस्तान के लिये लोगों के लिये खतरे का संकेत है।

मदद कर रही है। प्रचार पत्रिका से जानकारी मिली है कि पाकिस्तान कथित तौर पर लश्कर ए तैयबा और आईएसकेपी के बीच सहयोग को सुगम बना रहा है और लश्कर के लॉजिस्टिक नेटवर्क का उपयोग आईएसकेपी की आतंकी क्षमताओं को बढ़ ाने के लिए किया जा रहा है।

दरअसल पाकिस्तान सेना अपने क्षेत्रीय उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आतंकी समूहों का छद्म रूप से उपयोग करती रही है। सेना की लंबे समय से चली आ रही यह नीति अब भी बेरोकटोक जारी है, इस कड़ी में अब आईएसकेपी उसका नवीनतम हथियार बनकर उभरा है। पाकिस्तानी सैन्य प्रतिष्ठान बलूच राष्ट्रवादियों और तालिबान शासन के उन तत्वों को निशाना बनाते हैं जो इस्लामाबाद को चुनौती देते हैं। इसके लिए दाइश (आईएसआईएस) और आईएसकेपी का इस्तेमाल किया जाता है।

हाल ही में सामने आयी एक तस्वीर में आईएसकेपी के बलूचिस्तान समन्वयक मीर शफीक मेंगल को लश्कर ए तैयबा के सीनियर कमांडर राना मोहम्मद अशफाक को एक पिस्तौल उपहार में देते हुए दिखाया गया है। यह तस्वीर खतरे की घंटी बजा रही है और आईएसआई के सीधे संरक्षण में पाकिस्तान के विस्तारित आतंकी गठजोड़ को उजागर कर रही है।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंम्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908